www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार...

राष्ट्रीय संस्करण

पत्र नहीं मित्र

देशबन्धु

नई दिल्ली, गुरुवार, 6 जून , 2024 | वर्ष-17 | अंक -61 | पृष्ठ - 10 | मूल्य - 3.00 रुपए

नतीजों ने साबित किया छल-बल से बड़ी होती... 02

■ लोकसभा चुनाव के नतीजों ने तानाशाही व... 03
■ खेल-खेल में बच्चों को दी पर्यावरण संरक्षण...

■ ताइवान के राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री मोदी को दी... 07
■ इंडोनेशिया में सड़क दुर्घटना में पांच लोगों की...

गुड़गांव के सात लाख से ज्यादा लोगों का आभारी... 10

एनडीए ने मोदी को नेता चुना

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में फिर से सरकार बनाने का दावा पेश करेगा एनडीए

■ नीतीश कुमार व चंद्रबाबू नायडू भी रहे मौजूद
■ 8 जून को हो सकता है शपथ ग्रहण समारोह

नई दिल्ली, 5 जून (देशबन्धु)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में बुधवार को एनडीए की महत्वपूर्ण बैठक हुई। पीएम आवास, 7 लोक कल्याण मार्ग पर हुई बैठक में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, बिहार के मुख्यमंत्री एवं जेडीयू नेता नीतीश कुमार और टीडीपी मुखिया चंद्रबाबू नायडू सहित एनडीए में शामिल अन्य सहयोगी दलों के भी कई नेता मौजूद रहे।

बताया जा रहा है कि एनडीए की बैठक में मौजूद सभी दलों के नेताओं ने जीत के लिए प्रधानमंत्री मोदी को बधाई देते हुए उनके नेतृत्व में आस्था भी व्यक्त की। सूत्रों के मुताबिक, एनडीए के नेता राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में फिर से सरकार बनाने का दावा पेश करेंगे। बताया जा रहा है कि, एनडीए की नई सरकार का शपथ ग्रहण समारोह 8 जून को हो सकता है। इससे पहले 7 जून को भाजपा संसदीय दल की बैठक में पार्टी सांसद नरेंद्र मोदी को पार्टी के संसदीय दल के नेता के तौर पर चुनेंगे। इसके बाद एनडीए के सभी सांसदों की बैठक होगी, जिसमें नरेंद्र मोदी को एनडीए संसदीय दल का नेता चुना जाएगा। इसके अगले दिन, 8 जून को नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ लेंगे।

ये नेता रहे मौजूद

इस बैठक में प्रधानमंत्री श्री मोदी, भाजपा के अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह एवं गृह मंत्री अमित शाह के अलावा गठबंधन के दूसरे सबसे बड़े घटक दल तेलुगु देशम पार्टी के नेता एन चंद्रबाबू नायडू, जनता दल यू के नीतीश कुमार, राजीव रंजन सिंह एवं संजय झा, लोजपा रामविलास के चिराग पासवान, शिवसेना के नेता एवं महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिन्दे, जनता दल सेकुलर के नेता एच डी कुमारस्वामी, हिन्दुस्तानी अवाम पार्टी के जीतनराम मांझी, अपना दल (सोनेलाल) की अनुप्रिया पटेल, जनसेना पार्टी के पवन कल्याण, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के सुनील तटकरे एवं प्रफुल्ल पटेल, राष्ट्रीय लोकदल के जयंत चौधरी, यूपीपीएल के प्रमोद बोडो, असम गण परिषद के अतुल बोरा, एसकेएम के इंद्र हांग सुब्बा, ऑल झारखण्ड स्टूडेंट्स यूनियन के सुदेश महतो शामिल हुए।

राष्ट्रपति मुर्मू ने सत्रहवीं लोकसभा भंग की

■ मोदी ने मंत्रिपरिषद् का सौंपा था इस्तीफा

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने केन्द्रीय मंत्रिमंडल की सिफारिश पर सत्रहवीं लोकसभा बुधवार को भंग कर दी। राष्ट्रपति सचिवालय के अनुसार केन्द्रीय मंत्रिमंडल की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में बुधवार को हुई बैठक में राष्ट्रपति से सत्रहवीं लोकसभा को भंग करने की सिफारिश की गई थी। राष्ट्रपति मुर्मू ने इस सिफारिश पर अमल करते हुए संविधान के अनुच्छेद 85 के उपबंध (2) के तहत मिले अधिकार का इस्तेमाल करते हुए सत्रहवीं लोकसभा को भंग करने के आदेश पर हस्ताक्षर कर दिए। इससे पहले दोपहर में श्री मोदी ने राष्ट्रपति भवन जाकर राष्ट्रपति मुर्मू से मुलाकात की और उन्हें अपना तथा अपनी मंत्रिपरिषद् का इस्तीफा सौंपा था। राष्ट्रपति ने उनका और मंत्रिपरिषद् का इस्तीफा स्वीकार करने के बाद उन्हें नई सरकार के गठन तक कार्यभार संभालने का अनुरोध किया है। सुबह श्री मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल की अंतिम बैठक हुई जिसमें 17 वीं लोकसभा को भंग करने की सिफारिश की गई। सत्रहवीं लोकसभा का कार्यकाल 16 जून को समाप्त हो रहा है। उल्लेखनीय है कि 18वीं लोकसभा के चुनाव एक जून को संपन्न हुए थे और चार जून को हुई मतगणना में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को सरकार बनाने का जनादेश मिला है।

इंडिया गठबंधन ने भी की बैठक

जनादेश मोदी के खिलाफ, इंडिया गठबंधन में सभी का स्वागत : खड़गे

■ नेताओं ने दो घंटे से अधिक समय तक की चर्चा
■ खड़गे बोले, हम अच्छा और एकसाथ लड़े

नई दिल्ली, 5 जून (देशबन्धु)। लोकसभा चुनाव के नतीजे घोषित होने के बाद इंडिया गठबंधन आगे की रणनीति तय करने के लिए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के घर बैठक हुई। नेताओं ने करीब ढाई घंटे चर्चा की। मीटिंग में सोनिया, राहुल और प्रियंका गांधी, शरद पवार और उनकी बेटी सुप्रिया सुले, शिवसेना (उद्धव गुट) के संजय राउत, सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव, टीएमसी नेता अभिषेक बनर्जी, राजद के तेजस्वी यादव, डीएमके नेता एमके स्टालिन, झारखंड के सीएम चंपई सोरेन और हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना, आप नेता राघव चड्ढा और माकपा के सीताराम येचुरी समेत कई नेता मौजूद हैं।

खड़गे ने कहा कि हम बहुत अच्छा और एकसाथ लड़े। इंडिया गठबंधन उन सभी पार्टियों का स्वागत करता है, जो संविधान में लिखी आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक न्याय की बातों का सम्मान करते हैं। मोदी और उनके तरीके की राजनीति के खिलाफ जनादेश मिला है। व्यक्तिगत रूप से यह उनके लिए बड़ा राजनीतिक नुकसान है। यह उनकी नैतिक हार है। दरअसल, नतीजों में गठबंधन को कुल 234 सीटें मिली हैं। सरकार बनाने के लिए गठबंधन को 272 सांसदों का समर्थन चाहिए। ऐसे में बहुमत के लिए उसे मौजूदा सीट शेयरिंग से बाहर भी पार्टनर खोजने होंगे।

सही समय का है इंतजार : खड़गे

एनडीए की एकजुटता को देखते हुए इंडिया गठबंधन ने अपनी सरकार बनाने की रणनीति बदल ली है। तकरीबन ढाई घंटे तक चली बैठक के बाद कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने मीडिया से बात करते हुए उन्होंने कहाकि सही समय का इंतजार है। उचित समय पर उचित फैसला लिया जाएगा। इंडिया गठबंधन यहां से यह सदेश देता है कि वह सभी राजनीतिक दलों का स्वागत करता है, जो भारतके संविधान के प्रस्तावना में अटूट विश्वास रखते हैं। उन्होंने कहाकि बैठक में गठबंधन के नेताओं ने मौजूदा राजनीतिक हालातपर चर्चा की। जिसमें कई सुझाव भी आए। बैठक के बाद शिवसेना उद्धव गुट के नेता संजय राउत ने कहा कि इंडिया गठबंधन की एकता जो चुनाव से पहले थी वह आज भी है। यह जनादेश तानाशाही करने वालों के खिलाफ है।

सार संक्षेप

नवीन पटनायक का मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा

भुवनेश्वर। बीजू जनता दल (बीजद) सुप्रीमो नवीन पटनायक ने बुधवार को ओडिशा के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया और इसी के साथ प्रदेश की राजनीति में बीजद के लंबे दौर की समाप्ति हो गई। श्री पटनायक ने यहां राजभवन में राज्यपाल रघुबर दास को औपचारिक रूप से अपना इस्तीफा सौंप दिया।

प्रियंका जरकीहोली बनी सबसे कम उम्र की सांसद

बेंगलुरु। कर्नाटक की चिक्कोड से कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में जीत का परचम बुलंद करने वाली प्रियंका जरकीहोली सबसे कम उम्र की सांसद बनकर भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल कर ली है। हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव के चार जून को आए परिणाम में जीत हासिल करने वाली सबसे कम उम्र की प्रियंका (27) संसद के गलियारों की ओर कदम बढ़ाने वाली आदिवासी महिला बन गई है।

दिल्ली में नेत्र अस्पताल में लगी भीषण आग

नई दिल्ली। दिल्ली में लाजपत नगर के विनोबा पुरी इलाके में आई-7 अस्पताल में बुधवार सुबह भीषण आग लग गई। दिल्ली अग्निशमन सेवा (डीएफएस) के एक अधिकारी ने बताया कि घटना की सूचना मिलने के बाद आग बुझाने के लिए तत्काल 16 दमकल गाड़ियों को मौके पर भेजा गया। अभी तक किसी के हताहत होने की कोई रिपोर्ट नहीं है। डीएफएस के एक अधिकारी ने कहा, हमें पूर्वाह्न 11:29 बजे इसकी सूचना मिली।

केजरीवाल की अंतरिम जमानत याचिका खारिज

■ न्यायिक हिरासत 19 जून तक बढ़ाई गई ■ चुनाव में 21 दिनों के लिए बाहर आए थे

नई दिल्ली, 5 जून (एजेंसियां)। दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल की अंतरिम जमानत अर्जी राउज ऐवन्यू कोर्ट ने खारिज कर दी है। उन्होंने शराब नीति मामले में अंतरिम जमानत के लिए याचिका दाखिल की थी। इसी के साथ राउज एवेन्यू कोर्ट ने 14 दिनों के लिए अरविंद केजरीवाल की न्यायिक हिरासत बढ़ा दी। हिरासत 19 जून तक बढ़ाई गई है। मुख्यमंत्री की वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए कोर्ट में पेशी हुई। अरविंद केजरीवाल को ईडी ने दिल्ली आबकारी नीति मामले में 21 मार्च को गिरफ्तार किया था। इस गिरफ्तारी को मुख्यमंत्री ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। उन्हें सुप्रीम कोर्ट ने 10 मई को लोकसभा चुनाव प्रचार के लिए 21 दिनों की अंतरिम जमानत दी थी। उन्होंने दो जून को सरेंडर किया था। अंतरिम जमानत के दौरान ही स्वास्थ्य का हवाला देते हुए केजरीवाल ने अंतरिम जमानत की अवधि बढ़ाने की अपील की। इसके लिए उन्होंने बाद में राउज एवेन्यू कोर्ट में भी याचिका दाखिल की। सुनवाई के दौरान ईडी ने उनकी याचिका का विरोध किया. अब अदालत ने उनकी याचिका खारिज कर दी है।

राजनीतिक साजिश बताती रही आप

दिल्ली आबकारी नीति को आम आदमी पार्टी (आप) राजनीतिक साजिश बताती रही है। पार्टी का कहना है कि बीजेपी आप को खत्म करना चाहती है। मुख्यमंत्री ने भी लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान हर मंच से ये आरोप लगाए।

प्रियंका गांधी ने राहुल के लिए लिखी भावुक पोस्ट

मुश्किलों का बहादुरी से सामना करते हैं राहुल

नई दिल्ली, 5 जून (देशबन्धु)। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने बुधवार को कांग्रेस नेता एवं अपने भाई राहुल गांधी के लिए एक भावुक नोट लिखा और उन्हें मुश्किलों का दृढ़ता से सामना करने और मजबूती से खड़ा रहने वाला शख्सियत बताया। सुश्री वाड्रा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर अपनी पोस्ट में कहा, आप हमेशा मजबूती से खड़े रहे। चाहे उन्होंने आपके साथ कुछ भी किया या कहा हो , आप कभी पीछे नहीं हटे। चाहे वे आपकी आस्था पर कितना भी संदेह करें, आपने कभी भी सच्चाई के लिए लड़ना बंद नहीं किया। उन्होंने झूठ का इतना प्रचार किया है लेकिन आपने कभी भी क्रोध और घृणा को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया, भले ही वे आपको ऐसा हर दिन उपहार में देते रहे हों। नफरत का प्रेम और करुणा से सामना करने के लिए अपने भाई की प्रशंसा करते हुए सुश्री वाड्रा ने कहा, आपने अपने दिल में प्रेम, करुणा और सच्चाई लिए लड़ाई लड़ी। जो लोग आपको नहीं देख पाये, वे अब आपको देख सकते हैं, लेकिन हममें से कुछ लोगों ने हमेशा आपको एक बहादुर के रूप में देखा और जाना है। राहुल , मुझे आपकी बहन होने पर गर्व है। सोशल मीडिया पर पोस्ट के अपलोड के तीन घंटे के भीतर इसे 325.6 हजार बार देखा गया।

राहुल गांधी छोड़ेंगे केरल की वायनाड सीट

लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजे साफ हो चुके हैं। नतीजों में बीजेपी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है और एनडीए को बहुमत मिल गया है। इस बीच कांग्रेस नेता राहुल गांधी को लेकर एक बड़ी खबर सामने आई है। राहुल गांधी केरल की वायनाड लोकसभा सीट छोड़ सकते हैं। सूत्रों का दावा है कि राहुल गांधी उत्तर प्रदेश की रायबरेली सीट से ही संसद तक का सफर तय करेंगे। रायबरेली में राहुल गांधी की जीत का मार्जिन ज्यादा है। इसके साथ ही ये उनकी मां सोनिया गांधी की पूर्व संसदीय सीट भी है। केरल की वायनाड लोकसभा सीट से राहुल गांधी ने लगातार दूसरी बार जीत हासिल की है। यहां उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी सीपीआई की एनी राजा को 3.64 लाख से अधिक मतों के अंतर से हराया। 4 जून को लोकसभा चुनाव के रिजल्ट पर बोलते हुए उन्होंने कहा था, मैंने रायबरेली और वायनाड दोनों सीटों पर जीत दर्ज की है। मैं दोनों लोकसभा सीटों के मतदाताओं को तहे दिल से धन्यवाद देना चाहता हूं। उन्होंने कहा था कि पहले मैं चर्चा करूंगा और फिर फैसला लूंगा कि मैं किस सीट पर बना रहूंगा।

देश के उत्तर, पश्चिम हिस्सों में बारिश के आसार

■ धूल भरी आंधी चलने का भी लगाया अनुमान ■ 40 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलेंगी हवाएं

नई दिल्ली, 5 जून (एजेंसियां)। देश के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में अगले चार-पांच दिनों में धूल भरी आंधी चलने के साथ-साथ वर्षा होने के आसार हैं।

भारत मौसम विज्ञान विभाग ने बुधवार को कहा कि पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव के तहत, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, गिलगित, मुजफ्फराबाद, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली में आठ जून को गरज और 40 किलोमीटर प्रति घंटे की तेज रफ्तार से हवाएं चलने के साथ-साथ हल्की बारिश होने का अनुमान है।

इसी अवधि में पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, राजस्थान में धूल भरी आंधी चलने के आसार हैं जबकि पूर्वी भारत, उत्तर प्रदेश और उत्तरी मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में अगले पांच दिनों के दौरान लू की स्थिति जारी रहने के आसार हैं। कोंकण और कर्नाटक के तटों पर आठ जून से भारी वर्षा होने की आसार हैं, क्योंकि निचले क्षोभमंडल स्तर में रायलसीमा और आसपास के क्षेत्र में एक चक्रवाती परिसंचरण बना हुआ है। पूर्वी भारत में अगले दो दिनों के दौरान अधिकतम तापमान दो-तीन डिग्री सेल्सियस की वृद्धि का अनुमान है।

मानसून के लिए अनुकूल परिस्थितियां

मध्य अरब सागर के शेष हिस्सों, कर्नाटक के शेष हिस्सों, दक्षिणी महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों, तेलंगाना और तटीय आंध्र प्रदेश के कुछ और हिस्सों, दक्षिणी छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों, दक्षिण ओडिशा, पश्चिम मध्य और उत्तर पश्चिम बंगाल की खाड़ी के कुछ और हिस्से में अगले तीन-चार दिनों के दौरान मानसून के आगे बढ़ने के लिए परिस्थितियां अनुकूल हैं।

चुनाव में खाता नहीं खुलने पर मायावती बोली

मुस्लिमों को आगे सोच समझकर मौका देंगे

■ उचित प्रतिनिधित्व के बावजूद बसपा को नहीं समझ पा रहे

लखनऊ, 5 जून (देशबन्धु)। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने लोकसभा चुनाव में जीरो सीट लाने के बाद अपनी पहली प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा मुस्लिम समाज बसपा का अंग रहा है।

आगे इनको सोच समझकर मौका देंगे। बसपा मुखिया मायावती ने बुधवार को अपने एक जारी बयान में कहा कि मुस्लिम समाज बसपा का अंग रहा है। लेकिन पिछले कई चुनावों में उचित प्रतिनिधित्व देने के बावजूद भी बसपा को ठीक से समझ नहीं पा रहा है। अब आगे सोच समझकर पार्टी इन्हें मौका देगी। ताकि पार्टी को भविष्य में इस बार की तरह भयंकर नुकसान न हो।

उन्होंने आगे कहा कि हमारी आयोग से शुरू से ही यह मांग करती रही है कि चुनाव बहुत लंबा नहीं खींचना चाहिए। सभी के व्यापक हित व सुरक्षा आदि को ध्यान में रखते हुए यह चुनाव अधिक से अधिक तीन या चार चरणों में ही कराया जाना चाहिए।

ट्रैकिंग पर गए नौ पर्यटकों की मौत

■ इस हादसे में 10 अन्य ट्रैकरों को सुरक्षित बचा लिया गया

देहरादून, 5 जून (देशबन्धु) उत्तराखंड के उत्तरकाशी जनपद में सहस्त्रताल की ट्रैकिंग पर गए पर्यटकों के बाइस सदस्यीय एक दल के प्राकृतिक आपदा में फंसने के कारण नौ पर्यटकों की मौत हो गई है। इस हादसे में 10 अन्य ट्रैकरों को सुरक्षित बचा लिया गया। मंगलवार शाम से चल रहे रेस्क्यू अभियान में बुधवार को वायु सेना भी शामिल हो गई। अभी तक दस ट्रैकर्स को वायु सेना के हेलीकॉप्टर से सुरक्षित निकाल लिया गया है। अन्य दो ट्रैकर्स नजदीकी बेस कैंप में सुरक्षित थे, जो नजदीकी रोड हेड सिल्ला गांव के लिए पैदल निकले चुके हैं।

घटना स्थल से पांच शवों को भी निकाला जा चुका है। इस हादसे में बाईस सदस्यों वाले ट्रैकर्स दल के बाकी चार सदस्यों की खोज एवं बचाव के लिए रेस्क्यू अभियान युद्ध स्तर पर जारी है।

चुनाव — एससी-एसटी सीटों से आए परिणामों ने चौंकाया

सुरक्षित सीटों पर चला विपक्ष का जादू, 61 सीटें जीतीं

नई दिल्ली, 5 जून (एजेंसियां)। मोदी सरकार के तीसरी बार सत्ता में आने पर संविधान बदलने और आरक्षण खत्म होने की विपक्षी गठबंधन की बनाई गई धारणा का खामियाजा भाजपा को सुरक्षित सीटों पर उठाना पड़ा। बीते चुनाव के मुकाबले अकेले भाजपा को कांग्रेस के हाथों 24 सुरक्षित सीटें गंवानी पड़ी है। विपक्षी गठबंधन को भी बीते चुनाव के मुकाबले सुरक्षित सीटों पर बड़ी बढ़त मिली है।

बीते चुनाव में देशभर की कुल 131 सुरक्षित सीटों पर अकेले भाजपा को 82 सीटें हासिल हुई थी। इस चुनाव में यह आंकड़ा घट कर 53 रह गया। बीते चुनाव में भाजपा ने एससी सुरक्षित 82 सीटों में से 46 पर जीत दर्ज की थी, इस बार उसे महज 28 सीटों पर सफलता मिली। इसी प्रकार बीते चुनाव में एसटी सुरक्षित 47 में से भाजपा ने 31 सीटें जीती थी, इस बार यह आंकड़ा घट कर 25 रह गया।

कांग्रेस को इस बार 24 सीटों का लाभ हुआ

इस मुद्दे का कांग्रेस और उसकी अगुवाई वाले गठबंधन को जबरदस्त लाभ मिला। बीते चुनाव में 131 में से महज 10 सीटें सुरक्षित जीतने वाली कांग्रेस को इस बार 24 सीटों का लाभ हुआ।

पार्टी ने बीते चुनाव में एससी सुरक्षित छह सीटों के मुकाबले 21 तो एसटी सुरक्षित चार सीटों के मुकाबले 13 सीटें जीती। इंडी गठबंधन को इस चुनाव में 61 सुरक्षित सीटें हाथ लगीं तो राजग के हाथ महज 63 सीटें आईं।

भाजपा का मुद्दा नहीं चला

संविधान और आरक्षण मुद्दे का हर क्षेत्र खासकर पूर्वी, उत्तरी और दक्षिण भारत में व्यापक असर दिखा। महाराष्ट्र की नौ सुरक्षित सीटों में भाजपा के हाथ एक, यूपी की 17 में से 8, झारखंड की छह में से एक, कर्नाटक की सात में से महज दो, तेलंगाना की पांच में से महज एक सीटें ही हाथ आई। इन राज्यों की शेष सुरक्षित 31 सीटें इंडी गठबंधन को मिली। इस मुद्दे की काट के लिए भाजपा ने आरक्षण में मुस्लिम कोटा का मुद्दा उछाला था। पीएम सहित सभी वरिष्ठ नेताओं ने दावा किया था कि इंडी गठबंधन एससी-एसटी और ओबीसी आरक्षण मुसलमानों को दे देगी। दूसरे चरण से ही भाजपा इस मुद्दे पर हमलावर थी। यह नहीं चला।

देश

उवाच

राजग की यह जीत, बीते दस सालों में मोदी ने जिस तरह देश के गरीबों, महिलाओं, पिछड़ों, वंचितों और युवाओं के सपनों को साकार करने के लिए पुरुषार्थ किया है, उसके लिए जनता का आशीर्वाद है। नया भारत इस जनादेश के साथ विकास यात्रा को और गति और शक्ति देने के लिए तैयार है।

–अमित शाह, भाजपा नेता

तापमान	अधिकतम	न्यूनतम
दिल्ली	43.0	29.0
मुंबई	33.0	30.0
कोलकाता	34.0	28.0
चेन्नई	27.0	26.0

नतीजों ने साबित किया छल-बल से बड़ी होती है जनशक्ति : अखिलेश

- लोकसभा चुनाव नतीजों का स्वागत कर भाजपा पर निशाना साधा
- सपा-कांग्रेस गठबंधन को समर्थन देने के लिए जनता का जताया आभार

यह किसान, मजदूर, कारोबारियों की नई उम्मीदों की जीत है : अखिलेश यादव

लखनऊ, 5 जून (देशबन्धु)। लोकसभा चुनाव नतीजों का स्वागत करते हुए समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बुधवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर निशाना साधा और कहा कि जनता की शक्ति से बड़ा न किसी का बल होता है और न किसी का छल होता है। यादव ने बुधवार सुबह एक्स पर पोस्ट कर सपा-कांग्रेस गठबंधन को समर्थन देने के लिए यूपी की जनता के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने लिखा उत्तर प्रदेश में इंडिया गठबंधन की 'जन-प्रिय जीत' उस दलित-बहुजन भरोसे की भी जीत है जिसने अपने पिछड़े, अल्पसंख्यक, आदिवासी, आधी आबादी और अगड़ों में पिछड़े सभी उपेक्षित, शोषित, उत्पीड़ित समाज के साथ मिलकर उस संविधान को बचाने के लिए कंधे-से-कंधा मिलाकर संघर्ष किया है जो समता-समानतावादी सकारात्मक लोगों की सामूहिक जीत है। चुनाव प्रचार के दौरान विशेषकर कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी द्वारा मीडिया को निशाना बनाए जाने से इतर उन्होंने कहा कि ये निष्पक्ष, निष्कलंक मीडिया के निरंतर, अथक, निर्भय, ईमानदार प्रयासों की जीत है।

ये संविधान को संजीवनी मानने वाले संविधान-रक्षकों की जीत है। ये लोकतंत्र के हिमायती-हिम्मती लोगों की जीत है। ये गरीब की जीत है। ये लोकतंत्र की जीत है। यह सकारात्मक राजनीति की जीत है। यह मन के सच्चे और अच्छे लोगों की जीत है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि इस बार जनता ही जीती है, शासक नहीं। जनता जीतती रहे। आपने हममें जो विश्वास प्रकट किया है, हम उस भरोसे को पूरे दायित्व के साथ कायम रखेंगे और निभाएंगे भी, इसके लिए हार्दिक धन्यवाद-दिल से शुक्रिया और आनेवाले नये सकारात्मक समय के लिए अनंत शुभकामनाएं।

गौरतलब है कि मंगलवार को घोषित चुनाव परिणाम में समाजवादी पार्टी 37 सीटें जीतकर सबसे ज्यादा सीटें हासिल करने वाला दल बना है जबकि इंडिया समूह में उसकी सहयोगी कांग्रेस ने छह सीटें अपने नाम की है। भाजपा 33 सीटों पर सिमट गयी है।

यूपी के प्रदर्शन के दम पर इंडिया समूह ने भाजपा को पूर्ण बहुमत से आने से रोका है। इस चुनाव में अखिलेश यादव समेत सैफई में यादव परिवार के सभी पांच सदस्य विजयी रहे हैं।

कन्नौज जाकर अखिलेश ने जीत का प्रमाण पत्र लिया

समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बुधवार को अपने संसदीय क्षेत्र कन्नौज जाकर जीत का प्रमाण पत्र लिया और इंडिया गठबंधन की बैठक में भाग लेने के लिए दिल्ली रवाना हुए। जाने से पहले उन्होंने एक्स पर पोस्ट कर कन्नौज की जनता के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि यह है कन्नौज की महान जनता का पैगाम। सौहार्दपूर्ण सकारात्मक राजनीति के नाम। कन्नौज की खुशबू को फिर से महकाएंगे सबको शुक्रिया-सबका आभार।

कश्मीर में पुलिस हिरासत में व्यक्ति की मौत

श्रीनगर, 5 जून (एजेंसियां)। जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले में एक युवक की कथित हिरासत में मौत के मामले में मजिस्ट्रेट जांच के आदेश दिए गए हैं। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि पुलिस ने तीन जून की शाम को नाका चेकिंग के दौरान ब्रौ वंदना पुलवामा निवासी इम्तियाज अहमद पाला को हिरासत में लिया। उन्होंने कहा कि हिरासत के दौरान पाला को गंभीर स्वास्थ्य संबंधी जटिलताएं होने पर मगंलवार को उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि मौत की मजिस्ट्रेट जांच के आदेश दे दिए गए हैं। अधिकारी ने कहा कि उसकी मौत के कारणों और परिस्थितियों का पता लगाने के लिए मजिस्ट्रेट जांच के आदेश दे दिये गये हैं। मृतक के परिजनों ने पुलिस पर गंभीर आरोप लगाए और कहा कि उसे पुलिस ने घेराबंदी एवं तलाशी अभियान के दौरान उठाया था। परिवार के एक सदस्य ने आरोप लगाया, हिरासत में उसे प्रताड़ित करके मार दिया गया। शव को मंगलवार रात परिवार को अंतिम संस्कार के लिए सौंप दिया गया। प्राथमिकी के अनुसार, एक खुफिया जानकारी के आधार पर पाला को तीन जून को पुलवामा क्षेत्र में आतंकवादियों के लिए काम करने वाले मादक पदार्थों के तस्करों की आवाजाही के बारे में एक खुफिया जानकारी के आधार पर गिरफ्तार किया गया था। प्राथमिकी में कहा गया है, ग्रौगुंड गांव में एक संयुक्त नाका स्थापित किया गया था। नाके के दौरान, वाहनों और पैदल चलने वालों की जांच की जा रही थी। इस बीच, एक व्यक्ति जो चकुरा से ग्रौगुंड गांव की ओर आ रहा था, नाका पार्टी की मौजूदगी को देखकर भागने की कोशिश की, लेकिन नाका पार्टी ने उसका पीछा किया और संदिग्ध तथा सहायक पुलिस अधीक्षक पुलवामा के साथ निजी सुरक्षा अधिकारी (पीएसओ) सार्जेंट साहिल रैना गिर गए, जिससे दोनों को कुछ चोटें आईं। एफआईआर में कहा गया है, संदिग्ध की तलाशी लेने पर उसकी पैंट की जेब से हेरोइन जैसा पदार्थ बरामद हुआ।

- मजिस्ट्रेट जांच के आदेश दिए

बीआरएस ने अपने वोट भाजपा को किए ट्रांसफर : रेवंत रेड्डी

हैदराबाद, 5 जून (एजेंसियां)। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने बुधवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर दावा किया कि भारत राष्ट्र समिति ने लोकसभा चुनाव में अपने वोट भाजपा को ट्रांसफर कर दिए। यही कारण है कि बीजेपी को दक्षिणी राज्य में अपनी सीटों की संख्या दोगुनी करने में मदद मिली। सीएम ने भाजपा की जीत सुनिश्चित करने के लिए बीआरएस नेतृत्व पर अपनी आत्मा बेचने का आरोप लगाया। उन्होंने आरोप लगाया कि बीआरएस अध्यक्ष के. चंद्रशेखर राव ने अपने परिवार के हितों की रक्षा के लिए बीआरएस विधायकों के स्वाभिमान को भाजपा के पास गिरवी रख दिया। भाजपा जिन आठ सीटों पर जीती है, उनमें से सात पर बीआरएस की जमानत जब्त हो गई। बीआरएस के गठन के बाद पहली बार पार्टी का संसद में कोई प्रतिनिधित्व नहीं है। नवंबर 2023 में हुए विस चुनाव में बीआरएस को 37.5 प्रतिशत वोट मिले थे, लेकिन लोकसभा चुनाव में पार्टी का वोट शेयर घटकर 16.5 प्रतिशत रह गया। उन्होंने कहा कि भाजपा को विधानसभा चुनाव में केवल 13 प्रतिशत वोट मिले थे। लेकिन लोकसभा चुनाव में भाजपा का वोट प्रतिशत बढ़कर 35.5 प्रतिशत हो गया। सीएम ने यह भी दावा किया कि बीआरएस को 119 विस क्षेत्रों में से केवल तीन में बहुमत मिला है। बीआरएस के गठन के बाद से सिद्दीपेट क्षेत्र में पार्टी को 30 हजार से 1.5 लाख वोट मिलते थे, लेकिन वहां अब बीआरएस को केवल 2,500 वोट मिले। रेवंत रेड्डी ने आरोप लगाया कि सिद्दीपेट से बीआरएस विधायक टी. हरीश राव ने अपने वोट भाजपा को ट्रांसफर कर दिए। भाजपा के रघुनंदन राव को वोट ट्रांसफर कर बीआरएस ने कमजोर वर्ग से आने वाले कांग्रेस उम्मीदवार को हराने में मदद की। यदि हरीश राव आत्मघाती दस्ते बनकर कांग्रेस को नुकसान पहुंचाना चाहते हैं, तो उन्हें पता होना चाहिए कि वह भी गायब हो जाएंगे। तेलंगाना के समाज और सभी लोकतांत्रिक एवं धर्मनिरपेक्ष ताकतों को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि कैसे बीआरएस ने भाजपा को चुनाव जीतने में मदद की।

- बीआरएस नेतृत्व पर अपनी आत्मा बेचने का लगाया आरोप

सार संक्षेप

प्रधानमंत्री मोदी ने की उपराष्ट्रपति धनखड़ से भेंट

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ से शिष्टाचार भेंट की। उप राष्ट्रपति सचिवालय ने यहां बताया कि मोदी ने सुबह धनखड़ से उनके आवास उप राष्ट्रपति एन्कलेव पर शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर धनखड़ ने मोदी को शॉल भेंट किया। लोकसभा चुनाव के परिणाम आने के बाद मोदी की यह उप राष्ट्रपति के साथ पहली मुलाकात है।

पुंछ में पाकिस्तानी घुसपैठिया हिरासत में

जम्मू। सेना ने जम्मू कश्मीर के पुंछ जिले में नियंत्रण रेखा के पास भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के एक घुसपैठिये को हिरासत में लिया है। आधिकारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि सेना की एक गश्ती टीम ने बुधवार तड़के एक व्यक्ति को भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करने पर हिरासत में ले लिया। उन्होंने कहा कि शुरुआती पूछताछ से ऐसा लगता है कि यह व्यक्ति अनजाने में भारतीय सीमा में आ गया। घुसपैठिए की पहचान पीओके के बट्टल गांव निवासी 72 वर्षीय मुनीर हुसैन के रूप में हुई। वह निहत्था था और उनके पास से कुछ भी आपत्तिजनक सामान नहीं मिला है।

सारण में ट्रक से कुचलकर बाइक सवार की मौत

छपरा। बिहार में सारण जिले के मशरक थाना क्षेत्र में बुधवार को ट्रक से कुचकलकर मोटर साइकिल सवार एक व्यक्ति की मौत हो गई। पुलिस सूत्रों ने यहां बताया कि कर्ण कुदरिया गांव के समीप अनियंत्रित ट्रक ने मोटरसाइकिल सवार को कुचल दिया। इस घटना में मोटरसाइकिल सवार की मौत हो गयी।मृतक की पहचान नहीं की जा सकी है। सूत्रों ने बताया कि घटना की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए सदर अस्पताल छपरा भेज दिया है।

कश्मीर में बड़े नेता के रूप में उभरे इंजीनियर रशीद

श्रीनगर। जेल में बंद अब्दुल रशीद शेख उर्फ इंजीनियर रशीद जम्मू-कश्मीर में लोकसभा चुनाव में दो शीर्ष नेताओं उमर अब्दुल्ला और सज्जाद लोन को हराकर एक बड़े नेता के रूप में उभरे हैं। बारामूला संसदीय सीट में 18 विधानसभा क्षेत्र हैं जो चार जिलों बारामूला, कुपवाड़ा, बांदीपोरा और बडगाम में फैले हुए हैं। इंजीनियर रशीद ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी पूर्व मुख्यमंत्री एवं नेशनल कॉन्फ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला को 2.41 लाख से अधिक मतों के अंतर से हराया। चुनाव आयोग के आंकड़ों के मुताबिक इंजीनियर रशीद को 4,72,481 वोट मिले जबकि अब्दुल्ला 2,68,339 मतों के साथ दूसरे स्थान पर रहे।

नीतीश कुमार व चंद्रबाबू नायडू सभी के दोस्त हैं : संजय राउत

नई दिल्ली, 5 जून (एजेंसियां)। शिवसेना यूबीटी नेता संजय राउत ने इंडिया गठबंधन की सरकार बनाने के सवाल पर कहा कि नीतीश कुमार और चंद्रबाबू सभी के दोस्त हैं। मुझे नहीं लगता कि दोनों ऐसे लोगों के साथ जाएंगे, जिनसे लोकतंत्र और संविधान को खतरा है। भाजपा के पास बहुमत नहीं है। वे 240 पर अटके हैं। पीएम मोदी और भाजपा के पास बहुमत नहीं है। वे अस्थिर सरकार देना चाहते हैं। अस्थिर सरकार चलाना मोदी जी का काम नहीं है। वे मोदी की सरकार, मोदी की गारंटी की बात करते थे। हमारे पास जनादेश है। जनता को हम पर भरोसा है। वहीं, एनडीए के सरकार गठन के चर्चाओं पर रावत ने कहा कि एनडीए में कौन-कौन हैं, नीतीश बाबू, चंद्र बाबू और चिराग बाबू। देख लेंगे। जनता ने भाजपा का बहुमत छीन लिया है। लोगों ने उन्हें 240 पर लाकर खड़ा कर दिया है। वे जोड़-तोड़ वाली सरकार बनाने की जुगत में हैं। उन्हें करने दीजिए। लोकतंत्र में ऐसी कोशिशें होती रहती हैं। उन्हें शपथ लेने दीजिए। उनके पास आंकड़े होंगे तो वे जाएंगे। हमारा मनोरंजन हो रहा है, हम अपना मनोरंजन क्यों छोड़ेंगे। बता दें कि भाजपा तीसरी बार लोकसभा चुनाव में भारत की सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी है। नरेंद्र मोदी एक बार फिर प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ले सकते हैं।

- संविधान व लोकतंत्र पर खतरा पैदा करने वालों के साथ नहीं जाएंगे

झारखंड में 70 फीसदी प्रत्याशी नोटा से हारे

- चुनाव में 88 फीसदी प्रत्याशियों की जमानत जब्त
- जमानत नहीं बचा पाने वाले प्रत्याशियों की संख्या 215 रही

रांची, 5 जून (एजेंसियां)। झारखंड में लोकसभा चुनाव के मैदान में उतरे 70 फीसदी प्रत्याशी नोटा (नन ऑफ द एबव) से पराजित हो गए हैं। चुनाव में 88.11 फीसदी प्रत्याशी अपनी जमानत बचाने में नाकाम रहे। बुधवार शाम राज्य के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार की ओर से उपलब्ध कराए गए फाइनल आंकड़ों के मुताबिक राज्य की 14 लोकसभा सीटों के लिए कुल 244 प्रत्याशी चुनाव लड़ रहे थे। इनमें से 171 को नोटा की तुलना में कम वोट मिले हैं। जमानत नहीं बचा पाने वाले प्रत्याशियों की संख्या 215 है। राज्य में 1.72 करोड़ से भी ज्यादा मतदाताओं ने मताधिकार का इस्तेमाल किया। इनमें से 1.92 लाख से भी ज्यादा मतदाताओं ने किसी भी प्रत्याशी को वोट देने की बजाय नोटा का बटन दबाना पसंद किया। इस प्रकार कुल मतदान का करीब 1.12 प्रतिशत हिस्सा नोटा के पक्ष में गया है। सिंहभूम में कुल 23,982 मतदाता नोटा के साथ गए हैं। इनका आंकड़ा 2.38 फीसदी रहा है। इस सीट पर कुल 14 प्रत्याशी थे। इनमें से 11 को नोटा से शिकस्त खानी पड़ी।

खूंटी में वोट डालने वालों में कुल 2.34 फीसदी यानी 21,919 वोटर ऐसे रहे, जिन्होंने नोटा का विकल्प चुना। इस सीट पर सात प्रत्याशी थे। इनमें से विजेता कांग्रेस के काली चरण मुंडा और दूसरे नंबर पर रहे केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा को छोड़ बाकी पांच प्रत्याशियों को नोटा से कम संख्या में वोट मिले। पलामू में 1.75 फीसदी मतदाताओं ने नोटा पर बटन दबाया।

कोडरमा सीट के मतदाओं ने किया नोटा का सबसे ज्यादा प्रयोग

नोटा का सबसे ज्यादा इस्तेमाल कोडरमा लोकसभा सीट के मतदाताओं ने किया। यहां 42,152 मतदाताओं ने नोटा के जरिए सभी प्रत्याशियों के प्रति अपनी नापसंदगी का इजहार किया। ऐसे मतदाताओं का आंकड़ा 3.08 फीसदी रहा। यहां जीत दर्ज करने वाली भाजपा की अन्नपूर्णा देवी और दूसरे स्थान पर सीपीआई एमएल के विनोद कुमार सिंह को छोड़ 13 प्रत्याशी नोटा से हार गए।

इनकी कुल संख्या 23,343 रही। राजमहल सीट पर कुल 18,217 मतदाताओं ने नोटा का विकल्प चुना और इनका प्रतिशत 1.5 रहा। इसी तरह लोहरदगा सीट पर 11,384 मतदाताओं ने नोटा के साथ जाना बेहतर समझा और इनका प्रतिशत 1.18 रहा। अन्य सीटों पर एक प्रतिशत से कम लोगों ने नोटा चुना।

विदेश यात्रा का अधिकार मौलिक अधिकार : हाईकोर्ट

मुंबई, 5 जून (एजेंसियां)। बॉम्बे उच्च न्यायालय ने एक मामले में कहा है कि विदेश यात्रा के अधिकार को देश के संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत एक मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी गई है। उच्च न्यायालय ने केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) के एक मामले में गवाह को थोड़े समय के लिए अमेरिका और ब्रिटेन जाने की अनुमति देते हुए अपने आदेश में यह बात कही। न्यायमूर्ति कमल खाता और न्यायमूर्ति श्याम चांडक की अवकाश पीठ ने गवाह संजय डांगी को 06 जून से 23 जून तक अमेरिका और ब्रिटेन की यात्रा करने की अनुमति दी। एनडीएसआई गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी के रूप में ऑथम इन्वेस्टमेंट एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड के प्रमोटर डांगी को सीबीआई ने वधावन प्रवर्तित दीवान हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड (डीएचएफएल) से जुड़े कथित घोटाले की जांच में गवाह के रूप में बुलाया था। ऑथम इन्वेस्टमेंट भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के साथ पंजीकृत है और इसकी कुल संपत्ति 9,500 करोड़ रुपए है। पीठ ने अनुमति देते हुए डांगी के खिलाफ सीबीआई द्वारा जारी लुक आउट सर्कुलर (एलओसी) को भी 24 जून तक निलंबित कर दिया।

बिहार लोकसभा चुनाव में 25 साल बाद लहराया वामदल का लाल झंडा

पटना, 5 जून (एजेंसियां)। बिहार की सियासी सरजमीं पर 25 साल बाद इस बार के लोकसभा चुनाव में वामदल का 'लाल झंडा' बुलंद हुआ है। बिहार में हुए लोकसभा चुनाव में वामदल में शामिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) और भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी-लेनिनवादी का खाता वर्ष 1999 के चुनाव के बाद नहीं खुला था। इस बार के चुनाव में 25 साल के बाद वामदल के दो प्रत्याशी सुदामा प्रसाद और राजाराम सिंह ने बिहार की सियासी सरमर्जी पर अपनी पार्टी का 'लाल झंडा' बुलंद किया है। वर्ष 1999 मे भागलपुर से माकपा प्रत्याशी सुबोध राय भाजपा के प्रभास चंद्र तिवारी को पराजित कर लोकसभा पहुंचे थे।

- माकपा की टिकट पर चुनाव जीतने वाले सुबोध राय वामदल के अंतिम सांसद थे

कारकाट संसदीय सीट पर टिकी थी देश की नजरें

बिहार की कारकाट संसदीय सीट पर पूरे देश की नजरें टिकी हुई थी। (भाकपा-माले) प्रत्याशी राजाराम सिंह ने अपना 'पावर' दिखाया और निर्दलीय प्रत्याशी भोजपुरी सिनेमा के पावर स्टार पवन सिंह को एक लाख पांच हजार 858 मतों के अंतर से पराजित किया, वहीं राष्ट्रीय लोक मोर्चा (रालोमो) के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री उपेन्द्र कुशवाहा तीसरे स्थान पर रहे। चुनाव आयोग के अनुसार, राजा राम सिंह ने अंतिम दौर की मतगणना के बाद कुल 380581 वोट हासिल कर अपने प्रतिद्वंद्वी पवन सिंह को एक लाख पांच हजार 858 के मतों के अंतर से मात दे दी। निर्दलीय प्रत्याशी पवन सिंह को 274723 जबकि उपेन्द्र कुश्वाहा को 253876 मत मिले।

भूपेंद्र पटेल ने नमो वड वन में किया वृक्षारोपण

गांधीनगर, 5 जून (एजेंसियां)। गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर बुधवार को यहां 'नमो वड वन' का दौरा कर निरीक्षण एवं वृक्षारोपण किया। पटेल सुबह गांधीनगर के इस 'नमो वड वन' के दौरे पर पहुंचे और वहां लगाये गये फूलों और पौधों सहित अन्य व्यवस्थाओं की जानकारी हासिल की। इस दौरे के दौरान वन एवं पर्यावरण विभाग के प्रधान सचिव संजीव कुमार ने अधिक जानकारी देते हुये बताया कि राज्य में 75 स्थलों पर 'नमो वड वन' तैयार करने के संकल्प के सापेक्ष अब तक 82 'नमो वड वन' तैयार हो चुके हैं।

उन्होंने कहा कि पहले वर्ष प्रत्येक 'नमो वड वन' में 75 बरगद के पौधे लगाने के बाद दूसरे वर्ष 100 और बरगद के पौधे लगाकर हम वनों के सघनीकरण की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। अभी प्रत्येक 'नमो वड वन' में कुल 175 बरगद के पौधे लगाये गये हैं। गांधीनगर में एक हेक्टेयर क्षेत्र में निर्मित 'नमो वड वन' में विभिन्न प्रजातियों के छोटे-बड़े पौधों और पुष्पीय पौधों सहित साढ़े छह हजार पौधों की देखभाल की जा रही है।

सर्वाधिक नोटा इंदौर में व सबसे कम सतना में : राजन

भोपाल, 5 जून (एजेंसियां)। लोकसभा चुनाव के परिणाम घोषित होने के एक दिन बाद मध्य प्रदेश के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने चुनाव से जुड़े आंकड़े बताते हुए कहा कि इस चुनाव में नोटा (उपरोक्त में से कोई नहीं) के विकल्प को सबसे ज्यादा मत इंदौर में और सबसे कम सतना में प्राप्त हुए। राजन ने संवाददाताओं को बताया कि जीत का सर्वाधिक अंतर इंदौर में और सबसे कम मुरैना में रहा। उन्होंने बताया कि पूरे चुनाव में नोटा को लेकर बहुत चर्चाएं रहीं। नोटा का अंतिम आंकड़ा (ईवीएम और डाकमत्र) मिला कर पांच लाख 33 हजार 705 रहा। सर्वाधिक नोटा इंदौर में दो लाख 18 हजार 674 और सबसे कम सतना में दो हजार 553 रहे। इंदौर में डाकमत्र में भी नोटा को 319 मत प्राप्त हुए। भिंड में सबसे ज्यादा डाकमत्र रहे, जबकि सबसे कम दमोह में थे। पूरे चुनाव में कुल 369 प्रत्याशी थे, जिसमें 343 पुरुष, 25 महिलाएं और एक अन्य था। प्रत्याशियों के वोट शेयर की जानकारी साझा करते हुए बताया कि इंदौर में भाजपा प्रत्याशी शंकर ललवानी इस श्रेणी में सबसे ऊपर रहे। उन्हें कुल मतों के 78.54 फीसदी मत प्राप्त हुए। दूसरे नंबर पर विदिशा से शिवराज चौहान रहे, जिन्हें कुल मतों के 76.70 फीसदी मत मिले। पार्टी के वोट शेयर के संबंध में उन्होंने बताया कि कांग्रेस को जहां 2019 में 34.50 फीसदी मत मिले थे, वहीं इस बार उनका वोट शेयर 32.44 फीसदी रहा। भाजपा का 2019 में 58 फीसदी वोट शेयर था, इस बार पार्टी को 59.28 फीसदी वोट मिले।

- मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने जारी किए चुनाव से जुड़े आंकड़े

आयोजन *हमारी भूमि, हमारा भविष्य विषय पर आयोजित सम्मेलन में बोले मनोज सिन्हा*

बिगड़े पारिस्थितिकी तंत्र को दुरस्त करने के लिए सरकार प्रतिबद्ध

जम्मू, 5 जून (एजेंसियां)। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने पर्यावरण सर्वप्रथम हमारा दृष्टिकोण है और बिगड़े पारिस्थितिकी तंत्र को दुरस्त करने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। बुधवार को श्रीनगर में उपराज्यपाल ने हमारी भूमि, हमारा भविष्य विषय पर आयोजित सम्मेलन को संबोधित करते हुए यह बातें कहीं। इस दौरान उन्होंने भूमि क्षरण, सूखे और मरुस्थलीकरण की चुनौतियों से निपटने के लिए भूमि पुनर्स्थापन की आवश्यकता पर जोर दिया। कार्यक्रम का आयोजन निगीन झील संरक्षण संगठन (एनएलसीओ) द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि पारिस्थितिकी तंत्र के क्षरण को रोकने के लिए हमारे सामूहिक प्रयासों से आजीविका, खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा मिलेगा और मौसम में बदलाव की स्थिति को सामान्य बनाया जा सकेगा। उन्होंने गैर सरकारी संगठनों, वित्तीय संस्थानों, व्यापारिक संगठनों, स्वयंसेवकों, नागरिक समाज के सदस्यों और व्यक्तियों से परिवर्तन के एजेंट के रूप में कार्य करने और पारिस्थितिक संरक्षण के लिए खुद को समर्पित करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि प्रदूषण की रोकथाम, हरित क्षेत्र में वृद्धि और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हमारे साझा लक्ष्य होने चाहिए। इस अवसर पर उपराज्यपाल ने पर्यावरण संरक्षण और सतत जीवन को बढ़ावा देने के प्रति यूटी प्रशासन की प्रतिबद्धता को दोहराया। उन्होंने जम्मू-कश्मीर की समृद्ध जैव विविधता की रक्षा और संरक्षण के उद्देश्य से सरकार की पहल और कार्यक्रमों के बारे में भी बात की।

- प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हमारे साझा लक्ष्य होने चाहिए : सिन्हा

उपराज्यपाल ने नागरिकों के लिए दो महत्वपूर्ण लक्ष्य निर्धारित किए- एकल-उपयोग प्लास्टिक के इस्तेमाल को रोकना और अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली को मजबूत करना। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों से अपने गांवों में ऐसे कार्यों की पहचान करने की भी अपील की, जो पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने और भूमि क्षरण को रोकने में मदद कर सकते हैं। गिलसर-खुशालसर जलाशय को बदलने में निगीन झील संरक्षण संगठन के योगदान की सराहना करते हुए उपराज्यपाल ने संगठन को उसके प्रयासों में प्रशासन की ओर से हर संभव समर्थन का आश्वासन दिया। इस अवसर पर लोगों को पर्यावरण संरक्षण की शपथ भी दिलाई गई। इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस की थीम भूमि क्षरण, मरुस्थलीकरण और सूखे से निपटने पर केंद्रित है। इस अवसर पर आवास एवं शहरी विकास विभाग की आयुक्त सचिव मनदीप कौर, कश्मीर के संभागीय आयुक्त विजय बिधूड़ी, श्रीनगर के उपायुक्त डॉ. बिलाल मोहिउद्दीन भट, एलसीएमए के कुलपति डॉ. बशीर अहमद भट, निगीन झील संरक्षण संगठन के अध्यक्ष मंजूर वांगनू, वरिष्ठ अधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता, स्वयंसेवक और बड़ी संख्या में युवा उपस्थित रहे।

कैपिटल ज़ोन

उल्टा पुल्टा

एक खूबसूरत लड़की बस स्टैंड पर खड़ी थी...
एक नौजवान बोला : चांद तो रात में निकलता हैं, आज दिन में कैसे निकल आया ?
लड़की बोली : अरे उल्लू तो रात को बोलता था, आज दिन में कैसे बोल रहा है।

लोकसभा चुनाव के नतीजों ने तानाशाही व गुंडागर्दी को किया खारिज : आप

राजधानी में लोकसभा चुनाव के परिणामों के बाद दी सफाई

नई दिल्ली, 5 जून (देशबन्धु)। दिल्ली में लोकसभा की एक भी सीट हासिल करने में विफल रही आम आदमी पार्टी (आप) ने बुधवार को कहा कि उसने पिछले आम चुनाव की मुकाबले काफी बेहतर प्रदर्शन किया है और पंजाब और चंडीगढ़ में मजबूत पकड़ के साथ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को बहुमत की ओर बढ़ने से रोकने के लक्ष्य को हासिल करने में सफल रही है। आप नेता संदीप पाठक ने संवाददाताओं से कहा कि लोकसभा चुनाव के परिणामों से देश की जनता ने स्पष्ट कर दिया है कि वह किसी भी तरह की तानाशाही और गुंडागर्दी बर्दाश्त नहीं करेगी।

बहुमत नहीं ला सकी भाजपा

आप नेता संदीप पाठक ने कहा कि भाजपा ने एक ओर बहुमत हासिल करने के लिए पूरी ताकत झोंक दी, इसके बावजूद हासिल नहीं कर सकी। दूसरी ओर इंडिया समूह ने ऐसी विपरीत परिस्थितियों में चुनाव लड़ा और बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। आप नेता ने जोर देते हुए कहा कि उनके लिए पार्टी से ज्यादा महत्वपूर्ण देश है। पाठक ने कहा कि हमने चुनाव मिलकर और मजबूती से लड़ा। हमारी पार्टी मजबूत है और देश के लिये लड़ने को पूरी तरह से तैयार हैं। पाठक ने पार्टी कार्यकताओं और समर्थकों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि हमारे लिए देश महत्वपूर्ण है और हम देश को बचाने के लिए लड़े। इतनी विषम परिस्थितियों के बावजूद हमारे नेताओं और सहयोगियों और कार्यकर्ताओं ने संघर्ष किया। हमें चुनावों में और भी बेहतर नतीजों की उम्मीद थी, जो कि हमारी आशा के अनुरूप नहीं आए, लेकिन हमने चुनाव में पूरी तरह से मेहनत की और जनता का हमें पूरा प्यार और आशीर्वाद भी मिला। डॉ. संदीप पाठक ने कहा कि 2019 में पंजाब में आप को लगभग 7 फीसदी वोट मिला था और एक सीट पर जीत हुई थी। बाकी सीटों पर आप चौथे-पांचवें नंबर पर थी। लेकिन, इस बार आप ने 3 सीटें जीती हैं, जबकि 2 सीटों पर काफी करीबी मुकाबला रहा। 2019 में आप का वोट शेयर 7 फीसदी था, जबकि इस बार 26 फीसदी है। पंजाब में उम्मीद से कम सीटें मिली हैं लेकिन, इस चुनाव ने यह साबित कर दिया है कि आम आदमी पार्टी पंजाब में भी अच्छी तरह से स्थापित पार्टी है।

हमारा लक्ष्य भाजपा को रोकना था जिसे हासिल किया : संदीप पाठक

आप ने पिछले लोस चुनाव से बेहतर प्रदर्शन किया

आप नेता संदीप पाठक ने कहा कि आप आदमी पार्टी ने पिछले लोकसभा चुनाव से बेहतर प्रदर्शन किया है। अगर आप लोकसभा चुनाव के नतीजों की तुलना विधानसभा चुनाव के नतीजों से करें, तो हमें वोट कम मिले हैं, लेकिन हम अपने लक्ष्य हो हासिल करने में सफल हुये हैं। हमारा मकसद केवल भाजपा को रोकना था, जिसे हमने पूरी तरह से निभाया है। आप नेता ने कहा कि हमने पंजाब और चंडीगढ़ में भाजपा को रोका और आने वाले समय में हम और भी अधिक मेहनत करेंगे और अच्छे परिणाम हासिल करेंगे। उन्होंने कहा कि यह चुनाव आम आदमी पार्टी का नहीं था, इंडिया समूह का था। यह देश की दशा में सुधार करने के लिए था। उन्होंने दावा किया कि पार्टी ने काफी परेशानी झेली है और पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं को धमकियों का भी सामना करना पड़ा है।

बांसुरी अच्छे से निभाएं जनता की जिम्मेदारी : सोमनाथ भारती

नई दिल्ली, 5 जून (देशबन्धु)। दिल्ली की सभी सीटों पर भाजपा प्रत्याशियों ने जीत दर्ज की। हार-जीत के नतीजों के बाद अब सियासी बयानों की भरमार है। इसी बीच नई दिल्ली लोकसभा सीट से आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी सोमनाथ भारती ने हार के बाद पहली प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने नई दिल्ली की जनता का धन्यवाद करते हुए कहा कि आम आदमी पार्टी के किसी भी उम्मीदवार को इतना वोट कभी नहीं मिला था, इसके लिए वह नई दिल्ली की जनता का धन्यवाद करते हैं। इसके साथ ही जीत दर्ज करने वालीं भाजपा प्रत्याशी बांसुरी स्वराज को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जनता की जिम्मेदारी को वह अच्छे तरीके से निभाएं, इसकी कामना करते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि चुनाव प्रचार के समय से ही उनके कार्यक्रम को प्रभावित करने के लिए दिल्ली पुलिस और चुनाव आयोग जैसी एजेंसियों ने तमाम कोशिश की। वोटिंग वाले दिन कई पोलिंग बूथ पर भाजपा के पंपलेट देखने को मिले।

खेल-खेल में बच्चों को दी पर्यावरण संरक्षण की सीख

नई दिल्ली, 5 जून (देशबन्धु)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर, सेसमी वर्कशॉप इंडिया ट्रस्ट (एसडब्ल्यूआईटी) ने अपनी महत्वपूर्ण पहल मेरा प्लैनेट, मेरा घर की प्रभावशाली यात्रा का जश्न मनाया, जिसके तहत 5-12 वर्ष की आयु के बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता को बढ़ावा दिया गया है। बता दें कि मेरा प्लैनेट, मेरा घर एसटीईएम शिक्षा पर आधारित एक पर्यावरण साक्षरता पाठ्यक्रम है, जो बच्चों को अनुभवात्मक शिक्षा प्रदान करता है।

बुधवार को सेसमी वर्कशॉप इंडिया ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में इस परिवर्तनकारी कार्यक्रम की उपलब्धियों और भविष्य की आकांक्षाओं को प्रदर्शित किया गया। साथ ही भारत में युवा पर्यावरण राजदूतों को भी सामने लाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत से ही, मेरा प्लैनेट, मेरा घर ने 9500 से अधिक बच्चों के साथ किए गए सर्वेक्षण से प्राप्त टिकाऊ आदतों और सक्रिय पर्यावरणीय नेतृत्व पर ध्यान केंद्रित करते हुए, महत्वपूर्ण पर्यावरण पाठ को बच्चों की दैनिक शिक्षा में प्रभावी ढंग से एकीकृत किया है। सेसमी वर्कशॉप इंडिया ट्रस्ट की मैनेजिंग ट्रस्टी, सोनाली खान, इस पहल के प्रभाव पर जोर देते हुए कहती हैं, चूंकि, हम पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ व्यवहार अपनाने की चुनौती का सामना करते हैं, हमारे सबसे छोटे नागरिकों को इस बातचीत में शामिल करना अनिवार्य है। मेरा प्लैनेट, मेरा घर के माध्यम से, हम बच्चों को एक टिकाऊ भविष्य को आकार देने के लिए आवश्यक उपकरणों और ज्ञान से लैस करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। पिछले 4 वर्षों में, हमने प्रेरणादायक परिवर्तन देखे हैं।

■ **एसडब्ल्यूआईटी ने मेरा प्लैनेट, मेरा घर की प्रभावशाली यात्रा का जश्न मनाया**

सार संक्षेप

डॉ. पोलीसेट्टी का यूके के आयुर्वेद कॉलेज के साथ करार

नई दिल्ली। पॉली-साइंटिफिक आयुर्वेद पीएसए के अग्रणी, डॉ. रविशंकर पोलिसेट्टी ने यूके में स्थित ब्रिटिश कॉलेज ऑफ आयुर्वेद बीसीए में अधिकतम हिस्सेदारी हासिल करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। उम्मीद है कि इस साझेदारी से भारत के पारंपरिक आयुर्वेदिक ज्ञान को दुनिया भर में आगे बढ़ाने में काफी मदद मिलेगी। डॉ. पोलीसेट्टी के साई गंगा पनाकिया प्राइवेट लिमिटेड के एक डिविजन- यानी इंस्टीट्यूट ऑफ पॉली-साइंटिफिक आयुर्वेद आईपीएसए की ओर से यूके में आयुर्वेद के सबसे पुराने कॉलेज, बीसीए में पॉली-साइंटिफिक आयुर्वेद में एक ऐसे पाठ्यक्रम की शुरुआत की जाएगी, जो बिल्कुल नया और इनोवेटिव होगा। इस अवसर पर डॉ. पोलीसेट्टी कहते हैं किपॉली-साइंटिफिक आयुर्वेद में बिल्कुल नई तकनीकों और आधुनिक चिकित्सा के साथ-साथ आयुर्वेद एवं ज़िंदगी जीने के तरीके के बारे में भारत के प्राचीन ज्ञान को भी शामिल किया जाता है। इसमें स्वास्थ्य सेवा से जुड़े सभी पहलुओं के लिए सबसे कारगर समाधानों में से एक बनने की क्षमता है। यह नई साझेदारी यूके और भारत के प्रमुख आयुर्वेदिक विशेषज्ञों को एकजुट करेगी, जिससे पीएसए में प्रगति को मजबूत बनाने और इसके फायदों को बड़ी संख्या में लोगों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी।

एक हजार जरूरतमंदों को भोजन और वस्त्र वितरित

नई दिल्ली। श्रीमद् राजचंद्र मिशन के तत्वावधान में दिल्ली के अशोक विहार में साधकों द्वारा पारंपरिक अन्नदान और वस्त्रदान किया गया। इस मौके पर 1000 से अधिक जरूरतमंदों को भोजन और वस्त्र प्रसाद के रूप में प्राप्त हुए। वहां मौजूद साधकों ने कहा कि श्री गुरु रत्ना प्रभु ने हमसब को आत्मकल्याण के लिए सेवा का मार्ग दिखाया है। साधकों ने कहा कि गरीबों की सेवा करना सबसे बड़ा पुण्य का काम है। किसी जरूरतमंद को भोजन, वस्त्र मिल जाए तो इससे बड़ा धर्म कोई नहीं हो सकता। हर महीने जरूरतमंदों को अन्नदानम वस्त्रदानम सेवा के माध्यम से वस्त्र और भोजन का वितरण किया जाता है। श्री गुरु रत्ना प्रभु ने कहा कि अन्नदान या वस्त्रदान की पवित्र भेंट हमेशा भारतीय आध्यात्मिक परंपरा और लोकाचार का हिस्सा रहा है।

उत्तर-पश्चिम दिल्ली सीट पर सबसे ज्यादा पड़े नोटा को वोट

नई दिल्ली, 5 जून (देशबन्धु)। लोकसभा चुनाव में राजधानी की सात सीटों पर नोटा के तहत पड़े कुल 45,554 मतों में से सबसे अधिक 8,984 मत उत्तर-पश्चिम दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में पड़े। इस निर्वाचन क्षेत्र में भाजपा के योगेंद्र चंदोलिया ने कांग्रेस के उदित राज को 2,90,849 मतों के अंतर से हराया। इस चुनाव में हालांकि दिल्ली के निर्वाचन क्षेत्रों में नोटा मतों की कुल संख्या में मामूली गिरावट देखी गई, जो 2019 में 45,629 से घटकर इस बार 45,554 रह गई। सबसे कम नोटा वोट नई दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में डाले गए, जहां भाजपा की बांसुरी स्वराज का मुकाबला आम आदमी पार्टी (आप) के सोमनाथ भारती से था।

इस निर्वाचन क्षेत्र में कुल 4,813 मतदाताओं ने इस विकल्प को चुना। नोटा विकल्प मतदाताओं को चुनाव मैदान में मौजूद सभी उम्मीदवारों को खारिज करने का विकल्प देता है। उच्चतम न्यायालय के फैसले के बाद सितंबर 2013 में इसे इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) में शामिल किया गया था। चांदनी चौक निर्वाचन क्षेत्र में 5,563 मतदाताओं ने नोटा का विकल्प चुना। इस सीट से भाजपा के प्रवीण खंडेलवाल ने 89,325 मतों के अंतर से जीत हासिल की। पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त ओ पी रावत ने हाल ही में नोटा को प्रतीकात्मक प्रभाव वाला बताया था और कहा था कि अगर किसी सीट पर इसे 50 प्रतिशत से अधिक वोट मिलते हैं, तभी चुनाव परिणामों पर इसे कानूनी रूप से प्रभावी बनाने पर विचार किया जा सकता है। रावत ने कहा था कि अगर 100 में से 99 वोट नोटा विकल्प के पक्ष में जाते हैं और किसी को एक वोट मिलता है, तब भी उम्मीदवार विजई होगा। सातों सीटों में से नई दिल्ली में सबसे कम 8.45 लाख मतदाताओं ने वोट दिया। यहां जमानत बचाने के लिए नियम के तहत 1,40,891 लाख वोट प्रत्याशी को चाहिए थे।

नई दिल्ली लोकसभा सीट पर 17 प्रत्याशियों के बीच मुकाबला था। इनमें से बांसुरी स्वराज और सोमनाथ भारती को 1.4 लाख से अधिक वोट मिले। बचे 15 उम्मीदवारों की जमानत राशि जब्त हो गई। सबसे अधिक मतदान पाने वाली उत्तर पूर्वी दिल्ली सीट पर भी 24,63,159 मतदाताओं में से 15,49,80 ने मतदान किया था। ऐसे में इस सीट पर प्रत्याशियों को जमानत बचाने के लिए 2,58,180 वोट चाहिए थे। उत्तर-पूर्वी दिल्ली सीट पर 28 प्रत्याशी मैदान में थे, जिसमें से मनोज तिवारी और कन्हैया कुमार के अलावा 26 मतदाताओं की जमानत राशि जब्त हो गई। बची पांच सीटों में भी केवल भाजपा और गठबंधन के प्रत्याशियों को छोड़कर सभी को जनता ने नकार दिया।

■ **सबसे कम नोटा वोट नई दिल्ली क्षेत्र में डाले गए**

उत्तर-पूर्वी दिल्ली सीट पर 5,873 मतदाताओं ने चुना नोटा

उत्तर-पूर्वी दिल्ली में दो पूर्वांचली नेताओं-भाजपा के मनोज तिवारी और कांग्रेस के कन्हैया कुमार के बीच सीधा मुकाबला था। इस सीट पर 5,873 मतदाताओं ने नोटा का विकल्प चुना। पूर्वी दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में यह आंकड़ा लगभग करीब था, जहां 5,394 मतदाताओं ने नोटा का विकल्प चुना, जबकि दक्षिणी दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में 5,961 मतदाताओं ने ऐसा ही किया। नोटा के लिए दूसरा सबसे बड़ा वोट पश्चिमी दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में पड़ा, जहां 8,699 वोट पड़े। यहां आप के महाबल मिश्रा का मुकाबला भाजपा की कमलजीत सेहरावत से था।

उपराज्यपाल ने आस्थाकुंज में डीडीए के साथ मनाया विश्व पर्यावरण दिवस

नई दिल्ली, 5 जून (देशबन्धु)। दिल्ली के उपराज्यपाल (एलजी) विनय कुमार सक्सेना ने बुधवार को नेहरू प्लेस स्थित डीडीए के पार्क आस्थाकुंज में पौधारोपण अभियान का नेतृत्व कर विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। इस दौरान 100 से अधिक देशी किस्म के पौधे लगाए गए। इस पार्क की पारिस्थितिकी को बढ़ाने के लिए नीली गुलमोहर, गुलमोहर, कचनार, अर्जुन, मौलश्री और जामुन लगाए गए। बता दें कि आस्थाकुंज नेहरू प्लेस डिस्ट्रिक्ट सेंटर से सटे 200 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है। पार्क बहाई मंदिर, कालकाजी मंदिर और इस्कॉन मंदिर जैसे पूजा केंद्रों से घिरा हुआ है। यह नेहरू प्लेस के आध्यात्मिक और व्यावसायिक केंद्र के ठीक बगल में राजधानी के हरित क्षेत्र में इजाफा करता है। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर डीडीए ने स्थानीय आरडब्ल्यूए, पार्क आगंतुकों और स्कूली बच्चों के साथ मिलकर दिल्ली भर में अपने कई अन्य हरित क्षेत्रों में एक विशाल वृक्षारोपण अभियान भी चलाया, जहां आज लगभग 3000 पौधे लगाए गए। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि डीडीए राजधानी में 16035 एकड़ का हरित क्षेत्र बनाए रखता है, जिसमें विभिन्न आकारों के 733 पार्क शामिल हैं। अधिकारी ने बताया कि यमुना डूब क्षेत्र के जीर्णोद्धार और कायाकल्प के लिए डीडीए द्वारा 11 परियोजनाएं शुरू की जा रही हैं।

■ **चालू वित्त वर्ष के लिए 9.10 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य**

राजधानी में बारिश से लोगों को मिली गर्मी से राहत

नई दिल्ली, 5 जून (देशबन्धु)। राजधानी में चिलचिलाती गर्मी और लू से बुधवार को लोगों को गर्मी से राहत मिली। गुरुवार को भी हल्की बारिश होने से गर्मी से फौरी राहत मिलने का अनुमान है। इस दौरान आसमान में हल्के बादल छाए रहेंगे। इससे तापमान में कमी आएगी। मौसम विभाग ने बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। बुधवार को दिल्ली का अधिकतम तापमान सामान्य से चार डिग्री अधिक रहा। वहीं, सब केंद्रों में नजफगढ़ इलाके का तापमान 46 डिग्री सेल्सियस से अधिक रहा। बुधवार को लोग लू से बेहाल रहे। सुबह से ही कड़ी और उमस भरी गर्मी रही। लेकिन, सुबह के समय बादल और सूरज के बीच लुका-छिपी का खेल चलता रहा। कुछ इलाकों धूल भरी आंधी के साथ तेज हवाएं चली। प्रादेशिक मौसम विज्ञान केंद्र के मुताबिक, दिल्ली का अधिकतम तापमान सामान्य से चार डिग्री अधिक के साथ 44 दर्ज किया। वहीं, न्यूनतम तापमान तीन डिग्री सेल्सियस अधिक के साथ 31 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं, अधिकतम आर्द्रता का स्तर 52 फीसदी रही। मौसम विभाग ने गुरुवार के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। इस दौरान आसमान में हल्के बादल छाए रहेंगे। हल्की, शाम के समय धूल भरी आंधी चल सकती है। इसके साथ ही तेज सतही हवाएं 30 से 40 किलोमीटर प्रतिघंटे की गति से चलने का अनुमान है। शाम व रात के समय हल्की बूंदा-बांदी होने के आसार हैं। इससे अधिकतम तापमान 42 डिग्री सेल्सियस होने की आशंका है। जबकि न्यूनतम तापमान भी 30 डिग्री सेल्सियस तक जाने की संभावना है। मौसम विभाग के मुताबिक नजफगढ़ इलाका सर्वाधिक गर्म रहा। यहां अधिकतम 46.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया। वहीं, नरेला में 46.3, पूसा में 46.1, जाफरपुर में 45.3, आया नगर में 45 डिग्री सेल्सियस अधिकतम तापमान दर्ज किया। वहीं, मंगलवार को हुई हल्की बारिश सबसे अधिक मयूर विहार में 3 एमएम दर्ज की गई। जबकि, रिज और आया नगर में बारिश ट्रेस की गई है। राजधानी में आबोहवा खराब श्रेणी में बरकरार है। बुधवार को वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 248 रहा, जोकि खराब श्रेणी में है।

केंद्रीय विश्वविद्यालयों में डीयू रहा अव्वल

नई दिल्ली, 5 जून (देशबन्धु)। क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2025 में डीयू भारत के केंद्रीय विश्वविद्यालयों में अव्वल रहा है। इसके साथ ही देश भर के अन्य संस्थानों की सूची में पिछले वर्ष के नौवें स्थान के मुकाबले डीयू इस बार सातवें स्थान पर पहुंचा है। डीयू कुलपति प्रो. योगेश सिंह के मुताबिक, भारत के दस शीर्ष संस्थानों में डीयू ने सर्वाधिक 79 रैंक का सुधार किया है। इस उपलब्धि का श्रेय कुलपति ने पूरे दिल्ली विश्वविद्यालय परिवार को दिया है। कुलपति ने कहा कि विवि के संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों के शैक्षणिक वातावरण व राष्ट्र निर्माण में अहम योगदान के कारण डीयू निरंतर आगे बढ़ता जा रहा है। कुलपति ने बताया कि डीयू ने क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2025 में वैश्विक स्तर पर 328 वां स्थान प्राप्त किया है जबकि बीते साल रैंकिंग में स्थान 407 वां था। क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में इस बार दिल्ली विश्वविद्यालय ने शीर्ष 22 फीसदी में अपना स्थान बनाया है। कुलपति ने बताया कि वैश्विक स्तर पर नौ संकेतकों में से चार संकेतकों में दिल्ली विश्वविद्यालय को 270 संस्थानों में शामिल किया गया है। इनमें इम्प्लॉयमेंट आउटकम्स में 44वां, सस्टेनेबिलिटी में 220 वां, अकादमिक प्रतिष्ठा में 225 वां और एम्प्लॉयर प्रतिष्ठा में 269 वां स्थान मिला है। प्रो. योगेश सिंह ने बताया कि दिल्ली विश्वविद्यालय ने इस बार नौ प्रदर्शन संकेतकों में से पिछले साल के मुकाबले में पांच में सुधार किया है। क्यूएस वर्ल्ड रैंकिंग 2025 जारी हो चुकी है। भारतीयों के लिए यह गर्व की बात है कि इस लिस्ट में भारतीय विश्वविद्यालयों ने भी जगह बनाई है। रैंकिंग सूची के अनुसार दुनियाभर की टॉप-150 यूनिवर्सिटीज में भारत से आईआईटी बॉम्बे और आईआईटी दिल्ली शामिल है। आईआईटी बॉम्बे ने पिछले साल से बेहतर प्रदर्शन करते हुए 118वां स्थान हासिल किया है। इसी तरह आईआईटी दिल्ली भी इस साल 150वें स्थान पर पहुंच गया है। आईआईएससी ने 211वां स्थान हासिल किया है। आईआईटी खड़गपुर 222वें स्थान पर है।

■ **दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति ने दी बधाई**

यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण
प्रथम तल, कॉमशियल कॉम्पलेक्स, पी-2, सैक्टर-ओमेगा-1, ग्रेटर नोएडा, जनपद गौतमबुद्ध नगर-201308 (उ0प्र0)
सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम इमलियाका में उप जिलाधिकारी सदर से प्राप्त परिवार सदस्यता प्रमाण पत्र संख्या 300/एस0टी0-एस0डी0एम0/2024, दिनांक 09.04.2024 जग्गी पुत्र प्रभु व स्व0 श्रीमती हरवती पत्नी श्री जग्गी नि0 ग्राम इमलियाका परगना दनकौर तहसील व जिला गौतमबुद्धनगर की मृत्यु दिनांक 06.12.2022 व 02.05.2023 को हो चुकी है मृतक के स्थान पर उनके वारिसानों के नाम निम्न प्रकार दर्ज किया जाना प्रस्तावित है।

ग्राम का नाम	खसरा संख्या	मृतक काश्तकार का नाम	मृतक के परिवारिक सदस्यों के नाम	मृतक से संबंध	आयु लगभग	विशेष
जगनपुर अफजलपुर	116, 117, 144, 145/2 148/2, 237/2 238/2, 232/1	जग्गी पुत्र प्रभु व स्व0 श्रीमती हरवती पत्नी श्री जग्गी नि0 ग्राम इमलियाका परगना दनकौर तहसील व जिला गौतमबुद्धनगर	श्री रोहताश सिंह	पुत्र	64 वर्ष	
			श्री सुभाष चन्द्र नागर	पुत्र	63 वर्ष	
			श्री रमेश	पुत्र	61 वर्ष	
			श्री सत्यपाल सिंह	पुत्र	49 वर्ष	
			श्री महेश चन्द	पुत्र	48 वर्ष	
			श्रीमती राजबाला	पुत्री	56 वर्ष	विवाहित
			श्रीमती रामेश्वरी	पुत्री	53 वर्ष	विवाहित

उपरोक्त वारिसानों के संबंध में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अन्दर अपनी आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज कराने का कष्ट करें, अन्यथा नियमानुसार प्राधिकरण अभिलेखों में मृतक के स्थान पर इनके वारिसानों का नाम 07 प्रतिशत आबादी भूखण्ड एवं 64.7 प्रतिशत अतिरिक्त प्रतिकर संबंधी अभिलेखों में दर्ज करा दिया जायेगा।

तहसीलदार
यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण
प्रथम तल, कॉमशियल कॉम्पलेक्स, पी-2, सैक्टर-ओमेगा-1, ग्रेटर नोएडा, जनपद गौतमबुद्ध नगर-201308 (उ0प्र0)
सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि उप जिलाधिकारी सदर से प्राप्त परिवार सदस्यता प्रमाण पत्र 220/एस.टी.-एस.डी.एम/2024 दिनांक 30.03.2024 के अनुसार मृतक स्व0 श्रीमती चिरोजी पत्नी स्व0 सोहन सिह व श्री सोहन सिंह पुत्र श्री छिद्दा नि0 ग्राम मिर्जापुर, परगना दनकौर तहसील व जिला गौतमबुद्धनगर की मृत्यु दिनांक 15.08.2023 को हो चुकी है जिसके अनुसार निम्न प्रकार मृतक के स्थान पर उनके वारिसानों के नाम दर्ज किये जाने प्रस्तावित है।

ग्राम का नाम	खाता संख्या	खसरा संख्या	मृतक काश्तकार का नाम	मृतक के परिवारिक सदस्यों के नाम	आयु लगभग	मृतक से संबंध	विवाहित/अविवाहित
रामपुर बांगर	184	83	श्री सोहन सिंह पुत्र स्व0 श्री छिद्दा नि0 ग्राम मिर्जापुर, परगना दनकौर तहसील व जिला गौतमबुद्धनगर	श्री सुभाष चन्द भाटी	58 वर्ष	पुत्र	विवाहित
				श्री हरीश चन्द सिंह	53 वर्ष	पुत्र	विवाहित
				श्री सुरेश चन्द	49 वर्ष	पुत्र	विवाहित
				श्रीमती राजकुमारी	54 वर्ष	पुत्री	विवाहित

उपरोक्त वारिसानों के संबंध में यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अंदर अपनी आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज कराने का कष्ट करें, अन्यथा नियमानुसार प्राधिकरण अभिलेखों में मृतक के स्थान पर इनके वारिसानों का नाम 07 प्रतिशत आबादी भूखण्ड व 64.7 प्रतिशत अतिरिक्त प्रतिकर संबंधी अभिलेखों में दर्ज करा दिया जायेगा।

तहसीलदार
यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण
प्रथम तल, कॉमशियल कॉम्पलेक्स, पी-2, सैक्टर-ओमेगा-1, ग्रेटर नोएडा, जनपद गौतमबुद्ध नगर-201308 (उ0प्र0)
सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि प्राधिकरण की 54वीं बोर्ड बैठक दिनांक 14.12.2015 में लिये गये निर्णय के कम में ग्राम दनकौर में उप जिलाधिकारी सदर से प्राप्त वारिसान प्रमाण पत्र संख्या 1146/एस0टी0-एस0डी0एम0/2023, दिनांक 07.12.2023 के अनुसार निम्न प्रकार मृतक के स्थान पर उनके वारिसानों के नाम दर्ज किये जाने प्रस्तावित है।

कम संख्या	ग्राम का नाम	खसरा संख्या	मृतक काश्तकार का नाम व पता	वारिसानों का नाम	मृतक से संबंध	आयु लगभग	विशेष
1	2	3	4	5	6	7	8
1	दनकौर	482 417म	श्रीमती समंत्रा पत्नी स्व0 श्री वंशी नि0 ग्राम डेरीन गुजरान, मजरा दनकौर तहसील व जिला गौतमबुद्धनगर	श्री देवदत्त	पुत्र	48 वर्ष	विवाहित
				श्री नेत्रपाल सिंह	पुत्र	39 वर्ष	विवाहित
				श्री देवराज सिंह	पुत्र	38 वर्ष	विवाहित
				श्री भागमल	पुत्र	33 वर्ष	विवाहित

उपरोक्त वारिसानों के संबंध में यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अन्दर अपनी आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज कराने का कष्ट करें, अन्यथा नियमानुसार प्राधिकरण अभिलेखों में मृतक के स्थान पर इनके वारिसानों का नाम 07 प्रतिशत आबादी भूखण्ड एवं 64.7 प्रतिशत अतिरिक्त प्रतिकर संबंधी अभिलेखों में दर्ज करा दिया जायेगा।

तहसीलदार

आज़ादी का अमृत महोत्सव
उत्तर रेलवे

'एक स्टेशन एक उत्पाद'
योजना के तहत स्टॉल स्थापित करने हेतु आवेदन आमंत्रित किये जा रहे हैं।

क) **स्टॉल:** गुड़गांव, पानीपत, दिल्ली कैंट, करनाल, पटौदी रोड, मेरठ सिटी और मेरठ कैंट स्टेशनों पर।
ख) **ट्राली :** आनंद विहार टर्मिनल, पालम, दिल्ली सफदरजंग, शिवाजी ब्रिज, तिलक ब्रिज, मुरादनगर, परतापुर, देवबंद, खतौली, फरीदाबाद, फरीदाबाद न्यू टाउन, बागपत रोड, बल्लभगढ़ बड़ौत खेकड़ा, नोली, तुगलकाबाद, शकूरबस्ती, नरेला, नांगलोई, दिल्ली सराय रोहिल्ला, दिल्ली किशन गंज, सांपला, सकौती टांडा और मोदीनगर स्टेशनों पर।

- गुड़गांव, मुजफ्फरनगर और मेरठ कैंट स्टेशनों पर स्टॉल स्थापित करने की अवधि प्रति चरण में 90 दिन होगी।
- उपरोक्त (ख) समूह के अंतर्गत दिए गए स्टेशनों पर ट्राली स्थापित करने की अवधि 30 दिन होगी।
- NSG 1,2 और 3 स्टेशनों पर रजिस्ट्रेशन शुल्क 2000 रु. की दर से प्रत्येक तीस दिनों की अवधि के लिए हर बार अलग से लिया जाएगा और NSG 4 (पानीपत, करनाल, पटौदी रोड, पालम, बल्लभगढ़, बड़ौत, फरीदाबाद न्यू टाउन, नोली, तुगलकाबाद, शकूरबस्ती, नांगलोई, नरेला और मोदीनगर), NSG 5 (बागपत रोड, खेकड़ा, दिल्ली किशनगंज, सांपला, मेरठ कैंट, खतौली, शिवाली ब्रिज, तिलक ब्रिज, मुरादनगर, देवबंद और दिल्ली सफदरजंग)) & NSG 6 (परतापुर और सकौती टांडा) स्टेशनों के लिए रजिस्ट्रेशन शुल्क 1000 रु. की दर से प्रत्येक तीस दिनों की अवधि के लिए हर बार अलग से लिया जाएगा।
- प्रतिभागी के लिए पात्रता मानदंड निम्नलिखित है:-

क) विकास आयुक्त हस्तशिल्प, विकास आयुक्त हथकरघा, या अपेक्षित राज्य/केंद्र सरकार प्राधिकरण द्वारा जारी कारीगरों/बुनकर आईडी कार्ड धारक।
ख) भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ लिमिटेड (ट्राइफेड)/राष्ट्रीय हथकरघा विकास निगम (एनएचडीसी)/खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी)/गैर सरकारी संगठन और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय के उद्यम पोर्टल पर सूक्ष्म उद्यमों के साथ पंजीकृत और सामाजिक संगठनों, राज्य सरकार के साथ निकायों आदि के साथ नामांकित/पंजीकृत व्यक्तिगत कारीगर/बुनकर/शिल्पकार।
ग) पीएमईजीपी (प्रधान मंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम) के साथ पंजीकृत स्वयं सहायता समूह।
घ) समाज के हाशिए पर या कमजोर वर्ग।
ड़.) किसी भी अलग प्रतीक चिन्ह की अनुमति प्रदान नही की जाएगी।

- आवेदक को स्टेशन अधीक्षक को एक वचन पत्र प्रस्तुत करना होगा जिसमें यह संकेत दिया जाएगा कि ट्रेन संचालन, यात्री सुरक्षा और रेलवे की छवि पर प्रतिकूल प्रभाव डालने के लिए कोई गतिविधि नहीं की जाएगी।
- आवेदक द्वारा का आवेदन इस अधिसूचना के जारी होने के बाद 12.06.2024, 15:00 बजे तक स्टेशन अधीक्षक को संबोधित व जमा किया जा सकता है व उसी दिन खोला जाएगा।
- सभी अनुमोदित प्रतिभागियों का प्राथमिकता रोस्टर बनाने के लिए एसएस और स्टेशन प्रबंधक/अनुभागीय सीएमआई और नामांकित वित्त प्रतिनिधि द्वारा सभी अनुमोदित आवेदकों की उपस्थिति में स्टेशन पर आयोजित ड्रा के माध्यम से प्राथमिकता निर्धारित की जाएगी।
- एक स्टेशन एक उत्पाद' योजना रेलवे बोर्ड वाणिज्यिक परिपत्र संख्या: 12/2022 एवं 09/2023 के तहत/अधीन मान्य होगी, उपरोक्त परिपत्र वेबसाइट www.indianrailways.gov.in & URL: https://indianrailways.gov.in/railwayboard/uploads/directorate/traffic_comm/Comm_Cir_2022/OSOP%20Policy.pdf और https://indianrailways.gov.in/railwayboard/uploads/directorate/traffic_comm/Comm_Cir_2023/CC%20%2009%20of%202023. पर उपलब्ध है।
- इस से सम्बंधित किसी भी जानकारी के लिए आवेदक संबंधित स्टेशनों के स्टेशन अधीक्षक या सीएमआई से संपर्क कर सकता है। 1683/2024

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

कैपिटल ज़ोन

उवाच

सोरखा गांव जाहिदाबाद के खसरा संख्या-819 की अधिसूचित/अर्जित एवं कब्जा प्राप्त भूमि है। इस भूमि पर विकास यादव, चिन्नू यादव, अमित, सचिन, महेश, सुरेश, रिंकू, सचिन, चेतन यादव, सोनू पहलवान, मिंदर यादव, रोहित, निशू यादव, अनिल यादव और रामू ने जबरन अवैध अतिक्रमण कर रखा है। भूमि पर 31 मई 2024 को मौके पर भूलेख विभाग के उच्चाधिकारी एवं संबंधित लेखपाल तथा वर्क सर्किल-6 द्वारा अवैध निर्माण को रुकवाया गया : **निखिल मित्तल, अवर अभियंता**

विश्व पर्यावरण दिवस पर महापौर एवं नगर आयुक्त ने लगाए फलदार पौधे

■ एक लाख पौधे लगाएगा नगर निगम

गाजियाबाद, 5 जून (देशबन्धु)। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में बुधवार को गाजियाबाद नगर निगम के उद्यान विभाग ने शहर में वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया। जिसके अंतर्गत महापौर सुनीता दयाल एवं नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक ने पटेल नगर स्थित गीता संजय पार्क में 150 फलदार पौधे लगाकर वृक्षारोपण किया गया। ऐसे ही उपस्थित सभी लोगो ने भी एक-एक पौधा लगाया। इस दौरान महापौर सुनीता दयाल ने बताया कि जिस प्रकार शहर में प्रदूषण बढ़ता जा रहा है और गर्मी का तापमान भी बढ़ रहा है ऐसे में शहर में सघन वृक्षारोपण किया जाना बहुत जरूरी है । अगर वृक्षारोपण नही किया गया तो प्रदूषण के साथ साथ तापमान भी बढ़ने की संभावना है हालांकि नगर निगम हर वर्ष मियावाकी के माध्यम से वृद्ध वृक्षारोपण कर रहा है लेकिन शहर में अभी और वृक्ष लगाने

मियावाकी पद्धति से होगा वृक्षारोपण शुरू : नगर आयुक्त

की जरूरत है। हमारे द्वारा लगाए जाने वाले पौधे भविष्य में शहर के फेफड़ों के कार्य करेंगें।नगर आयुक्त ने बताया कि शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए अधिक से अधिक पौधा रोपण अनिवार्य है नगर निगम द्वारा एक लाख से अधिक पौधारोपण किया जाएगा। कई सामाजिक संस्थाएं भी वायु गुणवत्ता सुधार में सहयोग हेतु कार्य कर रहे हैं तथा अधिक से अधिक पौधा रोपण किया जा रहा है। उद्यान प्रभारी डॉ अनुज सिंह ने बताया

महापौर सुनीता दयाल ने की सम्पत्ति विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक

गाजियाबाद। देश मे लोकसभा चुनाव के नतीजे की घोषणा होने के बाद महापौर सुनीता दयाल नगर निगम की भूमि पर कब्जाधारियों के खिलाफ एक्शन में आ गई हैं। बुधवार को नगर निगम कार्यालय में आते ही सम्पत्ति विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की है। बैठक में उन्होंने कि निगम की जमीन पर किसी को कब्जा नहीं करने दिया जाएगा।

भूमाफियाओं की खैर नहीं, सख्ती से निपटा जाएगा : सुनीता दयाल

महापौर ने बताया कि पिछले कुछ महीनों से देश में और शहर में चुनाव होने के कारण नगर निगम द्वारा सरकारी भूमि पर कब्जा हटाना व अन्य कार्य बंद कर दिए गए थे जिसकी एवज में शहर के कई स्थानों पर जैसे-गुलधर, नंदग्राम,जटवाड़ा, सैन विहार विजय नगर आदि में भूमाफियां ने फिर से जमीनों पर कब्जे शुरू कर दिए थे जिसको लेकर अधिकारियों के साथ बैठक की है। सुनीता दयाल ने बताया कि नगर निगम की भूमि पर कब्जा करने की सूचना मिली है जिसको लेकर निर्देश दिए जा चुके है । बैठक में सम्पत्ति प्रभारी पल्लवी सिंह, सम्पत्ति अधीक्षक रामशंकर वर्मा एवं कानूनगो सुरेन्द्र कौशिक आदि उपस्थित रहे।

कि उद्यान विभाग द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण किया गया है। और सभी पौधों के लालन पालन की जिम्मेदारी स्थानीय लोगो एवं नजदीकी मंदिर के पुजारी जी को दी गई है। यह लोग इन 150 पौधों का ध्यान रखेंगे।

इस दौरान प्रदीप चौहान, माहिम गुप्ता,उद्यान निरीक्षक अजय कुमार एवं स्थानीय लोग उपस्थित रहे।

पर्यावरण दिवस पर जीडीए ने शिल्प उद्यान पार्क में किया पौधरोपण

■ जीडीए शहर में लगाएगा एक लाख पौधे, 21 हजार होंगे फलदार : सीपी त्रिपाठी

गाजियाबाद, 5 जून (देशबन्धु)। गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए)ने विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में संजयनगर स्थित शिल्प उद्यान पार्क में पौधरोपण किया। इस मौके पर एक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। जिसमें जीडीए के अपर सचिव सीपी त्रिपाठी ने कहा कि इस बार जीडीए शहर में एक लाख पौधे लगाएगा और उनका लालन-पोषण भी करेगा। उन्होंने बताया कि प्राधिकरण की योजनाओं की सेन्ट्रल वर्जों में अवांछनीय पौधे उगे हुए हैं। अवांछनीय पौधों की कटाई एवं साफ-सफाई के लिए प्रत्येक सप्ताह विषेश अभियान चलाया जाएगा। योजना में हरित पट्टी, ग्रुप हाउसिंग सोसाईटी एवं पार्कों की नियमित रूप से साफ-सफाई कराई जाएगी। प्राधिकरण द्वारा अनुरक्षित किए जा रहें पार्कों में निर्मित शैचालयों की मरम्मत एवं साफ-सफाई नियमित रूप से कराई जाएगी। जीडीए की विशेषधिकारी कनिका कौशिक ने कहा कि प्राधिकरण द्वारा अनुरक्षित किए जा रहें पार्कों में आगन्तुकों की सुविधा के लिए पीने के पानी के लिए वाटर कूलर एवं शुद्व पेय जल की व्यवस्था किए जाने, प्राधिकरण द्वारा अनुरक्षित किए जा रहें पार्कों में जगह-जगह प्लास्टिक ड्रम वाले उच्चकोटि के डस्टबिनों की स्थापना करने, उन पर जीडीए के लोगो सहित स्वच्छता से सम्बन्धित पेन्टिंग भी करने, समस्त पार्कों में जगह-जगह निर्देशिका बोर्ड लगाए जाने के निर्देश दिए गए हैं। प्रभारी मुख्य अभियन्ता, मानवेंद्र सिंह, अधिशासी अभियन्ता आलोक रंजन, लवकेश कुमार वीरेन्द्र कुमार, सहायक अभियंता बम संजय मेहरोत्रा एवं उद्यान प्रभारी शशि भारती अन्य स्टाफ की मौजूदगी में पौधरोपण किया गया।

सार संक्षेप

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार की मौत

नोएडा। सेक्टर 59 कट के पास अज्ञात वाहन ने बाइक सवार व्यक्ति को टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसकी उपचार के दौरान मौत हो गई है। इसको लेकर परिजनों ने सेक्टर 58 थाने में केस दर्ज कराया है। पुलिस को दी गई शिकायत में मूलरूप से मेरठ के रहने वाले विनीत कुमार ने बताया कि दो जून को उनका भाई शुभम कुमार रात में दस बजे नोएडा से राहुल विहार गाजियाबाद स्थित उनके घर के लिए जा रहा था। इस दौरान सेक्टर 59 के पास अज्ञात वाहन ने उनके भाई को टक्कर मार दी। हादसे में उनका भाई गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसको स्थानीय लोगों ने उपचार के जिला अस्पताल में भर्ती कराया। जहां पर डॉक्टरों ने उसको मृत घोषित कर दिया। हादसे के बाद आरोपी वाहन चालक मौके से फरार हो गया।

दो पहलवानों ने सिल्वर व कांस्य पदक जीता

नोएडा। नोएडा के सोरखा कुश्ती अखाड़े के पहलवान निशान्त यादव व रीतिक यादव ने राज्यस्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता में सिल्वर व कांस्य पदक जीतकर जिले का नाम रौशन किया। नदिंनीनगर गोंडा में 30 मई से 2 जून तक आयोजित हुई राज्य स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता में सोरखा कुश्ती अखाड़े के पहलवान निशान्त यादव ने 82 भार वर्ग में सिल्वर पदक व रीतिक यादव ने 87 भार वर्ग में कास्य पदक जीता। दोनों ही पहलवान सोरखा कुश्ती अखाड़े पर अखाड़ा संचालक, एनआईएस कौच इन्द्रजित पहलवान की देखरेख में अभ्यास करते हैं।

महिला ने ससुरालियों पर लगाया दहेज उत्पीड़न का आरोप

नोएडा। सेक्टर 128 में रहने वाली एक महिला ने अपने पति और ससुरालियों पर दहेज उत्पीड़न और मारपीट करने का आरोप लगाया है। इसको लेकर पीड़िता महिला की मां ने ससुरालियों के खिलाफ सेक्टर 126 थाने में केस दर्ज कराया है। पुलिस को दी गई शिकायत में बिलकिस निवासी शालीमार गार्डन गाजियाबाद ने बताया कि उन्होंने अपनी बेटी की शादी नवंबर 2022 में शाहपुर सेक्टर 128 के रहने वाले सुहैल के साथ किया था। उन्होंने अपनी हैसियत के हिसाब से बेटी के ससुराल वालों को दहेज भी दिया। पीड़िता महिला ने बताया कि शादी के बाद से आरोपी ससुराल वाले उनकी बेटी को दहेज के लिए प्रताड़ित करने लगे।

छात्र ने किया आठवीं मंजिल से कूदकर आत्महत्या

नोएडा। थाना सेक्टर 58 क्षेत्र स्थित पंचाचूली अपार्टमेंट में बीएससी के एक छात्र ने 8वीं मंजिल की छत कूदकर आत्महत्या कर ली। घटना मंगलवार देर रात की है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस को मौके से सुसाइड नोट नहीं मिला है और न ही आत्महत्या का कारण पता चल पाया है।

मोबाइल टावरों के उपकरण चोरी करने वाले गिरफ्तार

■ 50 हजार रुपए का था इनाम घोषित

गाजियाबाद, 5 जून (देशबन्धु)। क्राइम ब्रान्च पुलिस ने बुधवार को मोबाइल टावरों के उपकरण चोरी करने वाले गिरोह के एक सदस्यों को गिरफ्तार किया है। बदमाश की गिरफ्तारी पर 50हजार रुपए का इनाम घोषित था। उसके कब्जे से चोरी का करीब 25 लाख रूपए का माल व चोरी करने मे प्रयुक्त कार बरामद की है। यह गिरोह गाजियाबाद, दिल्ली एनसीआर क्षेत्र, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, बिहार, महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश में सक्रिय है। जो जियो व एअरटेल के मोबाइल टावरों से बैट्री, आरआर यूनिट व अन्य इलैक्ट्रानिक डिवाईस चोरी करता था। उसे नन्दग्राम

इलाके से पकड़ा गया है।

एडीसीपी सच्चिदाननद ने बताया कि गिरफ्तार बदमाश दिल्ली के तुगलकाबाद निवासी मेराजुद्दीन है। इससे पहले भी इसी गिरोह के शातिर अपराधियो को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से करीब 04 करोड़ रूपए का मोबाइल टावरों से चोरी का माल, चोरी करने मे प्रयुक्त उपकरण व चोरी मे प्रयुक्त वाहनो को बरामद किए गए थे।

आरोपी ने बताया कि पिछले कुछ वर्षों से मोबाइल टावरों की बैट्री, रेडियो रिसीवर यूनिट व अन्य इलैक्ट्रोनिक डिवाईस की चोर बजारी में काफी मांग चल रही है मोबाइल टावरों पर लगे उपकरण काफी महंगे होते है और इनको चुराना काफी आसान होता है और इसकों ट्रांन्सपोर्ट करने में कोई समझ भी नही पाता हैं। पहले हम लोग अलग-अलग मोबाइल टावरो से आरआरयू व अन्य उपकरण चोरी करने व बेचने का काम करते थे। फिर हमनें मिलकर अपना एक संगठित गिरोह बना लिया। इसके खिलाफ राजस्थान में आपराधिक मामला दर्ज है।

दो बदमाश पुलिस मुठभेड़ में घायल, गिरफ्तार

गाजियाबाद। थाना लोनी पुलिस ने बुधवार को मुठभेड़ के दो गौकशी के वांछित आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इस दौरान पुलिस द्वारा चलाई गई गोली से दोनों बदमाश घायल हो गए। उन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। दोनों के कब्जे कब्जे से दो तमंचे व चोरी की मोटरसाइकिल बरामद की गई है। एसीपी सूर्यबली मौर्य ने बताया कि लोनी पुलिस अंडरपास के पास वाहनों की चेकिंग कर रहे थे इस दौरान दो युवक एक मोटरसाइकिल पर आते हुए दिखाई दिखाई दिए जिन्हें पुलिस ने रुकने का इशारा किया तो यह लोग रुके नहीं बल्कि मोटरसाइकिल पीछे मुड़कर भागने लगे। सड़क किनारे खेत में मोटरसाइकिल उतरी तो उनकी मोटरसाइकिल फिसल कर गिर गई। पुलिस पार्टी ने इनका पीछा किया तो इन्होंने पुलिस पार्टी पर फायरिंग कर दी। पुलिस ने भी अपने आत्म रक्षार्थ फायर किया गया जिसमें दोनों बदमाश घायल हो गए। घायल बदमाश ने मौके पर ही संक्षिप्त पूछताछ में अपना नाम शकील निवासी सब बबलू गार्डन निठौरा रोड निकट हानिका मस्जिद लोनी तथा दूसरे ने अपना नाम आस मोहम्मद उर्फ छोटा पुत्र निवासी वेस्ट सिटी निठौरा रोड लोनी बताया।

नोएडा में 3379 फ्लैट बायर्स को मिलेगा मालिकाना हक

■ 122 फ्लैट व 60 हजार वर्ग मीटर में बने कमर्शियल प्रॉपर्टी को करेगा नीलाम, वसूलेगा 2409.77 करोड़

नोएडा, 5 जून (देशबन्धु)। नोएडा में 3379 फ्लैट बायर्स की रजिस्ट्री का रास्ता अब साफ हो गया है। प्राधिकरण अपना बकाया वसूलने के लिए दो परियोजनाओं के अनसोल्ड प्रॉपर्टी को नीलाम करेगा। इसमें डेवलपर की सेक्टर-46 जीएच-1 परियोजना में 122 फ्लैट्स की नीलामी की जाएगी। सेक्टर-75 जीएच इको सिटी में वाणिज्यिक भूखंड की लीज निरस्त कर वहां संपत्ति को अटैच कर नीलामी होगी। दोनों परियोजनाओं पर 2409.77 करोड़ बकाया है।

दरअसल प्रदेश सरकार ने बायर्स की रजिस्ट्री के लिए अमिताभ कांत की सिफारिश लागू की थी। इसके तहत बिल्डर कुल बकाया का 25 प्रतिशत राशि जमा कर रिलीफ ले सकता था। एम्स मैक्स गार्डेनिया (कंसोर्टियम) और गार्डेनिया एम्स डेवलपर बिल्डर (कंसोर्टियम) ने सिफारिश पर अपनी सहमति दी। लेकिन लाभ नहीं लिया और न ही 25 प्रतिशत धनराशि जमा की। ऐसे में प्राधिकरण ने दोनों परियोजनाओं के डेवलपर पर बड़ा एक्शन लिया। हालांकि ये दोनों परियोजनाओं की ओरिजन कंपनी और प्रोपराइटर एक ही है। जिसमें चार डायरेक्टर है।

प्राधिकरण ने बताया कि सेक्टर-75 इको सिटी के लिए 6 लाख वर्ग मीटर जमीन एम्स मैक्स गार्डेनिया डेवलपर प्राइवेट लिमिटेड और सेक्टर-46 में ग्रुप हाउसिंग 01 में 51 हजार 700 वर्गमीटर जमीन गार्डेनिया एम्स डेवलपर्स प्राइवेट लिमिटेड को आवंटित की। दोनों का आवंटन साल 2009- 2010 में किया गया। खास बात ये है दोनों के प्रोपराइटर एक ही है। इन दोनों पर 31 दिसंबर 2023 तक क्रमश: 1717.29 करोड़ और दूसरी पर 692.48 करोड़ रुपए बकाया है।

अब दोनों परियोजनाओं के बारे में अलग-अलग समझे

इको सिटी सेक्टर-75 में एम्स मैक्स गार्डेनिया प्रालि को 6 लाख वर्गमीटर जमीन आवंटित की गई। इस जमीन का 50 प्रतिशत ग्रुप हाउसिंग , 5 प्रतिशत संस्थागत और 20 प्रतिशत वाणिज्यिक उपयोग के लिए था। यहां ग्रुप हाउसिंग में निर्माण किया जा चुका है। साथ ही लोग रह रहे है। डेवलपर ने वाणिज्यिक प्रयोग की भूमि करीब 60 हजार वर्ग मीटर जमीन को 4 ब्लाक में बांटा और निर्माण कराया। इसमें कुछ प्रोजेक्ट निर्माणाधीन है। कंपनी को 15 हजार 462 रुपए प्रति वर्गमीटर की दर से आंवटन किया गया। जिसमें कंपनी के प्रोपराइटर ने समय समय पर सबलीज करते हुए करीब 2 लाख 20 हजार 639 वर्ग मीटर जमीन 11 कंपनियों को बेच दी। इन कंपनियों ने पूरा पैसा एक्स मैक्स गार्डेनिया को दिया लेकिन डेवलपर ने पैसा प्राधिकरण में बकाया जमा नहीं कराया। यही नहीं आवंटी ने संस्थागत का 30378 वर्ग मीटर में से 17511 वर्गमीटर सरेंडर कर दिया। जिससे प्राधिकरण को 95 करोड़ मिला। यहां के ग्रुप हाउसिंग में 2566 यूनिट है। जिसमें 773 की रजिस्ट्री हुई है। बाकि 1793 की रजिस्ट्री शेष है। इसी प्रकार सेक्टर-46 में गार्डेनिया एम्स डेवलपर को सेक्टर-46 में ग्रुप हाउसिंग बनाया। इनको बकाया के बारे में 5 जनवरी , 6 जनवरी 5 मार्च और 9 मई को बैठक में अवगत कराया। सेक्टर-46 में कुल 1586 फ्लैट है। जिसमें से एक भी फ्लैट की रजिस्ट्री नहीं कराई गई।

प्राधिकरण ने एम्स मैक्स गार्डेनिया से बकाया वसूलने के लिए बकायदा 30 मई 2018 को एक कंपनी क्यूरी एंड ब्राउन इंडिया नाम की एक फर्म हायर की। डेवलपर और फर्म के बीच उसी दिन एमओयू भी साइन कराए गए। इसके अलावा अदालत के आदेश के बाद भी डेवलपर ने बकाया जमा नहीं किया।

डेवलपर को रिलीफ का नहीं मिलेगा लाभ

प्राधिकरण ने साफ कहा कि कंपनी के प्रोपराइटर एक ही है। साथ ही इन्होंने 11 कंपनियों को सबलीज कर उनसे पैसा लिया लेकिन प्राधिकरण का बकाया नहीं देर किसी अन्य परियोजना में डायवर्ट किया। ऐसे में बायर्स और प्राधिकरण दोनों को अंधेरे में रखा गया। साथ ही बार बार ड्यूज बताने के बाद भी बकाया जमा नहीं किया गया। ऐसे में अब एम्स मैक्स गार्डेनिया और गार्डेनिया एम्स डेवलपर दोनों को अब अमिताभ कांत की सिफारिश का लाभ नहीं मिलेगा। इसका कार्यालय आदेश जारी कर दिया गया है। बायर्स के हितों के लिए प्राधिकरण सेक्टर-75 इको सिटी में डेवलपर द्वारा कुल 6 लाख वर्ग मीटर जमीन में से 60 हजार वर्ग मीटर जमीन पर कमर्शियल निर्माणाधीन अनसोल्ड ब्लॉक है। इसकी लीज डीड निरस्त कर यहां ब्लाक-ए, बी, सी एंड डी को अटैच करने का निर्णय लिया गया। इसकी नीलामी की जाएगी। बिल्डर कंसोर्टियम को किसी प्रकार का भूखंड आवंटित नहीं किया जाएगा। सेक्टर-46 ग्रुप हाउसिंग भूखंड जीएच-1 गार्डेनिया एम्स डेवलपर से बकाया वसूलने और रजिस्ट्री के लिए यहां पहले से सील 122 फ्लैटों को नीलाम किया जाएगा।

अर्जित भूमि पर अतिक्रमण करने के मामले में 15 भू माफियाओं पर केस दर्ज

■ सेक्टर-113 थाने में दर्ज कराया गया केस
■ आरोपियों का अवैध कब्जा करने को लेकर है आपराधिक इतिहास

नोएडा, 5 जून (देशबन्धु)। अधिसूचित एवं कब्जा प्राप्त भूमि पर अतिक्रमण करने के मामले में सेक्टर-113 थाने में 15 भूमाफियाओं के खिलाफ केस दर्ज हुआ है। केस नोएडा प्राधिकरण के अवर अभियंता की ओर से दर्ज कराया गया है। आरोप है कि नामजद आरोपियों ने प्राधिकरण द्वारा अधिसूचित एवं कब्जा प्राप्त भूमि पर सोरखा गांव में अतिक्रमण कर रखा है। बार-बार मना करने के बावजूद भूमाफिया मान नहीं रहे हैं। पुलिस ने अवर अभियंता की शिकायत पर केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

पुलिस को दी शिकायत में अवर अभियंता निखिल मित्तल ने बताया कि सोरखा गांव जाहिदाबाद के खसरा संख्या-819 की अधिसूचित/अर्जित एवं कब्जा प्राप्त भूमि है। इस भूमि पर विकास यादव, चिन्नू यादव, अमित, सचिन, महेश, सुरेश, रिंकू, सचिन, चेतन यादव, सोनू पहलवान, मिंदर यादव, रोहित, निशू यादव, अनिल यादव और रामू ने जबरन अवैध अतिक्रमण कर रखा है। भूमि पर 31 मई 2024 को मौके पर भूलेख विभाग के उच्चाधिकारी एवं संबंधित लेखपाल तथा वर्क सर्किल-6 द्वारा अवैध निर्माण को रुकवाया गया। आरोप है कि ये लोग रात के अंधेरे में अवैध रूप से निर्माण करा रहे हैं। इससे नोएडा का सुनियोजित विकास प्रभावित हो रहा है।

डीएलएफ मॉल ऑफ इंडिया में पौधरोपण अभियान

नोएडा, 5 जून (देशबन्धु)। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में डीएलएफ मॉल ऑफ इंडिया में पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पौधरोपण अभियान चलाया गया। पौधारोपण कार्यक्रम के दौरान पर्यावरण को स्वच्छ, हरित और खुशहाल रखने का संकल्प लेते हुए मॉल के आसपास अलग-अलग किस्मों के 1000 से अधिक पौधे लगाए गए,जिसमें पीपल, आमला, जामुन, अशोक, नीम और मोहरसरी आदि प्रजातियों के पौधे शामिल थे। अभियान के दौरान डीएलएफ मॉल ऑफ इंडिया की समर्पित टीम के साथ-साथ शंकरा स्पेशल स्कूल के छात्रों की सक्रिय भागीदारी रही। छात्रों को पर्यावरण की रक्षा और स्वस्थ जीवन शैली को अपनाने को लेकर जागरूक भी किया गया। इस दौरान लोगों ने जहां पेड़ पौधे लगाए जाने पर जोर दिया, वहीं पर्यावरण संरक्षण के लिए संकल्प भी लिया। डीएलएफ मॉल ऑफ इंडिया के सेंटर हेड शिबली खान ने कहा कि पृथ्वी को हरा-भरा बनाना है तो एक पेड़ जरूर लगाना है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर मिनी मैराथन आयोजित

नोएडा, 5 जून (देशबन्धु)। स्वच्छ नोएडा, स्वस्थ्य नोएडा के कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए नोएडा प्राधिकरण एवं कोफोरेह लिमिटेड ने सीएसआर के जरिए विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सेक्टर 21ए, स्टेडियम में मिनी मैराथन रेस का आयोजन किया। मिनी मैराथन के तहत स्वच्छता के संदेश जैसे- यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वस्थ नहीं है। बेहतर साफ सफाई से ही सेक्टरों एवं गांव को आदर्श बनाया जा सकता है। स्वच्छता को अपने आचरण में इस तरह अपनाया जाए कि वह आदत बन जाए। आदि विचारों से लोगों को जागरुक किया।

■ विजेताओं को किया पुरस्कृत, दिया स्वच्छ नोएडा, स्वस्थ्य नोएडा का संदेश
■ 500 प्रतिभागियों ने लिया हिस्सा

कार्यक्रम में 500 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इसका ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन कराया गया था। प्रतिभागियों द्वारा जुम्बा का भी आनंद लिया गया। इसके बाद नोएडा प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने मैराथन दौड़ को हरी झंडी दिखाई। जिसमें प्रथम , द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहे लोगों को पुरस्कार देकर उनको सम्मानित किया गया। इसके अलावा सफाई कर्मचारियों को सेफ्टी किट जिसमें सेफ्टी जैकेट, सेफ्टी शूज, सेफ्टी ग्लब्स, मास्क आदि का वितरण किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित फोनरवा के अध्यक्ष योगेन्द्र शर्मा न अन्य आरडब्ल्यूए सदस्यों ने भी लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरुक किया। इस दौरान नोएडा प्राधिकरण के एसपी सिंह, उप महाप्रबंधक (जन स्वास्थ्य), विजय रावल, उप महाप्रबन्धक (सिविल), गौरव बंसल परियोजना अभियंता (जन स्वा-1), आरके शर्मा, परियोजना अभियंता (जन स्वा-2) मौजूद रहे। कार्यक्रम के अगले फेज में सेक्टर 94 स्थित प्राधिकरण जन स्वास्थ्य विभाग के कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया गया। विश्व पर्यावरण दिवस पर सेक्टर-62 स्थित इंडिया कोस्ट गार्ड सिलेक्शन बोर्ड में इंडिया कोस्ट गार्ड और गाइडेड फॉर्च्यून समिति की ओर से मिनी मैराथन का आयोजन किया गया। इसमें इंस्पेक्टर जर्नल एच के शर्मा ने मैराथन दौड़ को हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ किया। मैराथन में महिला वर्ग में किरण उनियाल ने प्रथम, निती ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। बच्चों की श्रेणी में कुमार भद्रा ने प्रथम और रुद्र यादव ने दूसरा स्थान अर्जित किया। पुरुष वर्ग में अमित कुमार ने प्रथम , डिप्टी कमांडेंट रतन नेगी ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

एनसीआरटीसी की पेंटिंग्स प्रतियोगिता में बच्चों ने दिखाई सतत भविष्य की झलक

गाजियाबाद, 5 जून (देशबन्धु)। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) ने बुधवार को अपने कर्मचारियों और ऑपरेटर (डीबी आरआरटीएस इंडिया) के बच्चों के लिए 'नमो भारत-हरित भविष्य के लिए नए युग का परिवहन' थीम पर ऑन-साइट ड्राइंग प्रतियोगिता आयोजित की। यह प्रतियोगिता गाजियाबाद आरआरटीएस स्टेशन पर आयोजित की गई। प्रतियोगिता एनसीआरटीसी के निरंतर जागरूकता अभियानों के अनुरूप आयोजित की गई। जिसके तहत दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ आरआरटीएस कॉरिडोर के आसपास स्थित स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों में जागरूकता के लिए नुक्कड़-नाटक, नमो भारत ट्रेन राइड और ड्राइंग प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जा चुकी हैं।

एनसीआरटीसी के प्रवक्ता पुनीत वत्स ने बताया कि जागरूकता अभियान का उद्देश्य एनसीआर में आरआरटीएस को सार्वजनिक परिवहन के एक स्थायी साधन के रूप में बढ़ावा देना है, जिससे लोग स्वच्छ और हरित पर्यावरण की दिशा में योगदान दे सकें। प्रतियोगिता में बच्चों की उत्साहजनक भागीदारी देखी गई, क्योंकि यह इन युवा कलाकारों के लिए गर्मी की छुट्टियों के दौरान अपनी रचनात्मकता और कल्पना को व्यक्त करने का एक उत्कृष्ट अवसर था।

इस दौरान नैशनल बुक ट्रस्ट (एनबीटी) के सहयोग से एक आकर्षक कहानी सत्र का भी आयोजन किया गया। इस सत्र में, विभिन्न प्रकार के इंटरैक्टिव गेम और गतिविधियों जैसे कि जैव विविधता डार्ट गेम, ओरिगेमी वर्कशॉप, पहेलियां, प्रश्नोत्तरी और सांप और सीढ़ी के खेल आयोजित किए गए। जिनके माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के विषय में जागरूकता भी हुई। इनका उद्देश्य छात्रों को पर्यावरण के मुद्दों के बारे में संवेदनशील बनाना, संरक्षण के लिए बेहतर भविष्य के प्रति साझेदार बनाना और छात्रों को हमारे ग्रह के संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाना था।

■ आरआरटीएस की उपयोगिता को लेकर छात्रों द्वारा बनाई गई पेंटिंग्स की लगाई प्रदर्शनी

कैपिटल ज़ोन

उवाच

मानसून आते ही ग्रेटर नोएडा के अलग-अलग जगहों पर बड़े पैमाने पर पौधरोपण अभियान चलाया जाएगा। देशी और बड़े आकार वाले पौधे लगाने पर अधिक जोर रहेगा : **अन्नपूर्णा गर्ग, एसीईओ**

यूपी में भाजपा को आखिर हुआ क्या? मोदी-योगी की जोड़ी का जादू कौन से मुद्दों पर नहीं चला और मिली करारी हार

■ देवेंद्र सिंह

ग्रेटर नोएडा, 5 जून (देशबन्धु)। लोकसभा चुनाव के नतीजे सामने आ चुके हैं। इस लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश के नतीजे काफी चौंकाने वाले आए हैं। ऐसे में आइए जानते हैं कि वो कौन से बड़े कारण रहे हैं, जिनके कारण भाजपा को राज्य में हार का सामना करना पड़ा है। राम मंदिर निर्माण की सफलता पर सवार होकर चुनावी वैतरणी पार करने के अति आत्मविश्वास से भरी भाजपा को लोकसभा चुनाव में अपने सबसे मजबूत किले यानी उत्तर प्रदेश में ही अप्रत्याशित चुनाव नतीजों का सामना करना पड़ा है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के लिए राज्य के पश्चिमांचल, पूर्वांचल, बुंदेलखण्ड और अवध समेत विभिन्न क्षेत्रों में परिणाम अच्छे नहीं रहे। राजनीतिक लिहाज से देश के सबसे महत्वपूर्ण राज्य माने जाने वाले उत्तर प्रदेश में भाजपा मात्र 33 सीटें ही जीत सकी। राज्य के पश्चिमांचल, पूर्वांचल, बुंदेलखण्ड, अवध, ब्रज और रुहेलखंड में पार्टी के प्रदर्शन में गिरावट दर्ज की गई है।

नहीं काम आया पाकिस्तान का जुमला

भाजपा नेताओं ने अपने चुनाव प्रचार में यह बात घर-घर तक पहुंचाने की कोशिश की कि यह चुनाव राम भक्तों और रामद्रोहियों के बीच है। इसके अलावा यह मुद्दा भी प्रमुखता से उठाया गया कि विपक्ष का इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस (इंडिया) तालिबान शासन लाने की कोशिश कर रहा है और पाकिस्तान उसका समर्थन कर रहा है, मगर यह आरोप जनता को ज्यादा प्रभावित नहीं कर सके और राज्य के सभी क्षेत्रों में मतदाताओं ने इंडिया गठबंधन के घटकों सपा और कांग्रेस को समर्थन दिया।

2019 के मुकाबले खराब प्रदर्शन

राज्य की 80 लोकसभा सीटों में से पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 10, ब्रज क्षेत्र में आठ, अवध क्षेत्र में 20, रुहेलखंड में 11, बुंदेलखंड में पांच और पूर्वांचल में 26 सीटें हैं। इन सभी क्षेत्रों में

■ उत्तर प्रदेश में भाजपा मात्र 33 सीटें ही जीत सकी

■ राज्य के पश्चिमांचल, पूर्वांचल, बुंदेलखण्ड, अवध, ब्रज और रुहेलखंड में पार्टी के प्रदर्शन में गिरावट

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत शीर्ष नेताओं की रैलियों के बाद भी भाजपा ने 2019 के लोकसभा चुनावों की तुलना में खराब प्रदर्शन किया।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में क्या है हाल?

क्षेत्रवार नतीजों पर गौर करें तो पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सहारनपुर, कैराना, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, नगीना, अमरोहा, मेरठ, बागपत, गाजियाबाद और गौतमबुद्ध नगर समेत 10 सीटें हैं। इस क्षेत्र में भाजपा ने चार सीटें जबकि उसकी सहयोगी रालोद को 2 सीटें मिली हैं। सपा और कांग्रेस ने क्रमश: दो और एक सीट जीती है। एक सीट आजाद समाज पार्टी के खाते में गई।

गौतमबुद्ध नगर (महेश शर्मा) और गाजियाबाद (अतुल गर्ग) में भाजपा ने बड़े अंतर से जीत हासिल की लेकिन अन्य सीटों पर उसका ग्राफ नीचे आया है। साल 2019 के चुनावों में भाजपा ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में छह सीटें और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने चार सीटें जीती थीं लेकिन अन्य पार्टियां इस क्षेत्र में अपना खाता भी नहीं खोल पाई थीं।

भाजपा अवध में हारी अयोध्या

अवध क्षेत्र में सीतापुर, हरदोई, लखनऊ, उन्नाव, मोहनलालगंज, लखनऊ, अमेठी, रायबरेली, बाराबंकी, फैजाबाद, कैसरगंज, सुल्तानपुर समेत 20 सीटें हैं, जिन पर भाजपा केवल नौ सीटें जीत सकी जबकि सपा और कांग्रेस ने क्रमश: सात और चार सीटें जीतीं। भाजपा को इस क्षेत्र में सबसे बड़ा झटका लगा क्योंकि वह फैजाबाद सीट हार गई जहां राम मंदिर का निर्माण हुआ, जिसका श्रेय खुद भाजपा ने लिया था। पार्टी ने जो राम को लाए हैं, हम उनको लाएंगे का नारा भी उछाला मगर खुद अयोध्या के मतदाताओं ने ही उसे नकार दिया।

बड़े नेताओं को मिली हार

मेनका गांधी (सुल्तानपुर) और स्मृति ईरानी (अमेठी) जैसी अहम भाजपा नेताओं को चुनाव में हार का सामना करना पड़ा। वहीं, लखनऊ में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का जीत का अंतर 2019 के 3.47 लाख से घटकर लगभग 1.5 लाख वोट रह गया। वर्ष 2019 में सपा अवध क्षेत्र की सीटों पर खाता नहीं खोल सकी थी, जबकि भाजपा ने सबसे ज्यादा 18 सीटें जीती थीं। बसपा और कांग्रेस ने एक-एक सीट जीती थी।

रूहेलखंड और बुंदेलखंड में भी खस्ता हाल

रूहेलखंड क्षेत्र की 11 सीटों मुरादाबाद, रामपुर, संभल, बुलंदशहर, बदायूं, आंवला, बरेली, पीलीभीत, शाहजहांपुर, खीरी और धौरहरा में भी इस बार भाजपा की स्थिति अच्छी नहीं रही। इन सीटों पर भाजपा ने चार और सपा ने सात सीटें जीतीं। पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा को इनमें से नौ सीटों पर जीत मिली थी। खीरी से केंद्रीय मंत्री अजय मिश्रा टेनी को हार का सामना करना पड़ा। बुंदेलखंड की जालौन, झांसी, हमीरपुर, बांदा और फतेहपुर समेत पांच सीटों में से भाजपा ने इस बार सिर्फझांसी की एक सीट जीती है, जबकि सपा को सबसे ज्यादा चार सीटें मिली हैं। साल 2019 में भाजपा ने इस क्षेत्र की सभी पांचों सीटों पर जीत दर्ज की थी।

घटा पीएम मोदी की जीत का आंकड़ा

पूर्वांचल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी के साथ-साथ गोरखपुर, आजमगढ़, मिर्जापुर, जौनपुर, घोसी, सलेमपुर, गोंडा, संत कबीर नगर और भदोही समेत सबसे ज्यादा 26 सीटें हैं. इन सीटों पर भाजपा ने 10 और उसकी सहयोगी अपना दल ने एक सीट जीती, जबकि सपा और कांग्रेस ने क्रमश: 14 और एक सीट जीती। प्रधानमंत्री मोदी ने वाराणसी से भले ही लगातार तीसरी बार जीत हासिल की लेकिन उनकी जीत का अंतर साल 2019 के 4,79,505 से घटकर 1,52,513 रह गया।

भाजपा ने साल 2019 के चुनाव में 18 सीटें जीती थीं, जबकि सपा, बसपा और अपना दल को क्रमश: एक, पांच और दो सीटें मिली थीं। मथुरा, हाथरस, आगरा, फतेहपुर सीकरी, फिरोजाबाद, मैनपुरी, एटा और अलीगढ़ सहित आठ सीटों वाले ब्रज क्षेत्र में भाजपा ने पांच सीटें जीतीं, जबकि सपा को तीन सीटें मिलीं। साल 2019 में भाजपा ने इनमें से सात सीटें जीती थीं, जबकि सपा को केवल एक सीट मिली थी।

पार्टी करेगी हार की समीक्षा

2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 62 सीटें जीती थीं और उसके सहयोगी अपना दल को दो सीटें मिली थीं। वहीं, गठबंधन में शामिल सपा और बसपा को क्रमश: पांच और 10 सीटें मिली थीं। कांग्रेस के पास केवल एक सीट थी। प्रदेश के सभी क्षेत्रों में खराब प्रदर्शन के बारे में जब भाजपा नेताओं से संपर्क किया गया तो उन्होंने कहा कि शीर्ष नेतृत्व कारणों की समीक्षा करेगा। वरिष्ठ सपा नेता और पूर्व विधान परिषद सदस्य राजपाल कश्यप ने कहा कि यह उन लोगों की जीत है जो नहीं चाहते थे कि संविधान में बदलाव हो और उनका आरक्षण बरकरार रहे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर प्राधिकरण अधिकारियों ने लगाए पौधे

ग्रेटर नोएडा, 5 जून (देशबन्धु)। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के अधिकारियों की तरफ से पौधरोपण किया गया। प्राधिकरण के एसीईओ सौम्य श्रीवास्तव, एसीईओ अन्नपूर्णा गर्ग, एसीईओ श्रीलक्ष्मी वीएस, एसीईओ आशुतोष द्विवेदी और ओएसडी इंदू प्रकाश सिंह ने नॉलेज पार्क फोर स्थित पार्क में पौधरोपण किए। इन अधिकारियों ने पार्क में बरगद, सीसम, पीपल, जामुन आदि प्रजाति के पौधे लगाए। एसीईओ अन्नपूर्णा गर्ग ने बताया कि मानसून आते ही ग्रेटर नोएडा के अलग-अलग जगहों पर बड़े पैमाने पर पौधरोपण अभियान चलाया जाएगा। देशी और बड़े आकार वाले पौधे लगाने पर अधिक जोर रहेगा।

विश्व पर्यावरण दिवस पर ग्रेनो प्राधिकरण में जागरुकता कार्यक्रम आयोजित

ग्रेटर नोएडा। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण और एचसीएल फाउंडेशन के सहयोग से सेंटर फॉर डेवलपमेंट कम्युनिकेशन की तरफसे जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। जया संस्था की संस्थापक मंजू मिन्हास ने प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम में द्रोणाचार्य ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस और मंगलमय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट, मार्केट एसोसिएशन और स्वयंसेवकों ने हिस्सा लिया। छात्रों ने पर्यावरण दिवस की थीम पर हमारी धरती हमारा भविष्य विषय पर पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता आयोजित की गई। द्रोणाचार्य ग्रुप ऑफइंस्टीट्यूशंस के छात्रों ने नुक्कड़ नाटक भी प्रस्तुत किए। इस दौरान पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त बनाने की शपथ भी दिलाई गई। इस दौरान ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के वरिष्ठ प्रबंधक चेतराम सिंह व प्रबंधक प्रशांत समाधिया के साथ ही सेक्टर ओमेगा ग्रीन वन, गामा वन, बीटा टू के दुकानदार भी शामिल हुए।

महिला उन्नति संस्था ने ईकोटेक-तीन थाना में किया पौधरोपण

ग्रेटर नोएडा, 5 जून (देशबन्धु)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सामाजिक संगठन महिला उन्नति संस्था ने थाना ईकोटेक-तीन परिसर में पौधा लगाकर पर्यावरण बचाने का संदेश दिया। इस अवसर पर संस्था के संस्थापक डॉक्टर राहुल वर्मा ने कहा कि आज हम जिस माहौल में सांस ले रहे हैं वह जीवन के लिए बहुत घातक है। हमारा पर्यावरण आज इतना दूषित हो चुका है कि मनुष्य की औसत आयु 70 वर्ष रह गई है और इसका का नए-नए शहर बसाने तथा नए- नए उद्योग लगाने के लिए जंगलों और पेड़ों का अधिकांश स्तर पर काटा जाना है। पेड़ हमारे जीवन रक्षक है जो हमें शुद्ध हवा प्रदान करते हैं और प्रकृति को शुद्ध बनाने मे सहायक है उपाध्यक्ष रणवीर चौधरी ने बताया कि हर वर्ष की भांति संगठन द्वारा पर्यावरण दिवस पर प्रदेश भर मे एक हजार पौधा लगाए जाने का लक्ष्य रखा गया है। संगठन सदस्यों ने लोगों से अधिक से अधिक पौधा लगाकर पर्यावरण को शुद्ध बनाए रखने की अपील की। पौधारोपण कार्यक्रम में उपाध्यक्ष थाना ईकोटेक थर्ड प्रभारी धर्मेंद्र कुमार शुक्ल के साथ महिला पुलिसकर्मी मौजूद रहे।

सिमुलेशन ब्रॉन्कोस्कोपी वर्कशॉप आयोजित

ग्रेटर नोएडा, 5 जून (देशबन्धु)। शारदा अस्पताल और शारदा केयर- द हेल्थसिटी ने प्राइमा विस्टा-रिचर्ड वुल्फ अकादमी, जर्मनी के सहयोग से एक बेहतरीन लाइव सिमुलेशन ब्रॉन्कोस्कोपी वर्कशॉप का आयोजन किया। यह वर्कशॉप शारदा हॉस्पिटल के अंतरराष्ट्रीय ट्रेनिंग सेंटर में आयोजित की गई थी। इस कार्यक्रम के माध्यम से स्वास्थ्य सेवापेशेवरों को अपने एक्यूट केयर ब्रोंकोस्कोपी कौशल को बढ़ाने के लिए प्रभावी मंच प्रदान किया गया। इस वर्कशॉप में प्रतिभागियों को लाइव सिमुलेशन और ट्रेनिंग सेशन के माध्यम से गंभीर बीमारियों में ब्रॉन्कोस्कोपी प्रक्रियाओं

को करने का बहुत अच्छा अनुभव मिला। इससे उन्हें इंटेंसिव केयर यानी गंभीर देखभाल चिकित्सा में कुशल होने के लिए जरूरी जानकारी भी हासिल हुई।

वर्कशॉप में मुख्य अतिथि जिनमें प्रो. डॉ. तुशिरा वीरवरना,डायरेक्टर लंग सेंटर, रिचर्ड वुल्फ अकादमी, फॉर्जिहैम, जर्मनी और वोल्कर माउटे, वाईस प्रेसिडेंट, सेल्स एवं मार्केटिंग, रिचर्ड वुल्फ अकादमी, जर्मनी से इस कार्यक्रम में शामिल थे। इनके अलावा सुनील सत्य कपूर, सीईओ शारदा केयर-द हेल्थसिटी और शारदा हॉस्पिटल, डॉ. राम मूर्ति शर्मा एवं अन्य मौजूद रहे।

ईपीसीएच ने दुबई में इंडेक्स मेले में भारत के हस्तशिल्प उत्पादों को किया प्रदर्शित

ग्रेटर नोएडा, 5 जून (देशबन्धु)। इंडेक्स फेयर दुबई वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में 4 से 6 जून तक शुरू हो गया है। इस मेले में ईपीसीएच इंडिया पवेलियन का उद्घाटन के. कालीमुथु, वाणिज्य दूत, भारतीय महावाणिज्य दूतावास, दुबई ने ईपीसीएच के कार्यकारी निदेशक आर.के. वर्मा और अन्य निर्यातक सदस्यों की मौजूदगी में किया। ईपीसीएच के राजेश रावत, अतिरिक्त कार्यकारी निदेशक ईपीसीएच ने बताया कि यह मेला भारतीय निर्यातकों को मध्य-पूर्व के प्रीमियम खरीदारों के आगे अपने अनूठे हस्तशिल्प उत्पादों को प्रदर्शित करने के कई अवसर प्रदान करता है। के. कालीमुथु, वाणिज्य दूत, भारतीय महावाणिज्य दूतावास, दुबई ने भारतीय पवेलियन का उद्घाटन करते हुए भारतीय हस्तशिल्प को विश्व बाजारों में लाने और देश से हस्तशिल्प निर्यात को बढ़ावा देने के लिए ईपीसीएच के निरंतर प्रयासों की सराहना की। सीजीआई ने भारतीय प्रदर्शकों से बातचीत की और यूएई में व्यापार को बढ़ावा देने के लिए जरूरी मदद की पेशकश की। ईपीसीएच अध्यक्ष दिलीप बैद ने बताया कि परिषद नियमित तौर पर इंडेक्स फेयर, दुबई, यूएई में भाग लेती है, इससे यूएई के बाजार की विविधता के बारे में जानकारी मिलती है। इंडेक्स दुबई डिजाइन पर आधारित उत्पादों का पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका (डब्ल्यूएएनए) में सबसे बड़ा व्यापार मेला है। ईपीसीएच ने इंडेक्स फेयर में हस्तशिल्प निर्यातकों की इस भागीदारी का आयोजन वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से किया है।

आईआईए ने पर्यावरण जागरुकता के लिए किया पौधा रोपण

ग्रेटर नोएडा, 5 जून (देशबन्धु)। पर्यावरण दिवस पर साइट-सी, सूरजपुर के मध्य एक पार्क पुलिस चौकी के पीछे आईआईए व शुभकर्मण दोनों ने मिलकर धरा को हरित करने, आने वाली पीढ़ियों के लिए हरियाली, स्वांस के लिए प्राणवायु की प्रचुरता बढ़ने के उद्देश्य से एक बृहद वृक्षारोपण अभियान का

शुभ आरंभ किया। इस मौके पर निकट पुलिस चौकी से सभी पुलिस अधिकारी गण, यूपीएसआईडीए से एन.के. जैन, हरिओम अत्रि (वरिष्ठ मैनेजर, सिविल), शुभ कर्मण से प्रदीप अग्रवाल व हर्षित अग्रवाल, आईआईए से राष्ट्रीय सचिव विशारद गौतम, चौप्टर चेयरमैन राकेश बंसल, कोषाध्यक्ष विपिन माहना, सर्वेश गुप्ता, जे एस राणा, अमित शर्मा, जगदीश सिंह, विजय गोएल, जी. के. मिंडा, सुधीर अग्रवाल, दीपक कंबोज, नितिन, कपिल, अभिषेक शर्मा, भक्तु सिंह, श्रीवास्तव व आशुतोष, नवनीत भारद्वाज आदि 50 से अधिक सदस्य गणों ने 200 से अधिक पौध का रोपण किया।

ओखला पक्षी विहार में किया पौधरोपण

ग्रेटर नोएडा, 5 जून (देशबन्धु)। विश्व पर्यावरण दिवस की थीम भूमि पुनर्स्थापना, मरूस्थलीकरण और सूखा लचीलापन है, वर्तमान परिवेश में अत्यंत महत्त्वपूर्ण आवश्यकता हो गया है। इस हेतु हम वनों को नवजीवन प्रदान करके अधिकाधिक संख्या में पौधरोपण कर तथा वर्षा को संरक्षित करके अपनी प्रतिदिन की दिनचर्या में जल के अपव्य को नियंत्रित करके परिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित-सुरक्षित कर सकते हैं। बुधवार को विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में ओखला पक्षी विहार नोएडा में मुख्य अतिथि प्रमोद कुमार, प्रभागीय वनाधिकारी ने पीपल का पौधा रोपित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रमोद कुमार ने कार्यकम में उपस्थित जन सामान्य को विश्व पर्यावरण दिवस के महत्व एवं पर्यावरण संरक्षण की महत्ता तथा पर्यावरण संरक्षण से ही जल व जीवन को सुरक्षित किया जा सकता है, के संबंध में विस्तृत विचार रखे। जनमानस से अधिक से अधिक पौधरोपण करने की

■ कार्यक्रम में स्कूली बच्चों के साथ पर्यावरण प्रेमी हुए शामिल

अपील की गई। इसके अतिरिक्त प्रभागीय वनाधिकारी द्वारा इस विषय पर प्रकाश डाला गया कि पर्यावरण को सुरक्षित रखना में वृक्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने आस-पास वृक्ष अवश्य लगाए जाने चाहिए। वर्तमान में भूमि का भूगर्भ जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है तथा वर्षा का पानी व्यर्थ एवं नदियों का जल तटबंधों को छोडकर व्यर्थ बह जाता है। क्योंकि वृक्षों की जड़ें मिट्टी के कटाव को नियंत्रित करती है, जिससे भूमि एवं जल दोनों का ही संरक्षण होता है। इस अवसर पर कर्नल डॉ. रामरत्न, वन विभाग तथा स्वयं सेवी संस्था, ईवेस्ट के संस्थापक संजीव शर्मा, बिस्लरी इन्टरनेशनल के हेड गणेश, स्कूली छात्र-छात्राओं एवं अन्य लोगों ने हिस्सा लिया।

पत्र नहीं मित्र
देशबन्धु
पश्चिमी उत्तर प्रदेश ब्यूरो कार्यालय
209 कृष्णा अपरा प्लाजा अल्फा कॉमर्शियल बेल्ट, ग्रेटर नोएडा
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के लिए संम्पर्क करें
खोया-पाया/ सूचना/ नाम परिवर्तन/ आवश्यकता
फोनः- 0120-4270009

पत्र नहीं मित्र
देशबन्धु
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के संपर्क करें
क्षेत्रिय कार्यालय रबुपुरा
Mob: 9411492655

Shiv Mahima Enterprises
सभी प्रकार के विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें
नाम परिवर्तन, खोया पाया, सूचना, अवश्यकता
Mob.: 9910280173
Off.-221, 2nd Floor, Meridian View Plaza, Alpha Comm. Belt, Gr. Noida

जीबीयू ने बीईसीआईएल के साथ साइबर सुरक्षा उपायों व अन्य मुद्दों पर की चर्चा

ग्रेटर नोएडा, 5 जून (देशबन्धु)। बीईसीआईएल कार्यालय, सेक्टर-62, नोएडा में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। जिसमें गौतम बुद्ध विवि के कुलपति प्रो. आर.के. सिन्हा, डॉ. अरुण सोलंकी, डॉ. आरती गौतम डिंकर, कार्तिकेय तिवारी और बीईसीआईएल के प्रतिनिधि उपस्थित थे। बैठक में प्रमुख विषयों पर चर्चा की गई, जिसमें हाल के स्ट्रैटेजिक सैटेलाइट हैक्स और संभावित प्रतिक्रियाओं पर विचार किया गया और साइबर सुरक्षा उपायों में सुधार की आवश्यकता पर बल दिया गया। भारतीय नौसेना के साथ वर्तमान और आगामी साइबर फोरेंसिक्स परियोजनाओं पर भी चर्चा की गई।

स्पेस स्टार्टअप्स के साथ सहयोग के अवसरों का अन्वेषण किया गया और कृषि आपदा प्रबंधन में रक्षा तकनीकों के एकीकरण पर विचार किया गया। साइबर फोरेंसिक्स पर केंद्रित एक श्रृंखला की पहल का प्रस्ताव रखा गया और निर्माण और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में संभावित सहयोग पर चर्चा की गई। बैठक में साइबर फोरेंसिक लैब स्थापित करने की योजनाओं की रूपरेखा दी गई और छात्रों के प्रशिक्षण और अनुसंधान के लिए लैब के महत्व पर जोर दिया गया। इस अवसर पर कंप्यूटर फोरेंसिक्स पर केंद्रित फैकल्टी विकास कार्यक्रमों का प्रस्ताव रखा गया और व्यापक कंप्यूटर फोरेंसिक प्रशिक्षण को लागू करने की विस्तृत योजनाओं पर चर्चा की गई। कार्यवाही के बिंदुओं में

साइबर फोरेंसिक लैब की स्थापना की प्रक्रिया शुरू करने, क्षेत्रीय लैब्स की स्थापना की व्यवहार्यता का अन्वेषण करने, क्षमता निर्माण के लिए परामर्श और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को विकसित और लॉन्च करने, और व्यावसायिक हितधारकों को शामिल करते हुए पाठ्यक्रम डिजाइन करने पर जोर दिया गया। अंत में, साइबर फोरेंसिक लैब की स्थापना पर फॉलो-अप करने, लैब विजिट और क्षेत्रीय लैब्स की स्थापना की योजना बनाने और स्पेस स्टार्टअप्स तथा रक्षा संबंधित परियोजनाओं के साथ सहयोग की चर्चा जारी रखने का निर्णय लिया गया।

विश्व पर्यावरण, बायोफ्यूल व बायोडीग्रेडेबल एक्सपो आयोजित

■ तीन दिवसीय एक्सपो में सस्टेनेबिलिटी के विकास पर दिया जा रहा जोर

ग्रेटर नोएडा, 5 जून(देशबन्धु)। इंडियन एक्जिबिशन सर्विसेज और ग्रीन सोसाइटी ऑफइंडिया ने स्थायी विकास पर सबसे बड़े कार्यक्रम विश्व पर्यावरण एक्सपो एक्सपो 2024 का आयोजन किया, इसके साथ ही इंडिया एक्सपो मार्ट एण्ड सेंटर में बायोफ्यूल एक्सपो और बायोडीग्रेडेबल एक्सपो का भी आयोजन किया गया। वर्ल्ड एनवायरनमेन्ट एक्सपो- प्रदूषण नियन्त्रण उपकरणों एवं तकनीकों, नवीकरणीय उर्जा, सोलन पैनल्स एवं सोलर उत्पादों, सफाई एवं सेनिटेशन उपकरणों, हरित इनोवेशन, उर्जा दक्षता उपकरणों एवं तकनीकों आदि पर 5वीं इंटरनेशनल प्रदर्शनी है। बायो फ्यूल एक्सपो 2024 बायोफ्यूल (बायोडीजल, एथेनॉल, मेथेनॉल, बायोगैस- बायो एलएनजी, बायो सीएनजी, बायोमास, गैस ईंधन जैसे हाइड्रोजन और सिंथेटिक गैस) पर आधारित एक इंटरनेशनल कारोबार प्रदर्शनी है जो इस क्षेत्र के उत्पादकों, निर्माताओं को एक ही मंच पर लेकर आती है।

तीन दिवसीय प्रदर्शनी भारत में बायोफ्यूल उद्योग के विकास को बढ़ावा देगी, साथ ही बायोफ्यूल एवं बायोमास उद्योग के प्रतिभागियों को नेटवर्किंग एवं कारोबार के अवसर प्रदान करेगी। बायोडीग्रेडेबल एक्सपो भी बायोडीग्रेडेबल, कम्पोस्टेबल और सस्टेनेबल प्रोडक्ट्स, मशीनरी, कच्चे माल एवं संबंधित उद्योगों पर आधारित तीन दिवसीय प्रदर्शनी है जहां इन उद्योगों के हितधारक एक ही मंच पर इकट्ठा होंगे तथा

नेशनल-इंटरनेशनल स्तर पर कारोबार के अवसरों पर चर्चा करेंगे। स्वदेश कुमार, डायरेक्टर, इंडियन एक्जिबिशन सर्विसेज ने बताया कि स्थायित्व के तीन पी सर्वविदित हैं। पी का अर्थ है पीपल, प्लेनेट और प्रोफिट (लोग, धरती और मुनाफा)। प्रदर्शनी का उद्देश्य कारोबारों को विकास के लिए अन्तरराष्ट्रीय गुणवत्ता का मंच प्रदान करना है जहां हमारे प्रदर्शकों को अपना कारोबार बढ़ाने, तकनीकों के विनिमय, नए प्रोडक्ट्स डिस्प्ले करने और साझेदारों के साथ जुड़ने का मौका मिल रहा है।

{ संपादकीय }

नई दिल्ली, गुरुवार 6 जून 2024

संस्थापक-सम्पादक : स्व. मायाराम सुरजन

लौट रहा है गठबन्धन सरकारों का दौर

10 वर्षों तक भारतीय जनता पार्टी और नरेन्द्र मोदी का एकछत्र शासन, खासकर 2019 से 2024 तक देखने के बाद लगता है कि देश में फिर से गठबन्धन सरकारों के दिन लौट रहे हैं। मोदी के शासन करने के तरीके ने यह सबक देशवासियों को दिया है कि गठबन्धनों से परहेज करना ठीक नहीं है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश के लिये यह व्यवस्था, वह भी वर्तमान परिस्थितियों में सम्भवत: एक दल के पूर्ण बहुमत वाली सरकार से बेहतर हो सकती है। 18वीं लोकसभा के लिये हुए चुनावों के जो परिणाम आये हैं, उसके बाद यह तो साफ है कि अगली सरकार जो भी बनेगी वह गठबन्धन की होगी। ऐसी सरकारों के बारे में कायम पूर्वाग्रहों और कुछ पैमाने में उनका भारत में जो भी इतिहास रहा हो, अगर वह सब दरकिनार कर दिया जाये तो देशवासियों के हित में यह बुरा सौदा नहीं हो सकता।

2014 में मोदी की अगुवाई में डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में दो कार्यकाल पूरे कर चुकी जिस यूपीए सरकार को हटाया गया था, वह भी एक गठजोड़ ही था। ऐसा गठजोड़ जिसने अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व में चल रही नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस की सरकार को हटाया था। एकछत्र राज करने की चाहत में मोदी ने जहां एक ओर अपने विपक्षी दलों को साफ करने की कोशिश की, तो वहीं अपने सहयोगी दलों को भी समाप्त कर दिया। कुछ दलों को तो तोड़ही दिया। भाजपा की अति महत्वाकांक्षा और मोदी की एकाधिकार की प्रवृत्ति ने एक सामंजस्यपूर्ण कार्य प्रणाली को ध्वस्त कर दिया। पहली बार (2014-19) तो उन्होंने सहयोगी दलों के सदस्यों का थोड़ा बहुत सम्मान किया और उन्हें सत्ता में भागीदारी दी परन्तु दूसरे कार्यकाल में जब उन्हें अपने दम पर पूर्ण बहुमत मिल गया तो उन्होंने उन दलों को न केवल दरकिनार किया वरन उनकी जमीनें हथियाने की भी कोशिश की। महाराष्ट्र में शिवसेना को दो-फाड़ किया और उसकी सरकार गिरा दी। पंजाब में शिरोमणि अकाली दल से उनकी पटरी नहीं बैठी।

1977 में पहली बार भारत ने जनता पार्टी की गठबन्धन सरकार देखी थी। मोरारजी देसाई उसके प्रधानमंत्री बने थे। यह सरकार अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाई। मध्यावधि चुनाव हुए और 1980 में इंदिरा गांधी सत्ता में लौटीं। इसके पहले कुछ समय के लिये कांग्रेस के समर्थन से चौधरी चरण सिंह की सरकार भी बनी लेकिन वह लम्बा चलने में असफल रही थी। इसके कारण गठबन्धन सरकारों को लेकर लोगों के मन में आशंका बैठ गयी। मान लिया गया कि ऐसी सरकारें टिकाऊ नहीं होतीं। हालांकि इसकी दूसरी वजहें थीं, पर विरोधी दलों के लिये यह जुमला चल पड़ा कि 'डिवाइडेड दे स्टैंड, यूनाइटेड दे फॉल' (विभाजित रहते वे मजबूत होते हैं, इकट्ठे धराशायी)। 1989 में एक और अवसर आया जब 400 पार वाली परन्तु बोफोर्स के कारण बदनाम हुई राजीव गांधी की मजबूत सरकार को उसी में वित्त मंत्री व रक्षा मंत्री रहे वीपी सिंह के नवगठित जनता दल ने परास्त किया था। हालांकि उस चुनाव में सर्वाधिक सीटें कांग्रेस को ही आई थीं लेकिन 1984 के मुकाबले काफी कम थीं। इसे राजीव ने अपनी नैतिक पराजय माना था और सरकार बनाने से इंकार कर दिया था। वी पी सिंह आगे बढ़े थे। उन्हें भाजपा के साथ कुछ प्रगतिशील दलों ने समर्थन दिया था। मंडल आयोग की सिफारिशें लागू करने के चलते भाजपा द्वारा समर्थन खींच लेने से यह सरकार भी गिर गयी तथा कुछ समय के लिये चंद्रशेखर पीएम बने। वह कांग्रेस के समर्थन से चले पर राजीव के बंगले की हरियाणा पुलिस के दो कांस्टेबलों द्वारा जासूसी कराये जाने के आरोप में कांग्रेस ने समर्थन वापस ले लिया था। इंद्रकुमार गुजराल एवं एच डी देवेगौड़ा जैसों द्वारा भी गठबन्धन सरकारें चलाने का इतिहास इसी देश का है।

पहली बार वाजपेयी सरकार ने 1999 से 2004 तक का कार्यकाल पूरा किया था जो कि मिली-जुली सरकार थी। हालांकि इसके पहले वे एक बार 13 दिन और दूसरी बार 13 माह की गठबन्धन सरकारें चला चुके थे। इसकी मुख्य विशेषता यह थी कि सरकार उनकी दो बार गिरी लेकिन गठबन्धन अटूट रहा। सहयोगी दल साथ बने रहे। इसने यह लोकतांत्रिक प्रशिक्षण दिया कि पराजय में बिखरना नहीं है और मिलकर सरकार बनाने के प्रयास करते रहने हैं। वाजपेयी भी वैसे ही कट्टर हिन्दू और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उतने ही समर्पित कार्यकर्ता थे जितने कि नरेन्द्र मोदी। जब तक वे सरकार चलाते रहे उन्होंने अपनी विचारधारा को एक किनारे रख दिया था। उन्होंने अपने साथ जॉर्ज फर्नांडीज, नीतीश कुमार, शरद यादव जैसे समाजवादियों को भी रखा, पाकिस्तान की यात्रा की और जिस गोधरा कांड में बड़ी संख्या में मुस्लिम मारे गये व बलात्कार हुए थे, उसके होने पर इन्हीं मोदी को राजधर्म का पालन करने की सरेआम नसीहत भी दी, जब वे गुजरात के मुख्यमंत्री थे।

मनमोहन सिंह के कार्यकाल में भी यह मिथक टूटा कि गठबन्धन सरकारें काम नहीं करतीं। ग्रामीण गरीबी दूर करने के लिये मनरेगा, भोजन का अधिकार, सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार जैसे नायाब कार्यक्रम इसी गठबन्धन सरकार की सौगातें हैं। सो, ऐसे वक्त में जब पूर्ण बहुमत के अभाव में कोई भी अपने दम पर सरकार नहीं बना सकता, साफ है कि सत्ता मिल-जुलकर ही चलाई जा सकती है। वैसे भी लोकतंत्र का मतलब है मिलकर काम करना। मोदी को सामंजस्यपूर्ण तरीके से काम करने की आदत नहीं। उन्हें गठबन्धन की संस्कृति सीखनी आवश्यक तो है, लेकिन वाजपेयी और मनमोहन सिंह सदृश्य लचीलेपन व उदारता के अभाव में उनके हाथों में पड़कर ऐसी सरकार वाकई में अस्थिर हो सकती है।

जनता का डंका बज गया

दुनियादारी

■ सर्वमित्रा सुरजन

नरेन्द्र मोदी का हमेशा दावा रहा है कि दुनिया में उनका डंका बजता है। लेकिन 4 जून को जब 18वीं लोकसभा के नतीजे आए तो नरेन्द्र मोदी देश तक में अपने नाम का डंका नहीं बजवा पाए। जबकि भाजपा ने पूरा चुनाव मोदी नाम के इर्द-गिर्द ही लड़ा। वाराणसी में ले-देकर नरेन्द्र मोदी अपनी सीट बचा पाए। दो बार का प्रधानमंत्री होने के बावजूद वे आसान जीत नहीं दर्ज कर पाए, ना ही बड़े अंतर से सीट जीती। महज डेढ़ लाख वोट का अंतर हार और जीत का रहा। उनसे अधिक वोट राहुल गांधी रायबरेली में ले आए, जबकि स्मृति ईरानी और नरेन्द्र मोदी राहुल गांधी को वायनाड और रायबरेली दोनों से भगाने का दावा करते रहे। खैर, नरेन्द्र मोदी ने राहुल गांधी ही नहीं भारतीय जनता को समझने में भी भूल की। उन्हें लगा होगा कि वे एक तरफ निम्न स्तर के भाषणों से विपक्ष पर प्रहार करते रहेंगे और दूसरी तरफ विभिन्न वेषभूषाओं में पूजा-पाठ करते दिखेंगे तो जनता इससे प्रभावित होगी। यहीं वे चूक कर गए, क्योंकि इस देश की आम जनता के पास वो पैनी नजर है जिससे वो असलियत और दिखावे का फर्क कर लेती है। पांच किलो अनाज लेने के लिए लाइनों में खड़े 85 करोड़ लोगों की जेबें बेशक खाली रहीं, लेकिन सामान्य समझ भरी-पूरी रही। जिससे वे समझ गए कि उन्हें इस तरह लाइनों में खड़ा करने का जिम्मेदार कौन है। क्यों उनके जवान बच्चे काम पर नहीं जाते, लेकिन धार्मिक जुलूसों या कांवड़ यात्रा का हिस्सा बनते हैं और बाकी खाली वक्त में बेरोजगारी की कुंठा और तनाव से गुजरते हैं। जो सरकार हजारों करोड़ का भव्य मंदिर बनवा सकती है, जो बिना जरूरत के सेंट्रल विस्टा का निर्माण करती है, वो रोजगार देने वाले उद्यमों को खड़ा क्यों नहीं करती। जय जवान और जय किसान वाले इस देश में जवानों और किसानों की दुर्दशा किन कारणों से हुई, ऐसे कई सवालों का जवाब जनता ने बीते वर्षों में खुद से तलाश कर लिया था। इसलिए इस बार उसने ऐसा जनादेश दिया कि फिर कोई नेता यह बड़बोलापन न कर सके कि एक अकेला सब पर भारी है। लोकतंत्र में एक अकेले के लिए न कभी कोई जगह थी, न रहेगी, ये बड़ा संदेश इन चुनावों में जनता ने दे दिया।

पाठकों को भाजपा का घोषणापत्र याद होगा ही, जिसमें भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा से कहीं ज्यादा तस्वीरें नरेन्द्र मोदी की थीं और जनता से किए वादों को मोदी की गारंटी के नाम से ही पेश किया गया। चुनावों में सबसे अधिक प्रचार भी नरेन्द्र मोदी ने ही किया। कई महीनों से वे दिल्ली में अपने प्रधानमंत्री कार्यालय में कम और चुनाव क्षेत्रों में ज्यादा नजर आए। 15 अगस्त 2023 को लालकिले की प्राचीर से उन्होंने ऐलान कर दिया था कि तीसरी बार भी मैं ही झंडा फहराने आऊंगा। यह सीधे-सीधे भारतीय जनता के विवेक और लोकतांत्रिक अधिकारों को चुनौती थी कि तुम्हारी मर्जी अब मायने नहीं रखती, केवल मेरे मन की बात का महत्व है। इसके बाद 5 फरवरी 2024 को संसद में प्रधानमंत्री मोदी ने ऐलान कर दिया कि एनडीए को 4 सौ के ऊपर और अकेले भाजपा को 370 सीटें मिलेंगी। यह दावा देश के मिज़ाज भांपने के दम पर किया गया था। चुनाव प्रक्रिया शुरु हुई नहीं थी कि नरेन्द्र मोदी ने यह बताना शुरु कर दिया कि कितने देश उन्हें अभी से जून के बाद होने वाले कार्यक्रमों के लिए बतौर प्रधानमंत्री न्यौता दे रहे हैं। अर्थात न केवल उन्हें बल्कि दुनिया को भी यकीन है कि आएगा तो मोदी ही। जी हां, यही नारा भाजपा में मोदी समर्थकों की जुबां पर हमेशा रहा है। ये नारा अपने आप में खासा अलोकतांत्रिक है। लेकिन जिनके सरोकारों में लोकतंत्र दूर-दूर तक न हो, उनसे क्या अपेक्षा की जा सकती है।

> भाजपा के अलावा दूसरे दलों के भी उन तमाम अहंकारी नेताओं को जवाब मिल गया है, जिन्होंने खुद को जनतंत्र से ऊपर समझने की गलती की। अपनी कमजोरियों को सहजता से स्वीकार नहीं किया और न ही सही सलाह देने वालों को सुनने की समझदारी दिखाई। इंडिया गठबंधन में भी कई नेता ऐसे ही अतिआत्मविश्वास और घमंड का शिकार रहे।

इस देश को लोकतंत्र और संविधान बचाने की सारी अपेक्षाएं विपक्ष से ही थीं। क्योंकि देश ने यह मंजर भी देख लिया कि कैसे एक के बाद एक करते-करते सौ से अधिक सांसदों को संसद से निलंबित कर दिया गया। किस तरह संसद के नए भवन के भीतर धुआं फैलाने की घटना हो गई। जिसे हमला ही कहा जाना चाहिए, क्योंकि इसमें जान-माल की हानि तो नहीं हुई, लेकिन संसद की मर्यादा पर वार तो किया ही गया था। विपक्ष इस मुद्दे पर सरकार से जवाब मांगता रह गया, मगर जैसे पुराने सारे सवाल संसद की दीवारों से टकराकर लौट गए, वैसा ही इस मुद्दे पर भी हुआ। देश देख रहा था कि पिछले दस सालों में संसद लोकतंत्र का मंच नहीं रह गया, मन की बात करने का अड्डा बन गया है। जहां कई बड़े फैसले, महत्वपूर्ण विधेयक बिना किसी चर्चा के केवल बहुमत के दम पर पारित कर लिए गए। पुरानी संसद में, आजादी के बाद जब देश निर्माण के साथ-साथ संविधान निर्माण का काम हो रहा था तो एक-एक धारा, अनुच्छेद, बिंदु पर गंभीर विमर्श होते थे, भारत के विविधताओं से भरे संसार को सहेजने की कोशिश होती थी ताकि हर किसी का आत्मगौरव और सम्मान कायम रहे, भले ही वह अल्पसंख्यक हो या बहुसंख्यक। पिछले दस बरसों में इसी संविधान को धता बताने का काम शुरु हो गया। आम भारतीय की भावनाओं, अधिकारों और हितों से मानो सरकार का कोई लेना-देना ही नहीं रहा। जिस फैसले से सत्ता मजबूत हो, उद्योगपति मित्रो का हित साधन हो, बस वही फैसले लिए जाते रहे।

इस नकारात्मकता से भरे माहौल में वह भारत बेहद तेजी से खत्म होता जा रहा था, जिसके बारे में अल्लामा इकबाल ने कहा था कि कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जमां हमारा। इस माहौल के बारे में राहुल गांधी ने अपनी पहली भारत जोड़ो यात्रा में देश को सचेत किया। नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान, जैसी बात महज नारा नहीं था, अपने आप में पूरा दर्शन था, जिसमें भारत की हस्ती को न मिटने देने का संकल्प था। इस संकल्प में देश की जनता ने राहुल गांधी का साथ दिया, उसके साथ-साथ विपक्ष के कई दलों ने अपना समर्थन दिया। नतीजा यह रहा कि इंडिया गठबंधन एक मजबूत विकल्प के तौर पर सियासी मंच पर उभर गया। जो लोग मोदी नहीं तो कौन जैसा बेमानी सवाल उठाते रहे, उन्हें सटीक जवाब मिल गया कि हर बार मोदी ही हों, यह बिल्कुल भी जरूरी नहीं है। प्रधानमंत्री की कुर्सी पर ऐसा कोई भी शख्स बैठ सकता है, जिसके दल या गठबंधन ने बहुमत हासिल किया हो और फिर उसके दल या गठबंधन के लोगों ने उसे प्रधानमंत्री पद पर बिठाया हो। नरेन्द्र मोदी और उनके पहले के सारे प्रधानमंत्री इसी तरह इस कुर्सी पर बैठे, लेकिन न जाने किस मकसद से भाजपा ने यह सवाल उठाना शुरु कर दिया कि मोदी नहीं तो कौन।

बहरहाल, अब भाजपा को जवाब तो मिल ही गया है, और भाजपा के अलावा दूसरे दलों के भी उन तमाम अहंकारी नेताओं को जवाब मिल गया है, जिन्होंने खुद को जनतंत्र से ऊपर समझने की गलती की। अपनी कमजोरियों को सहजता से स्वीकार नहीं किया और न ही सही सलाह देने वालों को सुनने की समझदारी दिखाई। इंडिया गठबंधन में भी कई नेता ऐसे ही अतिआत्मविश्वास और घमंड का शिकार रहे। जिसका नुकसान विपक्ष को उठाना पड़ा। अब जबकि देश के लिए बेहद महत्वपूर्ण 18वीं लोकसभा का चुनाव खत्म हो गया है, नतीजे आ गए हैं, गलतियां पता चल गई हैं और जनता की ताकत भी सामने आ गई है, उम्मीद है अहंकारी नेता आत्ममंथन करेंगे और समझेंगे कि लोकतंत्र में डंका जनता का ही बजता है।

लोकसभा चुनावों में एनडीए जीता, लेकिन नरेंद्र मोदी नेतृत्व हारा

■ नित्य चक्रवर्ती

2024 के लोकसभा चुनावों में लोकतंत्र सबसे बड़ा विजेता है, क्योंकि 4 जून को घोषित परिणाम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के राजनीतिक विचारों में विविधता को रेखांकित करते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, जो सत्तारूढ़ पार्टी भाजपा के एकमात्र चेहरे जिनके नाम पर चुनाव लड़ा गया, को इस साल 19 अप्रैल से 1 जून तक सात चरणों में हुए 18वें लोकसभा चुनावों में अपने मताधिकार का प्रयोग करने वाले 64.2 करोड़ मतदाताओं से सबसे बड़ी हार मिली है।

प्रधानमंत्री ने पिछले दो महीनों में एनडीए के लिए अपनी पार्टी के नारे 'अबकी बार 400 पार' के समर्थन में लगातार प्रचार किया, जिसमें से भाजपा का लक्ष्य 370 था। पूरे देश में यह प्रचार किया गया कि भाजपा 4 जून के नतीजों के जरिये इसे हासिल कर लेगी। अंतिम स्थिति यह है -एनडीए को 292 तथा भाजपा को 240सीटें मिली हैं जो 2019 के लोकसभा स्तर से 63 सीटें कम हैं। यह 2014 की 282सीटों से भी 42 सीटें कम है। इसके मुकाबले इंडिया ब्लॉक 233 सीटों के साथ एनडीए से केवल 59 सीटें पीछे है।

प्रधानमंत्री ने देश को सांप्रदायिक आधार पर ध्रुवीकृत करने की कोशिश की थी। उन्होंने केंद्र और राज्यों में एक ही पार्टी को रखने के नारे के साथ कांग्रेस और क्षेत्रीय दलों पर भी तीखे हमले किये। चुनाव परिणामों में क्षेत्रीय दलों के पुनरुत्थान ने इस बात की गारंटी दी है कि संघवाद को खत्म करके सभी शक्तियों को केंद्रीकृत करने का भाजपा का उद्देश्य सफल नहीं होगा।

> इंडिया ब्लॉक 2024 के चुनावों में सत्ता के दरवाजे के काफी करीब था। 2024 एक और 2004 हो सकता था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ है। यह एक वास्तविकता है। इंडिया ब्लॉक के नेताओं को स्थिति का ईमानदारी से आकलन करने और रणनीति बनाने के लिए अभी मिलना चाहिए। अब उनका मुख्य काम ब्लॉक सदस्यों की एकता को मजबूत करना है ताकि भाजपा का मुकाबला किया जा सके।

आने वाले दिन नयी सरकार के लिए मुश्किल भरे होंगे, जिसका नेतृत्व अल्पमत वाली भाजपा की सरकार करेगी। परन्तु 2024 के लोकसभा नतीजों से क्या निष्कर्ष निकलेंगे? सबसे पहले तो नरेंद्र मोदी का कद कम हुआ है। वह खुद को विश्वगुरु और एक तरह के मसीहा के रूप में पेश करने की कोशिश कर रहे थे, जो यह दर्शाता था कि वह भी अजेय हैं। उन्हें भगवान ने 2047 तक अपना काम करने के लिए भेजा है। वह अपने समर्थकों और आम लोगों के बीच मिथक फैलाने के लिए चुनावों में भाजपा के भारी बहुमत पर निर्भर थे। यह पूरी तरह से गलत साबित हुआ है। नरेंद्र मोदी अब एक सामान्य राजनेता बन गये हैं, जो सरकार बनाने में अपने एनडीए सहयोगियों के भारी दबाव में होंगे।

भाजपा के आगे के हिंदुत्व के कार्यक्रम को झटका लगा है। भाजपा की सीटों में गिरावट और लोकसभा में अल्पमत में आने से संघ परिवार में उथल-पुथल मचेगी। प्रधानमंत्री और पार्टी में उनके करीबी सहयोगियों ने हाल के महीनों में चुनाव रणनीति के संबंध में एकतरफा कार्रवाई की, जिससे आरएसएस और संघ परिवार की अन्य इकाइयां नाराज हैं। प्रधानमंत्री को इन हिंदुत्ववादी ताकतों के गुस्से का सामना करना पड़ेगा, जो नरेंद्र मोदी के तीसरे कार्यकाल में अपने एजेंडे को पूरा करने का इंतजार कर रहे थे। मोदी उनकी नजर में विफल हो गये हैं।

दूसरी बात यह है कि हिंदी भाषी राज्यों में भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा है। जहां तक उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा का सवाल है, भगवा खेमे के लिए यह विनाशकारी था। पार्टी ने मध्य प्रदेश में पूर्ण बहुमत बरकरार रखा है, लेकिन ऐसा राज्य में कांग्रेस के कमजोर नेतृत्व और पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के भाजपा में शामिल होने के पैंतरे के बाद हुआ है। मध्य प्रदेश में पूरा संगठन गड़बड़ा गया। कांग्रेस के सक्षम नेतृत्व में पार्टी राज्य में बेहतर प्रदर्शन कर सकती थी।

हिंदी भाषी राज्य भाजपा की मुख्य ताकत हैं और इसे पार्टी की मुख्य ताकत माना जाता है, क्योंकि यह क्षेत्र उसके हिंदुत्व के आधार से जुड़ा है। अग्रणी राज्य उत्तर प्रदेश में पार्टी के पतन से निश्चित रूप से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सहित भाजपा के शीर्ष नेताओं के बीच पुनर्विचार की स्थिति पैदा होगी। योगी का भविष्य दांव पर है, क्योंकि वे उत्तर प्रदेश में अभियान चलाने वाले भाजपा के मुख्य नेता थे।

अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी ने उत्तर प्रदेश में बड़ा उलटफेर किया है और खास बात यह है कि उत्तर प्रदेश में कांग्रेस-सपा गठबंधन कामयाब रहा है। आने वाले दिनों में इसे और आगे बढ़ाना होगा, क्योंकि राज्य में 2027 में विधानसभा चुनाव होने हैं।

तीसरी बात यह है कि राहुल गांधी एक मजबूत नेता के रूप में उभरे हैं, जिन्हें लोगों से अधिक स्वीकार्यता मिल रही है। राहुल ने कांग्रेस के अभियान की कमान बहुत अच्छे से संभाली है। वे हिंदुत्व, बेरोजगारी, महंगाई समेत मुख्य मुद्दों पर प्रधानमंत्री और भाजपा पर लगातार हमला करते रहे हैं। दरअसल, राहुल ने एक ऐसे नेता की परिपक्वता दिखाई है, जो गठबंधन सहयोगियों से निपट सकता है।

कांग्रेस ने 2024 के चुनावों में अपनी लोकसभा सीटों को लगभग दोगुना कर लिया है, लेकिन 18वीं लोकसभा चुनाव के नतीजों से मिले सबक के आधार पर आगे की कार्रवाई आने वाले दिनों में पार्टी को अच्छा लाभ दे सकती है। खामियां जगजाहिर हैं, कांग्रेस नेतृत्व द्वारा सुधारात्मक कार्रवाई के लिए उनका ध्यान रखा जा सकता है। देश की 139 साल पुरानी पार्टी कांग्रेस खुद को इंडिया ब्लॉक के प्रभावी संचालक के रूप में काम करने के लिए तैयार कर सकती है।

इंडिया ब्लॉक ने कई राज्यों में अच्छा प्रदर्शन किया है। यह घटक दलों के जमीनी कार्यकर्ताओं की समन्वित कार्रवाई से संभव हुआ है। इसके जरिए कई युवा नेता उभरकर सामने आये हैं। राहुल गांधी के अलावा अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव, आदित्य ठाकरे, उदयनिधि स्टालिन, कल्पना सोरेन और अभिषेक बनर्जी ऐसे युवा नेता हैं, जिनके आने वाले दिनों में इंडिया ब्लॉक की अगुआई करने की उम्मीद है। उद्धव ठाकरे और एम के स्टालिन दोनों ने दिखाया है कि कैसे संयुक्त नेतृत्व भाजपा और एनडीए को बड़ा झटका दे सकता है। आने वाले दिनों में अशांत राजनीतिक स्थिति से निपटने के लिए इंडिया ब्लॉक को सभी स्तरों पर मजबूत करना होगा।

चौथा सबक दक्षिणी राज्यों में बदलते राजनीतिक मूड का है। आंध्र प्रदेश में ऐसा लगता है कि टीडीपी-भाजपा गठबंधन जगन मोहन रेड्डी की वाईएसआरसीपी सरकार की जगह लेगा। टीडीपी ने बड़ी वापसी की है। तमिलनाडु और केरल में भाजपा ने अपनी उपस्थिति में मामूली सुधार किया है। कर्नाटक में कांग्रेस ने 2019 के चुनावों की तुलना में अपनी टैली में सुधार किया, लेकिन भाजपा-जेडी (एस) गठबंधन प्रभावी रहा। तेलंगाना में, भाजपा और कांग्रेस दोनों ने क्षेत्रीय पार्टी बीआरएस की कीमत पर लाभ कमाया। फिर से ओडिशा में, क्षेत्रीय बीजेडी को चुनावों में भाजपा ने हरा दिया। यह भाजपा के हाथों एक क्षेत्रीय पार्टी की हार थी जो अप्रत्याशित नहीं थी। इस तरह, क्षेत्रीय दलों के बारे में भी कोई सीधी रेखा नहीं है।

टीडीपी को बहुत लाभ हुआ है जबकि वाईएसआरसीपी, बीआरएस और बीजेडी को नुकसान हुआ है। फिर भी, कुल मिलाकर, क्षेत्रीय दलों ने कई राज्यों में बढ़त हासिल की है और यह इंडिया ब्लॉक की संघीय राजनीति को मजबूत करने के लिए बहुत सकारात्मक है।

18वें लोकसभा चुनाव में एनडीए का वोट शेयर 46प्रतिशत रहा, जो 2019 के आंकड़े से 2 प्रतिशत कम है जबकि 2024 के चुनावों में इंडिया ब्लॉक का वोट शेयर 41प्रतिशत था, जो 8प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करता है। भाजपा के वोटों में यह गिरावट अभियान के अंतिम दिनों में नरेंद्र मोदी की स्थिति में कमी से जुड़ी है।

क्षेत्रीय दलों में, पश्चिम बंगाल में, तृणमूल कांग्रेस ने 2019 की अपनी टैली 22 में 7 सीटें जोड़ी है। टीएमसी ने 2024 के चुनावों में 4प्रतिशत की वृद्धि के साथ अपना वोट शेयर 47प्रतिशत तक बढ़ाया, जबकि भाजपा का वोट शेयर 3प्रतिशत घटकर 37प्रतिशत रह गया। टीएमसी सरकार पर तमाम आरोपों के बावजूद टीएमसी ने भाजपा और कांग्रेस-वाम गठबंधन को हराकर अपनी स्थिति में काफी सुधार किया है। ममता इंडिया ब्लॉक की एक महत्वपूर्ण नेता हैं। ब्लॉक के अन्य नेताओं को यह सुनिश्चित करना होगा कि टीएमसी के अन्य भागीदारों के साथ संबंध मधुर हों। केंद्र में माकपा नेताओं को बंगाल में अपने उम्मीदवारों के लोकसभा परिणामों का विश्लेषण करना होगा और ईमानदारी से पता लगाना होगा कि पिछले पांच वर्षों में कोई बदलाव क्यों नहीं हुआ। उन्हें राज्य नेतृत्व से स्वतंत्र होकर गहन जांच करनी चाहिए।

वास्तव में, इंडिया ब्लॉक 2024 के चुनावों में सत्ता के दरवाजे के काफी करीब था। 2024 एक और 2004 हो सकता था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ है। यह एक वास्तविकता है। इंडिया ब्लॉक के नेताओं को स्थिति का ईमानदारी से आकलन करने और रणनीति बनाने के लिए अभी मिलना चाहिए। अब उनका मुख्य काम ब्लॉक सदस्यों की एकता को मजबूत करना है ताकि भाजपा का मुकाबला किया जा सके जो नरेंद्र मोदी के घटते कद के साथ गिरती जा रही है। भाजपा पस्त है, नरेंद्र मोदी उतने मजबूत नहीं हैं। एनडीए के साथी रणनीतिगत कारणों से भाजपा के साथ नहीं जुड़े हैं। शरद पवार और उद्धव ठाकरे जैसे दिग्गज एनडीए के साथी टीडीपी, जेडी(यू), शिंदे शिवसेना से गठबंधन के लिए बात कर सकते हैं। अगर लोकतांत्रिक तरीके से नरेंद्र मोदी को तीसरा कार्यकाल न देने का कोई अवसर आता है, तो उसका लाभ उठाया जाना चाहिए। भाजपा के पक्ष में खेल अभी भी खत्म नहीं हुआ है।

पावन प्रसंग

लोभ से परे है भक्ति

याज्ञवल्क्य ऋषि के प्रिय शिष्य सुपर्ण की महादीक्षा की तैयारियां चरम पर थीं। सुपर्ण एक महान ऋषि एवं प्रतिभावान शिष्य थे। सुपर्ण न केवल अपने गुरु के प्रिय थे, बल्कि अपनी प्रतिभा, उदारता, सहिष्णुता एवं सेवाभाव के कारण वे सभी के प्रिय थे। सुपर्ण ने अपनी मेहनत, लगन एवं निष्ठा के बल पर सभी का मन जीत लिया था। सभी लोगों का मानना था कि गुरु याज्ञवल्क्य के शिष्यों में से सुपर्ण ही एकमात्र ऐसे शिष्य हैं, जो महादीक्षा के लिए सर्वथा उपयुक्त एवं योग्य है।

महादीक्षा को लेकर सुपर्ण के मन में उत्साह का संचार हो रहा था, जिसका प्रभाव उनके चेहरे की मुस्कान के रूप में परिलक्षित हो रहा था। सुपर्ण के मित्रों के बीच यह विषय चर्चा का केंद्र बना हुआ था। उनके मित्र कह रहे थे- मित्र सुपर्ण, तुम परम सौभाग्यशाली हो, जो गुरुवर ने महादीक्षा के लिए तुम्हारा चयन किया। दीक्षित तो हम सभी हैं, पर तुम महादीक्षा के लिए चुने गए हो पर ध्यान रहे कि गुरुवर कहते हैं कि, महादीक्षा के कई चरणों में परीक्षा देनी होती है। इसका तुम्हें तो ज्ञान होगा। सुपर्ण ने कहा- हां, मित्र. गुरुवर ने कई बार मेरी परीक्षा लेकर मुझे उत्तीर्ण किया है। उन्होंने कहा है कि मैं महादीक्षा के लिए सर्वथा योग्य हो चुका हूं. परंतु उनकी गंभीर दृष्टि मेरी अंतरात्मा में ना जाने क्या खोज रही थी, मैं समझ नहीं पा रहा था। उसकी बातों पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

एक बार ऋषि याज्ञवल्क्य ने सुपर्ण को बुला कर एक वस्तु दिखाकर कहा - इस वस्तु को पहचानते हो ये क्या है? सुपर्ण ने कहा- गुरुवर ये क्या है और इस वस्तु का प्रयोजन क्या है? गुरु गंभीर थे उनके चेहरे पर रहस्यमयी मुस्कुराहट थी उन्होंने कहा- वत्स यह वस्तु पत्थर जैसी दिखने वाली पारस पत्थर है। लौह धातु को स्पर्श कराने से वह सोना बन जाता है। यह पारस पत्थर सृष्टि में सर्वमान्य एवं बहुमूल्य रत्न के रूप में जाना जाता है। यह सुनकर सुपर्ण की आंखों में एक अजीब सी चमक उठने लगी। सुपर्ण की सुप्त कामनाएं उसे अंदर से विचलित करने लगीं।

सुपर्ण ने पूछा- गुरुवर, यदि उस पारस पत्थर विश्व के समस्त लोहों से स्पर्श कर दिया जाए तो सारे लोहे सोना बन जाएंगे। महर्षि ने मुस्कराते हुए जवाब दिया- हां वत्स. विश्व का सारा लोहा सोना बन जाएगा। पारस के पास ऐसा गुण है कि लोहे को सोने में बदल दे। सुपर्ण ने कहा- गुरुवर, यह पारस पत्थर मैं ले सकता हूं? सुपर्ण की बात सुनकर गुरु की दृष्टि आकाश की ओर उठ गई। उनकी गंभीरता सघन थी। उन्होंने सुपर्ण को बताया कि एक बार मैं एक राजा के दरबार में यह पारस ले गया। उसके दरबार में बहुत से धनाढ्य, किसान, व्यापारी और अनेक लोग बैठे हुए थे। मैंने उन सबको इस पत्थर की कीमत आंकने कही। सब अपना सब कुछ लुटाकर यह पारस पत्थर पाना चाहते थे। एक व्यक्ति के पास कुछ भी नहीं वह अपनी संतान व पत्नी तक को सौंपने के लिए तैयार था।

सुपर्ण के मन में घृणा के भाव आ गए। इस पत्थर के लिए अपनी पत्नी भी सौंपने को तैयार हो गए। क्या पारस के बदले मानवीय मूल्यों का कोई स्थान नहीं है। किसी वस्तु के लिए इतनी बड़ी कीमत चुकाई जा सकती है। सुपर्ण की बात सुनकर महषि ने कहा- एक व्यक्ति तो इसके बदले में अमूल्य निधि देने को तैयार था। इस सृष्टि में उससे बड़ा अभागा और कोई नहीं हो सकता जिसने इसकी इतनी बड़ी कीमत चुका दी। परम आनंद के बदले तुमने पारस को मांग लिया और संसार सागर में गिर गए। वत्स, महादीक्षा की इस अंतिम परीक्षा में तुम असफल होकर अयोग्य हो चुके हो। ऋषि की बात सुनकर सुपर्ण को एहसास हो गया कि उसने कितनी बड़ी भूल कर दी जो पारस पत्थर को मांग लिया।

अखंड ज्योति

आपके पत्र

दल बदलने की स्वतंत्रता पर पाबंदी जरूर

लोकसभा चुनाव 2024 के परिणामों की घोषणा होने के बाद तस्वीर साफ हो चुकी है। इस बार किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत का अभाव होने से घटक दलों की कूटनीति को बल मिला है। अपने दम पर 240 सीटें जीतकर भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़े दल के रूप में सामने आई है। कांग्रेस को भी इस बार 99 सीटों पर पताका फहराने का अवसर प्राप्त हुआ है। अब यदि मैं गठबंधन की बात करूं तो एनडीए को 290 से अधिक सीटें मिली हैं, जबकि प्रमुख विपक्षी दल इंडिया गठबंधन को 230 सीटें प्राप्त हो रही हैं। सवाल यह उठता है कि स्पष्ट बहुमत के अभाव में कौन सा दल सरकार बना पाएगा? इसी स्थिति में ऐसे दल जो महज 5 प्रतिशत से भी कुछ कम सीटें प्राप्त की हैं, वे किंग मेकर कैसे बन रही है? इन्हीं मुद्दों पर चुनाव आयोग को चिंतन करने की जरूरत है। 99 सीट और 240 सीट की तुलना कैसे की जा सकती है? यह हमारे संविधान की कमजोरी ही मानी जानी चाहिए कि हम ऐसे लोगों को सरकार बनाने में महत्वपूर्ण मान रहे हैं जिनका वजूद देश की जनता ने नकार दिया है। चुनाव आयोग भी इस स्थिति से निपटने में खुद को सक्षम नहीं पा रहा है।

देश में त्रि शंकु सरकार की स्थिति पहली बार पैदा हुई हो ऐसा नहीं है। हमने कांग्रेस के नेतृत्व से लेकर अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व तक ऐसी सरकारें बनते और चलते देखी हैं। सबसे बड़ा सवाल यह है कि गठबंधन में शामिल दलों को चुनाव आयोग उसी दल में बने रहने की पाबंदी तक सीमित क्यों नहीं कर पा रहा है? देश की जनता के जनमत के साथ खिलवाड़ करने वाले 10 से 20 सीटों को जीतने वाले दल बड़े मंत्री पद की लालच में जो सौदा कर रहे हैं वह जनमत का अपमान करने से कम क्यों माना जा रहा है? इसे तो खुलेआम डकैती से कम नहीं माना जाना चाहिए। वास्तव में चुनाव आयोग को हमारे देश के कानून ने महज चुनाव कराने वाली एजेंसी ही बना कर रख दिया है। होना तो यह चाहिए कि जिन दलों ने चुनावों से पूर्व जिन प्रमुख दलों के साथ रहने के लिए गठबंधन किया हो उन्हें गठबंधन को तोड़ने का हक नहीं दिया जाना चाहिए। करोड़ों रुपयों का सौदा कर दल बदलने वाले ऐसे ही राजनीतिकारों के चलते आम जनता के बहुमत का खुलेआम निरादर छोटे दलों और आवासरवादियों के लिए वरदान बनकर सामने आता रहा है। सीधे शब्दों में कहूं तो हमारे संविधान ने सरेआम राजनैतिक दलों को काला बाजारी का अवसर दे रखा है।

वर्तमान लोकसभा की दयनीय स्थिति को देखते हुए मैं तो यही कहना चाहता हूं कि सरकार कोई भी बनाए, यह कोशिश की जानी चाहिए कि आगे के चुनावों में इस स्थिति से बचने उपाय जरूर किए जाएं।

डा. एस के मिश्रा, राजनांदगांव

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोन: 011-23718195,23357784, फैक्स: 011-43581404, नोएडा कार्यालय: फोन: 0120-4114404 फैक्स: 0120-4273770

ई-मेल: deshbandhudelhi@gmail.com वेब: www.deshbandhu.co.in

देश विदेश

फिलीपींस में रेबीज के 169 मामले सामने आए

मनीला। फिलीपींस में इस साल के शुरूआती पांच महीनों में रेबीज के 169 मामले सामने आये हैं और 160 मौतें हुई हैं। सरकार ने बुधवार को यह जानकारी दी। देश के स्वास्थ्य विभाग ने बताया कि इस साल शुरुआत के पांच महीनों में दर्ज किए गए मामलों की संख्या पिछले वर्ष की समान अवधि के 150 मामलों की तुलना में 13 प्रतिशत अधिक है। कुल मामलों में से 90 प्रतिशत से अधिक लोग कुत्ते के काटने से संक्रमित हुए जबकि लगभग छह प्रतिशत लोग बिल्ली या अन्य जानवरों के काटने से संक्रमित हुए हैं। डीओएच के एक बयान के अनुसार, सभी मरीजों का इलाज चल रहा है। स्वास्थ्य सचिव टेओडोरो हर्बोसा ने सभी नागरिकों से तत्काल अपने पालतू जानवरों को रेबीज का टीका लगवाने और कुत्तों या बिल्लियों द्वारा काटे जाने पर तत्काल चिकित्सा सहायता लेने का आह्वान किया है।

ताइवान के राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री मोदी को दी जीत की बधाई

संबंधों के और मजबूत होने की जताई उम्मीद

नई दिल्ली, 5 जून (एजेंसियां)। ताइवान के राष्ट्रपति बने लाई चिन ते ने हाल ही में संपन्न लोकसभा चुनाव में भाजपा नीत एनडीए की जीत पर बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बधाई दी। चिंग ते ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, चुनाव में जीत पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बधाई। हम हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति एवं समृद्धि में योगदान देने के लिए तेजी से बढ़ते भारत-ताइवान संबंधों को और मजबूत बनाने, व्यापार, प्रौद्योगिकी तथा अन्य क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने की उम्मीद करते हैं। ताइवान की डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी के अध्यक्ष लाई चिंग ते पिछले महीने देश के राष्ट्रपति बने थे। उन्होंने त्साई इंग वेन की जगह ली है जिनके चार साल के दूसरे और अंतिम कार्यकाल में चिंग ते उपराष्ट्रपति थे। भारत ने हमेशा से ताइवान के साथ व्यापार, निवेश, पर्यटन, संस्कृति, शिक्षा और लोगों के बीच संबंध जैसे अन्य क्षेत्रों में सहयोग की रणनीति का पालन किया है। अप्रैल में वहां आये 7.4 तीव्रता वाले भीषण भूकंप के बाद मदद के लिए तत्कालीन राष्ट्रपति इंग वेन ने पीएम मोदी को धन्यवाद दिया था।

मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए की जीत पर चीन ने बधाई दी

बीजिंग। चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग ने बुधवार को नियमित प्रेस वार्ता में कहा कि भारत के आम चुनाव के परिणाम निकले हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन ने आम चुनाव में जीत हासिल की है। चीनी पक्ष इस पर बधाई देता है। उन्होंने कहा कि स्वस्थ व स्थिर चीन भारत संबंध दोनों पक्षों के समान हित में है और इस क्षेत्र, यहां तक कि पूरे विश्व की शांति व विकास के लिए लाभदायक भी है। चीन भारत के साथ समान कोशिश कर दोनों देशों व दोनों देशों की जनता के मूल हितों से आम स्थिति पर ध्यान देते हुए भविष्य के उन्मुख द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाएगा।

दक्षिणी सीमा पर प्रवासियों की संख्या नियंत्रित करने के आदेश पर बाइडेन ने किया हस्ताक्षर

वाशिंगटन, 5 जून (एजेंसियां)। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर कर दिया है जिसमें यह प्रावधान है कि यदि दक्षिणी सीमा पार कर अवैध रूप से देश में आने वाले शरणार्थियों की संख्या बहुत ज्यादा बढ़ जाती है तो उनके आवेदन तत्काल खारिज किये जा सकते हैं। बाइडेन प्रशासन इस प्रावधान पर लंबे समय से विचार कर रहा था। वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों के हवाले से बताया कि यह तब लागू होगा जब अमेरिका-मेक्सिको सीमा पर प्रवेश के बंदरगाहों के बीच अवैध क्रॉसिंग का सात दिन का औसत 2,500 तक पहुंच जाएगा। ऐसी स्थिति में सीमा प्रभावी रूप से बंद कर दी जाएगी। उल्लेखनीय है कि अवैध क्रॉसिंग का स्तर पहले की तय सीमा से अधिक है। अधिकारियों ने एक प्रेस वार्ता के दौरान संवाददाताओं को बताया कि ऐसे में आदेश तुरंत प्रभावी हो सकता है, जिससे सीमा अधिकारियों को कुछ दिनों या घंटों के भीतर प्रवासियों को वापस भेजने का अधिकार मिल जाएगा। अब तक अमेरिका में शरण चाहने वाले एक अवैध अप्रवासी को आम तौर पर देश में अस्थायी रूप से प्रवेश करने की अनुमति दी जाती थी। वह अपने आवेदन के समर्थन में तर्क देने के लिए अदालत में पेश होने का इंतजार करता था। नए नियम के तहत, लगातार सात दिन तक दैनिक क्रॉसिंग 1,500 या उससे कम रहने के दो सप्ताह बाद शरणार्थियों के लिए सीमा फिर से खुल जाएगी। अकेले बच्चों और मानव तस्करी के शिकार लोगों को नए नियमों के दायरे से बाहर रखा गया है। राष्ट्रपति बाइडेन ने इसे मानवीय विचारों से प्रेरित बताया। हालांकि, कुछ लोगों को आशंका है कि इस छूट से उन बच्चों की संख्या में भारी वृद्धि हो सकती है जो खुद सीमा तक खतरनाक यात्रा करते हैं।

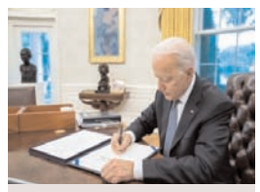

■ बाइडेन प्रशासन इस प्रावधान पर लंबे समय से कर रहे थे विचार

सुडोकू 6577

1		3				8		6
				3	8		7	
5	8			9				
9	7		3		1		4	8
4								5
6	1		8		9		2	3
				7			5	4
	5		2	8				
7		4				3		9

: नियम :

1. कुल 81 (9×9) वर्ग हैं, जिसमें 9 (3×3) वर्गों का एक खंड (ब्लॉक) बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1 से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते हैं।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कॉलम, कतार और खंड में 1 से 9 अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते हैं।

हल आज ही के अंक में

वर्ग पहेली 6577

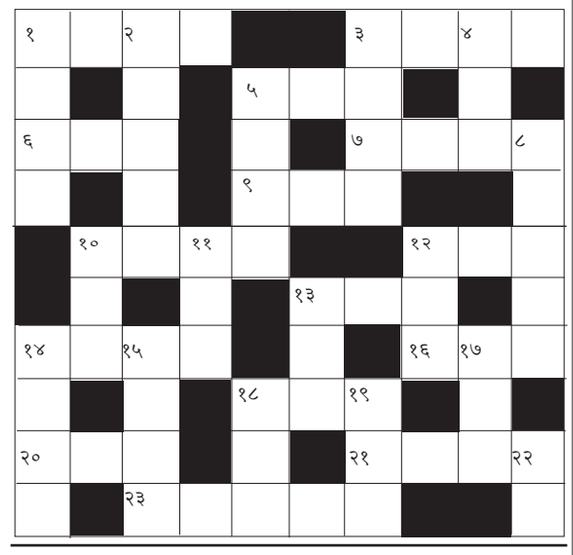

बायें से दायें:-

१. बहुत दूर तक देख सकने वाली तेज नजर (उपमा)
३. ऊपर लिखित बताया गया
५. व्यापारी
६. दुविधा, असमंजस
७. वाल्मिकी का मूल नाम
१०. सागर मंथन से निकला एक वृक्ष
१२. मां, जन्मदायिनी
१३. ठगना, छल करना
१४. मोर का पूंछ, समूह
१६. प्राय: अधिकतर
१८. जो कभी खत्म न हो
२०. सुग्रीव का राज्य
२१. जलमार्ग पर चलने वाली नौका
२३. नगरवासी

ऊपर से नीचे:-

१. श्रीकृष्ण
२. पक्का इरादा
३. पारिश्रमिक (उर्दू)
४. रोकने वाला
५. बरगद का पेड़
८. एक सुगंधित फूल, उसका पौधा
१०. कड़वे स्वाद का
११. बिच्छू
१२. महोदय, श्रीमान
१३. के कुल में उत्पन्न
१४. दागदार
१५. वेशभूषा, लिबास
१७. मूरत, शक्ल का ब्यौरा
१८. असीमित, बेहद
१९. धोना, रंगना
२२. सरिता, तटिनी

वर्ग पहेली-6576

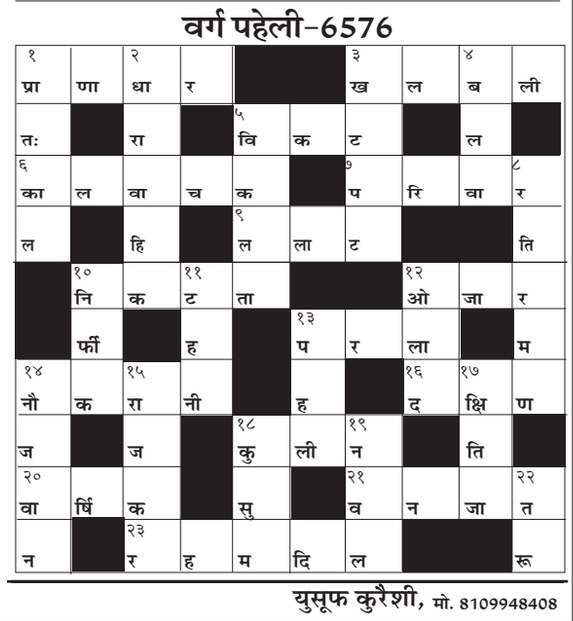

युसूफ कुरैशी, मो. 8109948408

दैनिक पंचांग

mypandit.com 24 hour astrology service

■ बेजान दारूवाला

ग्रह स्थिति : गुरूवार 6 जून, 2024 ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष 14

राशिफल

मेष - आपका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। परिजनों के साथ स्वादिष्ट भोजन और अच्छे पल गुजार सकेंगे। आर्थिक विषयों से संबंधित योजना व्यवस्थित तरीके से बना सकेंगे। आय में वृद्धि होगी।

वृषभ - आज आपका दिन ताज़गी और उत्साह से भरपूर रहेगा। आप आनंद अनुभव कर सकेंगे। दोस्तों और सगे-सम्बंधियों से उपहार मिल सकेगा। आपका दिन यात्रा में गुजर सकता है। आप स्वादिष्ट भोजन बना पाएंगे।

मिथुन - आज संयमित व्यवहार आपको बहुत सी तकलीफों से बचा लेगा। आपके व्यवहार के कारण गलतफहमी हो सकती है। शारीरिक पीड़ा के कारण मानसिक अस्वस्थता की अनुभूति होगी।

कर्क - अचानक धन लाभ हो सकता है। मित्रों, सगे- सम्बंधियों और स्नेहीजनों के साथ दिन आनंद और रोमांच से भरपूर रहेगा। आय में वृद्धि होगी। बिजनेस में लाभदायक लेन-देन और सौदा कर सकेंगे।

सिंह - काम में विलंब होगा। घर और ऑफिस में उत्तरदायित्व बढ़ जाएंगे। जीवन अधिक गंभीर होता हुआ प्रतीत होगा। नए रिलेशन या काम के सम्बंध में अभी कोई महत्वपूर्ण निर्णय ना लें। पिताजी के साथ मतभेद हो सकता है।

कन्या - आज शारीरिक सुस्ती और मानसिक थकान महसूस होगी। संतान के साथ अनबन या संघर्ष रहेगी। ऑफिस में उच्च अधिकारी के साथ भी विवाद हो सकता है। किसी समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

तुला - आपको अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना होगा। कटुवाणी और खराब व्यवहार के कारण विवाद या मतभेद हो सकता है। उग्र स्वभाव और खर्च पर अंकुश रखें। आपके विरोधी अधिक सक्रिय बनेंगे।

वृश्चिक - आज आपका दिन आनंद और मौज-मस्ती से भरपूर रहेगा। दोस्तों का साथ मिलेगा। नए वस्त्र और आभूषण पहनने का अवसर प्राप्त होगा। साथ ही आप स्वादिष्ट भोजन प्रवास और मनोरंजन का आनंद लेंगे।

धनु - आज आपको आर्थिक लाभ की संभावना है। परिवार में सुख- शांति और आनंद व्याप्त होगा। नौकरीपेशा लोगों को नौकरी में लाभ और सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। अधीनस्थ व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त कर सकेंगे।

मकर - आज आपका मन चिंता और दुविधा में उलझे होने के कारण आप किसी भी विषय में ठोस निर्णय पर नहीं आ सकेंगे। आज महत्वपूर्ण निर्णय न लेने की सलाह दी जाती है। भाग्य साथ न देने से हताशा पैदा होगी।

कुंभ - आपको मानसिक व्यग्रता और बेचैनी का अनुभव होगा। भविष्य के लिए पैसे का आयोजन करने के लिए अच्छा समय है। सौंदर्य प्रसाधन, अलंकार और वस्त्रों के पीछे खर्च होगा। माता से लाभ होगा।

मीन - वैचारिक स्थिरता महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सहायक बनेगी। आपकी सृजनशक्ति और कलात्मकता विकसित होगी। जीवनसाथी के साथ आत्मीयता बढ़ेगी। नजदीक के स्थान पर प्रवास या पर्यटन का आयोजन होगा।

नोट-उपरोक्त राशिफल बेजान दारूवाला द्वारा पूर्वलिखित है।

उत्तर कोरिया ने अंतर कोरियाई रेलवे का हिस्सा ध्वस्त किया

प्योंगयांग, 5 जून (एजेंसियां)। उत्तर कोरिया अंतर-कोरियाई आदान-प्रदान और सहयोग की विरासत को मिटाने के लिए एक स्पष्ट कदम के तहत पूर्वी तट पर अंतर-कोरियाई रेलवे के उत्तरी हिस्से को ध्वस्त कर रहा है। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार दक्षिण कोरिया की जासूसी एजेंसी ने बुधवार को पुष्टि की कि उसे इस बात के संकेत मिले हैं। रिपोर्ट के अनुसार 2000 में जब विभाजित देशों ने अपना पहला शिखर सम्मेलन आयोजित किया तो दक्षिण और उत्तर कोरिया दो रेलवे - ग्योंगुई और डोंगहे - को बहाल करने पर सहमत हुए। डोंघे रेलवे ने पूर्वी तटीय शहरों को भारी किलेबंद सीमा के पार जोड़ा। उन्होंने कहा कि उत्तर कोरिया एकीकरण के संदर्भों को मिटाने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग-उन ने साल के अंत में पार्टी की बैठक में अंतर-कोरियाई संबंधों को एक दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण दो राज्यों के बीच के रूप में परिभाषित किया था। योनहाप समाचार एजेंसी ने राष्ट्रीय खुफिया सेवा (एनआईएस) के हवाले से कहा कि जैसा कि हाल ही में संकेत मिले हैं कि डोंगहे रेलवे के ट्रैक के कुछ हिस्सों को ध्वस्त किया जा रहा है, हम स्थिति पर नजर रख रहे हैं।

इंडोनेशिया में सड़क दुर्घटना में पांच लोगों की मौत, तीन घायल

■ चालक का ध्यान भटक जाने के कारण यह हादसा हुआ

जकार्ता, 5 जून (एजेंसियां)। इंडोनेशिया के पश्चिमी प्रांत नॉर्थ सुमात्रा में एक राजमार्ग पर कार और ट्रक के बीच हुई टक्कर में तीन शिशुओं सहित पांच लोगों की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए। प्रांत के यातायात पुलिस प्रमुख मुजी एडियांतो ने बुधवार को बताया कि मंगलवार दोपहर को बिंजई और लांगसा को जोड़ने वाले राजमार्ग पर एक कार अनियंत्रित होकर ट्रक से टकरा गयी, जिसमें तीन शिशुओं सहित पांच लोगों की मौत हो गयी। उन्होंने बताया कि आठ लोगों को लेकर जा रही कार अचानक अनियंत्रित होकर ट्रक के पिछले हिस्से से टकरा गयी। माना जा रहा है कि कार चालक का ध्यान भटक जाने के कारण यह हादसा हुआ। उल्लेखनीय है कि दक्षिण पूर्व एशियाई देश में ओवरलोडिंग, सड़कों की खराब स्थिति और लापरवाही से गाड़ी चलाने के कारण अक्सर घातक सड़क दुर्घटनाएं होती रहती हैं।

इंडोनेशिया में भूस्खलन से रेत खनन श्रमिक की मौत, तीन लापता

जकार्ता। इंडोनेशिया के पूर्वी जावा प्रांत में नदी के किनारे के पास भूस्खलन से एक रेत

खनन श्रमिक की मौत हो गई और तीन अन्य लापता हो गए। लुमाजांग आपदा न्यूनीकरण एजेंसी की प्रमुख पैट्रिया द्वी हस्तियादी ने बुधवार को बताया कि खनिक लुमाजांग क्षेत्र के प्रोनोजोवो गांव में नदी के किनारे एक चट्टान के पास रेत खनन का काम कर रहे थे। उसी दौरान, रेत धंसने से उसके मलबे में एक श्रमिक की दबकर मौत हो गयी जबकि तीन लोग लापता हो गये। उन्होंने बताया कि बचावकर्मी अब भी मलबे के नीचे दबे तीन अन्य खनिकों को खोजने के प्रयास में लगे हुए हैं।

अरुण-3 जलविद्युत परियोजना की 'हेड रेस टनल' का प्रचंड ने किया उद्घाटन

काठमांडू, 5 जून (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री पुष्प कम दहल (प्रचंड) ने नेपाल में अरुण-3 जलविद्युत परियोजना की 'हेड रेस टनल' का उद्घाटन किया। इस परियोजना से देश में बिजली उत्पादन अगले साल शुरू होने की उम्मीद है।

बिजली मंत्रालय की बुधवार को जारी एक विज्ञपति के अनुसार प्रधानमंत्री प्रचंड ने नेपाल के संखुवासभा जिले में 900 मेगावाट अरुण-3 जलविद्युत परियोजना की 11.8 किलोमीटर लंबी हेड रेस टनल के लिए उत्खनन के पूरा होने के उपलक्ष्य में अंतिम विस्फोट कर सुरंग का उद्घाटन किया। इस परियोजना का निर्माण एसजेवीएन अरुण-3 पावर डेवलपमेंट कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (एसएपीडीसी) द्वारा किया जा रहा है, जो एसजेवीएन की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है। यह एसएपीडीसी एसजेवीएन और नेपाल सरकार के बीच एक महत्वपूर्ण सहयोग है, जिसका उद्देश्य अरुण नदी बेसिन में सतत जलविद्युत उत्पादन के माध्यम से क्षेत्रीय ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाना और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है।

■ देश में बिजली उत्पादन अगले साल शुरू होने की उम्मीद है

समारोह में नेपाल के ऊर्जा, जल संसाधन एवं सिंचाई मंत्री शक्ति बहादुर बसनेत, नेपाल के प्रांत-1 के स्वास्थ्य मंत्री राजेन्द्र कार्की, नेपाल में भारत के राजदूत नवीन श्रीवास्तव, एसजेवीएन के अध्यक्ष एवं मुख्य प्रबंध निदेशक सुशील शर्मा, नेपाल के निवेश बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुशील भट्ट, एसएपीडीसी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरूण धीमान, एसजेवीएन के कार्यकारी निदेशक राकेश सहगल उपस्थित थे।

अफगानिस्तान में 11 ऐतिहासिक स्थलों का जीर्णोद्धार

काबुल, 5 जून (एजेंसियां)। अफगानिस्तान के दक्षिणी और पूर्वी क्षेत्रों में 11 ऐतिहासिक स्थलों का जीर्णोद्धार किया जा रहा है। देश के सूचना एवं संस्कृति मंत्रालय के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। स्थानीय मीडिया आउटलेट टोलो न्यूज ने बुधवार को मंत्रालय के प्रवक्ता खुबैब गुफरान के हवाले से कहा, दक्षिणी कंधार प्रांत में दो और पश्चिमी हेरात प्रांत में स्थापित नौ परियोजनाएं, हाल ही में आए भूकंप से क्षतिग्रस्त हो गयी हैं और इनके ढह जाने का खतरा मंडराने लगा है। अब इन स्थलों का जीर्णोद्धार कार्य जारी है। उन्होंने बताया कि वित्तीय संसाधन और आवश्यक सुविधाएं निर्धारित होने के बाद 10 परियोजनाओं पर काम शुरू होगा। हाल ही में आई बाढ़ और भूकंपों ने अफगानिस्तान के अधिकांश भागों, विशेषकर पश्चिम और उत्तर में ऐतिहासिक स्थलों को प्रभावित किया है। अफगानिस्तान की कार्यवाहक सरकार देश में सांस्कृतिक विरासत स्थलों का संरक्षण और पुनर्निर्माण करने की योजना बना रही है।

आज का इतिहास

1674-छत्रपति शिवाजी महाराज का रायगढ़ के किले में राज्याभिषेक।
1748-पटियाला रियासत के महाराजा अमर सिंह का जन्म।
1916-अमेरिका के ईस्ट क्लीवलैंड में महिलाओं को वोट का अधिकार दिया गया।
1919-फिनलैंड ने बोलशेविक के खिलाफ युद्ध की घोषणा की।
1930-हिन्दी फ़िल्म अभिनेता सुनील दत्त का जन्म।
1967-इजरायली सेना ने गाजा पर कब्जा किया।
1968-दिल्ली के सातवें मुख्यमंत्री तथा भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता अरविंद केजरीवाल का जन्म।
1981-बिहार की बाघमती नदी में एक ट्रेन गिर जाने से क़रीब 800 लोगों की मौत।
1982-कर्नाटक के 8वें मुख्यमंत्री डी. देवराज अर्स का निधन।
1986-कन्नड़ भाषा के प्रसिद्ध लेखक मस्ती वेंकटेश अयंगर का निधन 6 जून 1986 को हुआ।
1988-भारतीय गायिका नेहा कक्कड़ का जन्म 6 जून 1988 को हुआ।
1988-भारतीय क्रिकेटर अजिंक्य रहाणे का जन्म 6 जून 1988 को हुआ।
1995-पाकिस्तान में बाल अपराधियों को कोड़े मारने अथवा उनकी फ़ांसी की सज़ा प्रतिबंधित की गई।
1997-बैंकॉक में भारत, बंगलादेश , श्रीलंका एवं थाईलैंड ने %बिस्टेक% नामक आर्थिक सहयोग समूह का गठन किया।
2001-नेपाल के शाही परिवार पर गोलियाँ दीपेन्द्र ने ही चलाई थीं, प्रत्यक्षदर्शी रिश्तेदार राजीव शाही का प्रेस में बयान।
2002-इजरायली सेना ने रामल्ला में फ़िलिस्तीनी नेता यासिर अराफात के मुख्यालय पर हमला किया।
2004-भूतपूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन का निधन।

बयान *30 जून को दोहा में संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित की जा रही बैठक*

'खोए हुए अवसरों' का देश है अफगानिस्तान : संयुक्त राष्ट्र अधिकारी

संयुक्त राष्ट्र, 5 जून (एजेंसियां)। अफगानिस्तान में तालिबान का कठोर शासन है, जो हर रोज मानवाधिकारों का उल्लंघन करता है। संयुक्त राष्ट्र के अंडर-सेक्रेटरी-जनरल मार्टिंग ग्रिफिथ्स ने कहा कि यह खोए हुए अवसरों का देश है। ग्रिफिथ्स ने कहा कि मुझे लगता है कि हमने तालिबान के साथ आगे बढ़ने के कुछ अवसर खो दिए हैं। उन्होंने कहा कि उनके साथ जुड़ने का एक निश्चित तरीका है, मुझे लगता है कि उनके आदेशों और फैसलों को देखते हुए हमने मौका खो दिया है।

उन्होंने कहा कि हम ऐसा कोई फॉर्मूला नहीं बना पाए जो हमें तालिबान के साथ व्यापक रूप से जोड़ सके।

उन्होंने कहा कि निवेश और अर्थव्यवस्था पर ध्यान देने से अफगानिस्तान प्रगति करेगा और प्रमुख सदस्य देशों को इसे आगे बढ़ाना होगा। ग्रिफिथ्स ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि 30 जून को दोहा में संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित की जा रही बैठक अफगानिस्तान के लिए अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण का एजेंडा तय करेगी। जब 2021 में अमेरिका ने अफगानिस्तान से अपने सैनिकों को वापस बुला लिया और तालिबान ने सत्ता संभाली, तो उन्होंने कहा कि हमें तब कुछ उम्मीदें थीं, कुछ लिखित प्रतिबद्धताएं थीं। घर से बाहर काम करने वाली लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा के खिलाफ तालिबान के आदेशों के बारे में उन्होंने कहा कि और वे उम्मीदें धराशायी हो गई हैं। महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ एक के बाद एक आदेश आए हैं उन्होंने कहा कि ये 20 साल के खोए अवसरों का परिणाम है। 30 साल से अधिक समय तक मानवीय कार्य करने के बाद इस महीने के अंत में संयुक्त राष्ट्र छोड़ने वाले ग्रिफिथ्स ने कहा कि दुनिया की स्थिति अब उस समय से भी बदतर है जब उन्होंने पद संभाला था।

■ मुझे लगता है कि हमने तालिबान के साथ आगे बढ़ने के कुछ अवसर खो दिए : मार्टिंग ग्रिफिथ्स

सुरक्षा परिषद द्वारा प्रस्ताव पारित होने के बावजूद हिंसा जारी रहने के बारे में उन्होंने कहा, भगवान जानता है कि यह एक अच्छी दुनिया नहीं है। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र की स्थापना युद्ध के अभिशाप को समाप्त करने के लिए की गई थी, लेकिन हम संघर्ष को समाप्त करने में सफल नहीं हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसा इसलिए है क्योंकि संघर्ष को समाप्त करने के लिए बातचीत और संवाद नहीं हो रहा है।

दुनिया को जानें

चीन के नागरिक ड्रोन ने दुनिया का पहला कार्गो परिवहन पूरा किया

बीजिंग, 5 जून (एजेंसियां)। प्रसिद्ध ड्रोन कंपनी शेन चेन शहर के डीजे-इनोवेशन टेक्नोलॉजी कंपनी लिमिटेड ने बुधवार को यह घोषणा की कि कंपनी ने हाल ही में अन्य संस्थानों की सहायता से चुमुलांगमा चोटी क्षेत्र के नेपाली पक्ष पर नागरिक ड्रोन का पहला उच्च-ऊंचाई परिवहन परीक्षण पूरा किया। यह समुद्र तल से 5,300 मीटर से 6,000 मीटर के बीच के मार्ग पर नागरिक ड्रोन का दुनिया का पहला राउंड-ट्रिप परिवहन परीक्षण भी है। इसने नागरिक ड्रोन के उच्चतम ऊंचाई पर परिवहन का रिकॉर्ड बनाया है। बताया गया है कि सफल परीक्षण के बाद, नेपाल में स्थानीय ड्रोन ऑपरेटिंग कंपनी ने 22 मई को चुमुलांगमा चोटी क्षेत्र में ड्रोन ले जाने की एक नियमित परिवहन परियोजना शुरू की, जिसमें मुख्य रूप से चुमुलांगमा चोटी क्षेत्र के दक्षिणी ढलान पर बचे हुए कचरे की सफाई शामिल है। डीजे-इनोवेशन टेक्नोलॉजी कंपनी लिमिटेड के वरिष्ठ निदेशक और प्रवक्ता जांग शाओ नान ने कहा कि डीजे-इनोवेशन के वाहक विमान ने परीक्षण उड़ान के दौरान अत्यधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए मूल्यवान उड़ान पैरामीटर प्राप्त किए, जो पठारी क्षेत्रों में ड्रोन के उपयोग के लिए अधिक ठोस आधार तैयार करेगा।

प्रादेशिकी

मंडी की जीत के नायक बने जयराम, पल भर भी नहीं छोड़ा कंगना का साथ

मंडी। सियासी जंग थी और इस जंग में एक तरफ मायानगरी की रानी थी तो दूसरी तरफ सियासत का राजा था, लेकिन मायानगरी की रानी सियासत के राजा को शिकस्त देने में कामयाब हो गई। कारण बनी वह ढाल जिसने रानी को जिताने में अपनी अहम भूमिका निभाई और मैदान में जमकर पसीना बहाया। सभी किरदारों को आप बखूबी समझ ही गए होंगे। जी हां, सियासी जंग में कांग्रेस उम्मीदवार विक्रमादित्य सिंह की हार और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) प्रत्याशी एवं फिल्म अभिनेत्री कंगना रनौत की जीत का मुख्य श्रेय पूर्व मुख्यमंत्री एवं नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर को जाता है। कंगना के लिए सियासत की जंग पूरी तरह से नया अनुभव था, लेकिन जब उन्हें जयराम जैसे अनुभवी का साथ मिला तो जीत पक्की हो गई। श्री ठाकुर ने मंडी सीट पर जो मेहनत की उसका परिणाम सभी के सामने है। वो सभी 17 विधानसभा क्षेत्रों के ज्यादा से ज्यादा गांवों तक जाने और वहां की जनता से मिलकर अपनी बात रखने में कामयाब हुए।

उत्तराखंड के सहस्त्रताल ट्रैक पर 9 ट्रैकरों की मौत

- वायुसेना का रेस्क्यू ऑपरेशन जारी, 10 हुए एयरलिफ्ट
- एसडीआरएफ उत्तराखंड पुलिस की दो टीमें हुईं रवाना
- बुधवार सुबह पांच और ट्रेकर्स की मौत की खबर आई

■ अमरनाथ तिवारी

देहरादून, 5 जून (देशबन्धु)। सहस्त्रताल की ट्रैकिंग पर गया 22 सदस्यों वाले एक ट्रैकिंग दल के 9 सदस्यों की खराब मौसम के कारण मृत्यु होने की सूचना मिली है। बाकी सदस्यों के इस उच्च हिमालयी ट्रैक रूट में फंसने की सूचना थी। प्रशासन ने घटना की सूचना मिलते ही फंसे ट्रैकर्स को निकालने के लिए बुधवार सुबह टीम भेजी और वायु सेना ने भी रेस्क्यू ऑपरेशन में भाग लिया। फिलहाल 9 लोगों की मौत की खबर है। एसपी अर्पण यदुवंशी ने इसकी पुष्टि की है। वहीं, 10 ट्रैकर्स को एयरलिफ्ट कर देहरादून भेजा गया है, जबकि 3 स्थानीय वहीं फंसे हैं।

जिलाधिकारी ने फंसे ट्रैकर्स और

मृतकों के शवों को निकालने के लिए वायु सेना के माध्यम से हेली रेस्क्यू अभियान संचालित करने के लिए भी अनुरोध किया था। वायुसेना ने आज लापता ट्रैकर्स की तलाश के लिए रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। जिला प्रशासन के अनुरोध पर वायु सेना के दो चेतक हेलीकॉप्टर अभियान में लगाए गए। इसके साथ जिलाधिकारी ने इस घटना के संबंध में राज्य के सचिव आपदा प्रबंधन रंजीत सिन्हा सहित अन्य उच्चाधिकारियों को भी अवगत कराया।

उत्तरकाशी जिले के डीएम डॉ. मेहरबान सिंह बिष्ट ने बताया कि, सहस्त्रताल के ट्रैकिंग रूट पर फंसे ट्रेकर्स को रेस्क्यू करने के लिए एसडीआरएफ और वन विभाग के रेस्क्यू दल अलग-अलग दिशाओं से घटनास्थल के लिए रवाना हो चुके हैं। वन विभाग की दस सदस्यों की रेकी और रेस्क्यू टीम सिल्ला गांव से आगे निकल चुकी है। जिला मुख्यालय उत्तरकाशी से एसडीआएफ का दल भी बुधवार 5 जून को तड़के टिहरी जिले के बूढ़ाकेदार की तरफ से रेस्क्यू की कार्रवाई शुरू करने के लिए रवाना हो चुका है।

हिमालयन व्यू ट्रैकिंग एजेंसी, मनेरी के द्वारा मल्ला-सिल्ला-कुशकल्याण-

हेलीकॉप्टर से की जा रही एरियल रेकी

देहरादून। इस रेस्क्यू अभियान के समन्वय में जुटे पुलिस अधीक्षक अर्पण यदुवंशी ने बताया कि एसडीआरएफ की माउंटेनियरिंग टीम भी देहरादून से हेलीकॉप्टर से एरियल रेकी के रवाना होने वाली है। जिला अस्पताल उत्तरकाशी और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भटवाड़ी को अलर्ट मोड पर रखा गया है। आईटीबीपी मातली से भी 14 रेस्क्यूअर्स और एक डॉक्टर की टीम भी रवाना हो गई है। एनआईएम से भी बैक अप टीम रवाना की जा रही है। प्राप्त सूचना के अनुसार वायुसेना की हेली सर्च एवं रेस्क्यू टीम अभियान में शामिल होने के लिए जल्द रवाना हो सकती है। रेस्क्यू अभियान को लेकर जिले का आपदा कंट्रोल रूम मंगलवार शाम से ही निरंतर सक्रिय है। कंट्रोल रूम को मिली जानकारी के अनुसार टिहरी जिला प्रशासन द्वारा भी हेली रेस्क्यू हेतु अरदंगी हेलीपैड को अलर्ट मोड पर रखा गया है। यहां पर एम्बुलेंस टीम, लोनिवि और पुलिस की टीम तैनात की गई है। खोज व बचाव के लिए जनपद टिहरी से भी वन विभाग, एसडीआरएफ, पुलिस और स्थानीय लोगों की टीम रवाना की जा रही है। ये टीम घनसाली के पिंस्वाड से पैदल रवाना होगी।

10 ट्रैकर्स हुए रेस्क्यू

देहरादून। सहस्त्रताल में फंसे 10 ट्रेकर्स को रेस्क्यू कर लिया गया है। इनमें सौम्या कनाले (पत्नी विवेक उम्र 37), विनय (पुत्र कृष्णमूर्ति उम्र 47), एस शिवा ज्योति, अनिल जमतीगे, भारत बोम्मना गौडर, सुधाकर (पुत्र बीएस नायडू उम्र 64 वर्ष), स्मृति डोलस (वाइफ गुरु राज उम्र 40 वर्ष), शीना लक्ष्मी (उम्र 48 वर्ष), मधु किरण रेड्डी, जयप्रकाश बी एस समेत 10 ट्रेकर शामिल हैं।

सहस्त्रताल ट्रैक पर एक 22 सदस्यीय ट्रैकिंग दल 29 मई को सहस्त्रताल के ट्रैकिंग अभियान पर रवाना करवाया गया था। इस दल में कनार्टक के 18 सदस्य एवं महाराष्ट्र का एक सदस्य और तीन स्थानीय गाइड शामिल थे। इस ट्रैकिंग दल को आगामी 7 जून तक वापस लौटना था।

इसी दौरान मंगलवार 4 जून को अंतिम शिविर से सहस्त्रताल पहुंचने के दौरान मौसम खराब होने से यह दल रास्ता भटक गया। ट्रैकिंग एजेंसी ने खोजबीन करने पर इस दल के चार

सदस्यों की मृत्यु होने की सूचना दी। मंगलवार को ट्रैक में 13 सदस्यों के फंसे होने की जानकारी सामने आई। घटना की जानकारी पर बुधवार 5 जून सुबह सेनानायक एसडीआरएफ मणिकांत मिश्रा के निर्देशानुसार एसडीआरएफ की 2 हाई एल्टीट्यूड रेस्क्यू टीमों को घटनास्थल पर रवाना किया गया। देहरादून से 3 सदस्यीय टीम को हेली के माध्यम से रेस्क्यू के लिए भेजा गया। एक टीम को आवश्यक उपकरणों के बैकअप में रखा गया है। इसी बीच सुबह पांच और ट्रैकर्स की मौत की खबर आई। इस तरह ट्रैकिंग दल के 9 सदस्यों की मौत की खबर है। एसपी उत्तरकाशी ने इस खबर की पुष्टि की है।

ट्रेकर एजेंसी के भगवत सेमवाल ने बताया कि करीब साढ़े 14 हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित सहस्त्रताल पहुंचने के लिए भटवाड़ी ब्लाक के सोरा गांव से 45 किमी की लंबा सफर पैदल तय करना पड़ता है। इसके साथ ही इस ट्रैक के लिए मौसम आजकल अनुकूल रहता है। लेकिन जब हाइट पर पहुंचते हैं तो वहां पर तेज हवा के साथ ही धुंध फैल जाती है। इस कारण ट्रैकर रास्ता भटक जाते हैं। इसी कारण इस ट्रैकर दल के सदस्य भी रास्ता भटक गए होंगे।

सार संक्षेप

कैप्टन रणजीत सिंह राणा ने मुख्यमंत्री से भेंट की

हमीरपुर। जिला के सुजानपुर विधानसभा क्षेत्र से नवनिर्वाचित विधायक कैप्टन रणजीत सिंह राणा ने आज यहां मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू से भेंट की। यह एक शिष्टाचार भेंट थी। मुख्यमंत्री ने उन्हें राज्य विधानसभा के लिए निर्वाचित होने पर बधाई दी तथा सुजानपुर क्षेत्र के विकास के लिए हरसंभव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

कैप्टन राणा ने अपनी जीत का श्रेय सुजानपुर क्षेत्र की जनता तथा मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू के सशक्त नेतृत्व को दिया। उन्होंने कहा कि यह ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू के नेतृत्व वाली राज्य कांग्रेस सरकार की नीतियों तथा कार्यक्रमों की जीत है। उन्होंने कहा कि वह विधानसभा क्षेत्र के लोगों के हितों के संरक्षण, उनकी आकांक्षाओं तथा विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहेंगे। इस अवसर पर मुख्य संसदीय सचिव संजय अवस्थी, भोरंज विधानसभा क्षेत्र के विधायक सुरेश कुमार तथा ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष सुजानपुर राजिंदर वर्मा भी उपस्थित थे।

बस में लगी भीषण आग कंडक्टर की मौत, चालक समेत कई लोग घायल

नैनीताल। उत्तराखंड रोडवेज की बस उत्तर प्रदेश के नैनीताल-रामपुर हाईवे पर बिलासपुर के पास ट्रैक्टर ट्रॉली से टकरा गई। हादसे में रोडवेज के बस परिचालक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि चालक समेत 14 लोग गंभीर रूप से घायल हैं। सभी को उपचार के लिए रामपुर और बरेली के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बताया जा रहा है कि पांच यात्रियों की हालत नाजुक बनी हुई है। घटना देर रात की बताई जा रही है। जानकारी के मुताबिक, हल्द्वानी रोडवेज डिपो की बस हल्द्वानी से दिल्ली के लिए चली थी। देर रात करीब 11:30 बजे नैनीताल-रामपुर हाईवे पर बिलासपुर के पास बस की ट्रैक्टर ट्रॉली से जोरदार टक्कर हो गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बस के आगे का हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया। हादसे में बस में बैठे परिचालक मनीष मिश्रा की मौत हो गई। वहीं चालक समेत बस में सवार यात्रियों कुल 14 लोगों को चोटें आई हैं। सभी को रामपुर और बरेली के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इस भीषण हादसे में परिचालक मनीष मिश्रा की मौत से रोडवेज कर्मचारियों में शोक की लहर है। घटना की सूचना मिलने पर एआरएम हल्द्वानी सुरेंद्र बिष्ट मौके के लिए रवाना हो गए हैं। बस हल्द्वानी से रात 9 बजे दिल्ली के रवाना हुई थी जबकि घटना रात 11:30 बजे के करीब हुई है।

सुडोकू 6577 का हल

1	4	3	5	2	7	8	9	6
2	9	6	4	3	8	5	7	1
5	8	7	1	9	6	4	3	2
9	7	2	3	5	1	6	4	8
4	3	8	7	6	2	9	1	5
6	1	5	8	4	9	7	2	3
8	6	1	9	7	3	2	5	4
3	5	9	2	8	4	1	6	7
7	2	4	6	1	5	3	8	9

नवबहार से आईजीएमसी तक 295 करोड़ रुपए में बनेगी 890 मीटर लंबी सुरंग : मुख्यमंत्री

शहर में तारों को भूमिगत करने की परियोजना के लिए 23 करोड़ रुपए का प्रावधान

शिमला, 5 जून (देशबन्धु)। शिमला शहर में यातायात की समस्या के निवारण के लिए राज्य सरकार जाखू पहाड़ी के नीचे नव बहार पेट्रोल पंप के समीप से सर्कुलर रोड पर चिकित्सा महाविद्यालय शिमला तक 890 मीटर लंबी डबल लेन सुरंग का

■ सुरंग के निर्माण पर व्यय होंगे 295 करोड़ रुपए

निर्माण करेगी। यह बात मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने आज यहां लोक निर्माण विभाग की बैठक की अध्यक्षता करते हुए कही।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सुरंग का निर्माण 295 करोड़ रुपये की लागत से किया जाएगा, जिसमें से 100 करोड़ रुपये पहले ही जारी किए जा चुके हैं और इस माह के अंत तक निविदा प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार शिमला शहर में विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए गंभीरता से प्रयास कर रही है, ताकि स्थानीय लोगों के साथ-साथ यहां भ्रमण के लिए आने वाले पर्यटकों को बेहतरीन सुविधाएं प्रदान की जा सकें। उन्होंने लोक निर्माण विभाग को वाहनों का सुचारू आवागमन सुनिश्चित करने के लिए सर्कुलर रोड पर सभी बाधाओं को दूर करने के निर्देश दिए। इसके दृष्टिगत भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया एक सप्ताह के भीतर शुरू हो जाएगी। उन्होंने कहा कि सर्कुलर रोड़ को चौड़ा एवं सुदृढ़ करने के लिए 122 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। पार्किंग से संबंधित आधारभूत ढांचे को भी सुदृढ़ किया जाएगा तथा 3000 अतिरिक्त वाहनों के लिए पार्किंग सुविधा सृजित की जाएगी। ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि प्रदेश सरकार शिमला शहर में ओवरहेड तारों को हटाने की योजना पर दृढ़ता से कार्य कर रही है। इसके दृष्टिगत विद्युत केबल और ऑप्टिकल फाइबर के लिए भूमिगत डक्ट बिछाई जाएंगी। इस परियोजना के प्रारंभिक चरण में माल रोड, लोअर बाजार तथा मिडिल बाजार क्षेत्रों पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया जाएगा और लगभग 23 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे। उन्होंने लोक निर्माण विभाग को सभी परियोजनाओं में गुणवत्तापूर्ण कार्य सुनिश्चित करने के निर्देश दिये, ताकि प्रदेशवासियों को लाभान्वित किया जा सके। बैठक में लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह, विधायक हरीश जनारथा, प्रधान सचिव देवेश कुमार तथा डॉ. अमनदीप गर्ग, मुख्यमंत्री के सचिव राकेश कंवर, प्रमुख अभियंता लोक निर्माण एन.के. सिंह, प्रधान मुख्य अरण्यपाल, वन, राजीव कुमार तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

कांग्रेस के बड़े चेहरे वाली सीटों पर भाजपा को बढ़त मिली : रणधीर

शिमला, 5 जून (देशबन्धु)। भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं नैना देवी से विधायक रणधीर शर्मा ने कहा की कांग्रेस के बड़े चेहरे वाली सीटों पर भाजपा को बढ़त मिली है। इन लोकसभा चुनावो में जनता का रुख साफ भाजपा के प्रति दिखाई दिया है मुख्यमंत्री की लोकप्रियता कहीं नजर नहीं आई। शर्मा ने कहा

■ हिमाचल कांग्रेस के बड़े चेहरे पार्टी को लीड दिलवाने में कामयाब नहीं हो पाए

की हिमाचल कांग्रेस के बड़े चेहरे पार्टी को लीड दिलवाने में कामयाब नहीं हो पाए हैं। प्रदेश सरकार के तमाम मंत्रियों के विधानसभा क्षेत्रों में भाजपा प्रत्याशियों को लीड मिली है। इतना ही नहीं, कांग्रेस के स्टार प्रचारक जहां प्रचार जिन सीटों पर पहुंचे थे, वहां लीड भाजपा के खाते में गई है। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू के विधानसभा क्षेत्र नादौन में भी भाजपा को 2143 वोट की लीड मिली है यह साफ करता है जी जनता का क्या मूड है। नादौन में मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू के क्षेत्र में भाजपा को 2143 की लीड, विस अध्यक्ष कुलदीप पठानिया के भटियात में भाजपा को 13166 की लीड, स्वास्थ्य मंत्री मंत्री कर्नल धनीराम शांडिल के सोलन में भाजपा को 5116 की लीड, उद्योग मंत्री हर्षवर्धन चौहान

के शिलाई में भाजपा को 2317 की लीड, विक्रमादित्य सिंह के शिमला ग्रामीण में भाजपा को 6448 की लीड, मंत्री अनिरूद्ध सिंह के कुसुम्पटी में भाजपा को 5873 मतों की लीड, मंत्री यादविंद्र गोमा के जयसिंहपुर में 8833 भाजपा को लीड, मंत्री राजेश धर्माणी के घुमारवीं में 13573 की लीड विस उपाध्यक्ष विनय कुमार के रेणुकाजी में भाजपा को 4485 मतों की लीड मिली है। भाजपा के पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर के सराज में भाजपा को 14698, जबकि भाजपा प्रदेशाध्यक्ष राजीव बिंदल के नाहन विस क्षेत्र में भाजपा को 7939 मतों की बढ़त मिली है। स्टार प्रचारकों की सीटों पर बीजेपी को बढ़त हिमाचल में स्टार प्रचारक के तौर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और योगी आदित्यनाथ ने दौरा किया, जबकि कांग्रेस की ओर से राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा और राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे समेत अन्य नेताओं ने दौरा किया था।

सेना, ग्रामीणों व वैज्ञानिकों ने उत्तराखंड में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया

देहरादून, 5 जून (देशबन्धु)। विश्व पर्यावरण दिवस 2024 के अवसर पर, 127 इको टास्क फोर्स की कस्याली कंपनी ने टिप्पो गांव के ग्रामीणों, मृदा संरक्षण वैज्ञानिकों की टीम, रेंज वन कार्यालय भृगुखाल और हंस फाउंडेशन कस्याली के साथ मिलकर प्रभावी गतिविधियों की एक श्रृंखला आयोजित की जिसका उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण और जैव विविधता संवर्धन को बढ़ावा देना था। थलनदी पॉलिटेक्निक संस्थान, गर्ल्स इंटर कॉलेज थलनदी और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में योजना अनुसार विभिन्न गतिविधियां शुरू की गईं। वैज्ञानिकों ने मृदा संरक्षण को बढ़ावा देने, जैव विविधता को बढ़ाने और भविष्य के लिए मूल्यवान संसाधनों को सुनिश्चित करने के लिए वृक्षारोपण अभियान के लिए प्रजातियों का चयन किया। ग्रामीणों और छात्रों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए, विश्व पर्यावरण दिवस 2024 की मूलविषय 'भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखा रोधन' पर मेजर परशराम दलावी ने एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। व्याख्यान में सभी जीवित प्राणियों के लिए पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र की महत्वपूर्ण भूमिका और मानव लालच और अनियोजित विकास के कारण होने वाले गंभीर प्रभावों पर जोर दिया गया।

देश की जनता ने मोदी सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ दिया है जनादेश: राजीव महर्षि

■ अमरनाथ तिवारी

देहरादून, 5 जून (देशबन्धु)। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं मीडिया चेयरमैन राजीव महर्षि ने लोकसभा चुनाव परिणामों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि देश की जनता ने नरेन्द्र मोदी सरकार की जन विरोधी, किसान विरोधी, बेरोजगार विरोधी, महिला विरोधी एवं संविधान विरोधी नीतियों के खिलाफ जनादेश दिया है।

राजीव महर्षि ने कहा कि मोदी सरकार ने अपने 10 वर्ष के कार्यकाल में जिस प्रकार देश की जनता को अपनी हिटलरशाही से प्रताड़ित किया उसका जवाब देशवासियों ने देशभर में भाजपा के खिलाफ मतदान के रूप में दिया। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार के पिछले दो कार्यकालों में महंगाई और बेरोजगारी अपने चरम पर रही है। आम जरूरत की चीजों के दाम आसमान छू रहे हैं तथा आम आदमी

को दो जून की रोटी के लिए संघर्ष करना पड रहा है। देश में बेरोजगारों की फौज दिन प्रतिदिन बढती जा

■ मोदी सरकार के पिछले दो कार्यकालों में महंगाई और बेरोजगारी अपने चरम पर रही

रही है। मोदी सरकार ने अग्निवीर जैसी योजना लागू कर देश के नौजवानों का भविष्य चौपट करने का काम किया है। देश के किसानों को अपनी जायज मांगों के लिए खेती का काम छोड कर सडकों पर उतरना पड़ रहा है किसानों को उनकी फसलों के उचित दाम नहीं मिलने के कारण कर्ज में डूबा किसान आत्म हत्या को मजबूर हो रहा है। मोदी सरकार का बेटी पढाओ-बेटी बचाओ का नारा जुमला साबित हुआ है आज महिलाओं पर बढते अत्याचारों से महिलायें अपने को असुरक्षित महसूस कर रही हैं। उन्होंने कहा कि मोदी के शासन की हिटलरशाही से समाज का प्रत्येक वर्ग पीड़ित है। धर्म के नाम पर समाज में वैमनस्यता फैलाने की कुचेष्टा की जा रही है। विपक्ष द्वारा आम जनता की आवाज उठाने पर उनके खिलाफ केंद्रीय जांच एजेंसियों का बेजा दुरुपयोग किया गया। उन्होंने कहा कि देश की जनता मोदी की हिटलरशाही से निजात पाना चाहती थी इसीलिए उसने 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के खिलाफ जनादेश दिया है।

सेवानिवृत अधिकारियों के सेवा विस्तार पर रोक लगाए जाने की मांग

देहरादून, 5 जून (देशबन्धु)। उत्तराखंड में कांग्रेस ने धामी सरकार से शासन और विभागों से सेवानिवृत्त हो रहे अधिकारियों को सेवा विस्तार देने पर शीघ्र रोक लगाई जाने की मांग की है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष करन माहरा का कहना है कि प्रदेश संविदा अधिकारियों के भरोसे पर चल रहा है। सेवा विस्तार से वरिष्ठ और क्षमतावान अधिकारियों का मनोबल गिरता है। माहरा ने सेवानिवृत्त हो रहे अधिकारियों को सेवा विस्तार दिए जाने पर सवाल उठाते हुए राज्य सरकार के फैसले का विरोध किया है। माहरा ने कहा कि, सेवा विस्तार की वजह से योग्य अधिकारियों को मौका नहीं मिल पा रहा है। ऐसे में अगर नई जनरेशन को आगे नहीं आने देंगे तो कब तक सेवा विस्तार होता रहेगा। उन्होंने कहा कि जून और जुलाई में भी कई अधिकारियों के ट्रांसफर होने हैं। लेकिन पूरे दावे के साथ कह सकता हूं कि नए लोगों को आगे आने की प्राथमिकता नहीं दी जाएगी। बल्कि पुराने अधिकारियों को ही सेवा विस्तार दे दिया जाएगा। करन माहरा ने दावा किया

■ प्रदेश संविदा अधिकारियों के भरोसे पर चल रहा है: करन माहरा

कि इस बात की उनके पास पुख्ता जानकारी है। उन्होंने कहा कि शासन और विभिन्न विभागों में एक के बाद एक किए जा रहे अधिकारियों के सेवा विस्तार से ऐसा प्रतीत होता है कि प्रदेश में क्षमतावान योग्य अधिकारियों की कमी है।

उत्तराखंड में विश्व पर्यावरण दिवस की रही धूम

देहरादून, 5 जून (देशबन्धु)। विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर देहरादून के सहस्त्रधारा हेलीपैड के समीप बन रहे सिटी पार्क में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन

■ सीएम धामी ने जल संरक्षण बोर्ड बनाने की कही बात

किया गया। आयोजित इस कार्यक्रम में पहुंचे मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने वृक्षारोपण कर प्रदेश की जनता को संदेश दिया। सीएम धामी ने कहा हम सभी को पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण का संकल्प लेना चाहिए। सीएम धामी ने कहा उत्तराखंड राज्य हिमालयी राज्य होने की वजह से हमारी जिम्मेदारी और अधिक बढ़

जाती है, ऐसे में जनता को न सिर्फ वृक्षारोपण करना चाहिए बल्कि जल संरक्षण की दिशा में भी काम करना चाहिए। जिससे पर्यावरण संरक्षण किया जा सके। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सभी को शुभकामनाएं दी। सीएम धामी ने कहा यह दिवस हमारे लिए बहुत विशेष है। इस दिवस पर हम सभी संकल्प लेते हैं कि पर्यावरण के प्रति हम सब का जो दायित्व है उसका निर्वहन करेंगे। सीएम धामी ने कहा हम सभी की जिम्मेदारी बनती है कि वृक्षारोपण करें। जल का संचय करें। साथ ही प्रदेश के पारंपरिक जल स्रोत पर विशेष ध्यान दें। सीएम धामी ने कहा हमारे पारंपरिक स्रोत जीवंत रहे, इसमें वृक्षारोपण का भी एक बड़ा योगदान है। ऐसे में हम सभी को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण का संकल्प लेने के साथ ही जल संचय का भी संकल्प लेना चाहिए। ऐसे में उत्तराखंड सरकार भी जुलाई महीने में एक दिन पेड़ सेवा भी करेगी। जिसमें सभी लोगों को शामिल किया जाएगा। सीएम धामी ने कहा उत्तराखंड सरकार जल संरक्षण के लिए बोर्ड बना रही है।वहीं, एमडीडीए के वीसी बंसीधर तिवारी ने बताया एमडीडीए के तहत एक लाख पेड़ लगाए जाने का लक्ष्य रखा गया है। जिसका मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बुधवार को शुभारंभ कर दिया है। ऐसे में हरेला पर्व तक एक लाख वृक्ष लगाए जाएंगे।

मसूरी में स्वच्छता अभियान

देहरादून। मसूरी में विश्व पर्यावरण दिवस पर संत निरंकारी चौरिटेबल फाउंडेशन ने स्वच्छता अभियान चलाया। फाउंडेशन के लोगों ने प्लास्टिक बैग का प्रयोग ना करने अपील की। इस मौके पर सभी को कपड़े के बैग वितरित किये गए। मिशन के युवा स्वयंसेवक बीट प्लास्टिक पोल्यूशन की थीम पर नुक्कड़ नाटिकाओं की सुंदर प्रस्तुति देकर लोगों को पर्यावरण संकट के प्रति जागरूक करते नजर आये। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी निरंकारी मिशन ने भारतवर्ष के 18 पर्वतीय एवं पर्यटक स्थलों, जिनमें मुख्यत उत्तराखंड से मसूरी, ऋषिकेश, लैंसडाउन, नैनीताल, चकराता, भवाली, हिमाचल प्रदेश का शिमला, मनाली, धर्मशाला, गुजरात के सापुतारा, महाराष्ट्र के महाबलेश्वर, पंचमनी, खंडाला, लोनावाला, पन्हाला, सोमेश्वर, सिक्किम के गीजिंग शहर और कर्नाटक की नंदी हिल्स जैसे पर्वतीय स्थलों पर ये कार्यक्रम किया।

धामी ने मुख्यमंत्री आवास परिसर में किया वृक्षारोपण

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने विश्व पर्यावरण दिवस पर मुख्यमंत्री आवास परिसर में वृक्षारोपण किया। बुधवार को यहां मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री आवास परिसर में वृक्षारोपण किया। उन्होंने विश्व पर्यावरण दिवस की प्रदेशवासियों को शुभकामना दी। इस अवसर पर श्रीमती गीता पुष्कर धामी, विधायक किशोर उपाध्याय, फकीर राम टम्टा और पूर्व वन मंत्री दिनेश अग्रवाल ने भी वृक्षारोपण किया।

प्रादेशिकी

प्रतापगढ़ में दो सगे भाइयों समेत तीन की डूबने से मौत

प्रतापगढ़, 5 जून (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश में प्रतापगढ़ जिले के रानीगंज क्षेत्र में बुधवार को दो सगे भाइयों समेत तीन किशोरों की सई नदी में डूबने से मौत हो गई। पुलिस सूत्रों ने बताया कि मऊ गांव में आज दोपहर बाद तीन किशोरों की नहाते समय सई नदी में डूबकर मौत हो गई। डूबने वालों में दो सगे भाई और एक मौसेरा भाई है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने ग्रामीणों के सहयोग से शवों को बाहर निकाला। सभी मृतक पांच दिन पहले ननिहाल आये थे। उन्होंने बताया कि मऊ गांव निवासी संजय तिवारी के यहां पांच दिन पहले उनकी बहन सीमा निवासी तेलियाही रानीगंज अजगरा थाना लालगंज तथा संगीता निवासी कापा मधपुर थाना कन्हई अपने मायके बच्चों को लेकर आई थी।

वंचितों को सशक्त बना रहे योगी : मोदी

लखनऊ, 5 जून (देशबन्धु)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को उनके जन्मदिन पर शुभकामनाएं दी हैं। मोदी ने अपने एक्स हैंडल पर पोस्ट करते हुए योगी आदित्यनाथ ने दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की कामना की है। मोदी ने लिखा है कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को उनके जन्मदिन पर हार्दिक शुभकामनाएं। वे उत्तर प्रदेश की प्रगति और गरीबों तथा वंचितों को सशक्त बनाने के लिए काम कर रहे हैं। मैं उनके आने वाले समय में दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं। वहीं प्रधानमंत्री की शुभकामनाओं पर सीएम योगी ने भी आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा है कि आपकी आत्मीय एवं ऊर्जावान शुभकामनाएं मेरे लिए अथाह प्रेरणा का स्रोत हैं। आपके यशस्वी मार्गदर्शन में विरासत और विकास को संजोए आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश-विकसित उत्तर प्रदेश की संकल्पना साकार हो रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जन्मदिन पर गृहमंत्री अमित शाह, केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, पीयूष गोयल, किरण रिजिजू और साध्वी निरंजन ज्योति सहित विभिन्न प्रदेशों

■ मोदी ने योगी को जन्मदिन की दी शुभकामनाएं

के मुख्यमंत्रियों ने भी अपनी शुभकामनाएं दी हैं। इसमें अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडु, असम के सीएम हिमंता बिस्वा शर्मा, त्रिपुरा के सीएम प्रो. डॉ माणिक साहा, छत्तीसगढ़ के सीएम विष्णु देव साय, उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी, राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और मध्य प्रदेश के सीएम डॉ. मोहन यादव ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को जन्मदिन की शुभकामनाएं दी हैं।

वहीं मुख्यमंत्री ने भी सभी की शुभेच्छाओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा है कि आपकी शुभकामनाएं मुझे आत्मनिर्भर एवं विकसित उत्तर प्रदेश के लक्ष्य को पूर्ण करने में सदैव प्रेरणा प्रदान करेंगी।

विश्व पर्यावरण दिवस पर मुख्यमंत्री योगी ने किया पौधरोपण

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विश्व पर्यावरण दिवस-2024 और अपने जन्मदिन पर पौधरोपण किया। अपने सरकारी आवास 5, कालिदास मार्ग पर मुख्यमंत्री ने बुधवार सुबह चंदन का पौधा लगाया। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री) एसपी गोयल, अपर मुख्य सचिव (वन/पर्यावरण) मनोज कुमार सिंह, प्रमुख सचिव (मुख्यमंत्री) संजय प्रसाद, डीजीपी प्रशांत कुमार आदि मौजूद रहे। वहीं पर्यावरण दिवस पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने आॅफिशियल अकाउंट 'एक्स' पर लिखा-माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:। विश्व पर्यावरण दिवस पर आज लखनऊ में पौधरोपण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। धरती माता और प्रकृति के संरक्षण-संवर्धन के लिए उत्तर प्रदेश सरकार पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ सेवारत है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर पालिका अध्यक्ष ने किया पौधारोपण

मवाना, 5 जून (देशबन्धु)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर बुधवार को पालिका अध्यक्ष अखिल कौशिक की अध्यक्षता में नगर पालिका के

चंद्रभान वाटिका में पौधारोपण का आयोजन किया गया। इस मौके पर नगर अध्यक्ष व ईओ ने सयुक्त रूप से पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण और हरियाली को बढ़ावा देना का सदेंश दिया। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए बुधवार को नगर पालिका के चंद्रभान वाटिका में पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। पालिका अध्यक्ष अखिल कौशिक ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य स्थानीय स्तर पर हरित आवरण को बढ़ाना और पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना था। इस कार्यक्रम के तहत विभिन्न प्रकार के पौधे लगाए गए, जिनसे न केवल क्षेत्र की हरियाली बढ़ेगी, बल्कि वायुमंडल में ऑक्सीजन की मात्रा में भी सुधार होगा। नगर पालिका द्वारा इस तरह के आयोजनों से पर्यावरण संरक्षण के प्रति नागरिकों को प्रेरित किया जा रहा है। आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित किया जा सके।

योग विद्या को घर-घर पहुंचना विद्यार्थियों का कर्तव्य : राकेश

योग जागरूकता कार्यक्रम का किया गया शुभारंभ

मेरठ, 5 जून (देशबन्धु)। नित्य निशुल्क प्रयोगशाला के तत्वावधान में राजा महेंद्र प्रताप पुस्तकालय के प्रांगण में योग जागरूकता कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित के साथ किया गया इस अवसर पर योग विज्ञान विभाग के समन्वयक प्रोफेसर राकेश शर्मा परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त विद्यार्थियों आदित्य गॉड गोविंद अग्रवाल सुहानी सिंगल मेधावी चौहान कृष्ण कुमार प्रशासनिक व योजना अधिकारी डॉ धर्मेंद्र कुमार आदि ने किया योग विज्ञान विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर अमरपाल आर्य ने योग साधकों को स्वस्थ रहने में सूर्य नमस्कार की भूमिका वह आसनों का लाभ बताए सूर्य नमस्कार अपने आप में पूर्ण योग शैली है जो मानव शरीर को लचीला बनाने के साथ-साथ स्वस्थ रखता है सूर्य नमस्कार के साथ-साथ अन्य योगासन का अभ्यास कराया जिसमें चक्रासन धनुरासन वक्रासन गोमुखासन वह एक पैर बैठकर उठने की अपील की अपील की प्राणायाम में कपालभाति अनुलोम विलोम उज्जाई प्राणायाम भ्रामरी प्राणायाम तथा योग विज्ञान विभाग के समन्वयक प्रोफेसर राकेश कुमार शर्मा ने सभी योग साधकों से स्वस्थ रहने के लिए प्रात: काल उठकर योग अभ्यास कर ने के लिए अपील की उधर बीटेक के छात्र आदित्य कोड ने चक्रासन लगाकर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया उनका योग में अत्यधिक झुकाव है जो नित्य प्रति नित्य योगशाला के नियमित विद्यार्थी हैं और क्लब 60 संस्थापक महेश रस्तोगी जी एवं हरि विश्नोई जी ने सभी से पर्यावरण के लिए वृक्ष लगाने की अपील की इस अवसर पर योग विज्ञान विभाग के शिक्षक डॉक्टर नवज्योति सिद्धू सत्यम कुमार सिंह ईशा पटेल अंजू मलिक डॉक्टर कमल शर्मा साक्षी मावि योग विज्ञान विभाग के विद्यार्थी सौरभ राखी सिंह महिमा चौधरी स्वाति सिंह शिवानी ज्योति सैनी प्रतिज्ञा प्रियंका रितेश आदि का शिविर में अमूल्य योगदान रहा पर बड़ी संख्या में योग साधक योग शिविर में प्रतिभा कर रहे हैं

सार संक्षेप

शोभित विवि में एनसीसी कैडेट्स ने किया पौधारोपण

मेरठ। बुधवार को शोभित यूनिवर्सिटी मेरठ के 37 एनसीसी कैडेट्स ने 70 यू पी बटालियन एन सी सी मेरठ के तत्वावधान में (पुनीत सागर अभियान के तहत) विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्ष लगाओ एवं वृक्ष बचाओ अभियान के अंतर्गत शोभित यूनिवर्सिटी के एनसीसी कैडेट्स ने पर्यावरण को बचाने के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने एवं एवं वृक्ष बचाने की शपथ ली एवं आसपास के लोगों को पर्यावरण को बचाने के लिए जागरूक किया। इस विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रोफेसर डॉक्टर जयानंद, डीन एकेडमिक प्रोफेसर डॉक्टर अशोक गुप्ता, डीएसडब्ल्यू डॉ दिव्या प्रकाश, रजिस्ट्रार कर्नल (रि.) संजय कुमार, सहायक रजिस्ट्रार प्रोफेसर डॉक्टर गणेश भारद्वाज, प्रोफेसर विजय महेश्वरी एवं विश्वविद्यालय के एनसीसी प्रभारी लेफ्टिनेंट डॉक्टर कुलदीप कुमार एवं एनसीसी के छात्र-छात्राओं ने विश्वविद्यालय में वृक्षारोपण किया । इसके बाद कैडेट्स ने प्रभात फेरी निकालकर ग्राम दुलहेरा चौहान एवं विश्वविद्यालय के आसपास के क्षेत्र में जनता को पर्यावरण के महत्व के बारे में बताया। कार्यक्रम के पश्चात कैडेट्स को मिष्ठान्न वितरण किया गया। कार्यक्रम में शोभित विश्वविद्यालय एनसीसी के प्रभारी लेफ्टिनेंट डॉक्टर कुलदीप कुमार ने कैडेट्स को जीवन मे पर्यावरण के महत्व के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय में मौजूद सभी शिक्षक एवं कर्मचारी गण को पर्यावरण को बचाने की शपथ दिलाई गई और सभी के द्वारा आसपास वृक्षारोपण किया जाने का अभियान चलाया गया।

वरिष्ठ पत्रकार की मां का देहांत

किठौर/मेरठ । कस्बे के नामचीन वरिष्ठ पत्रकार चौधरी बाबर अली की मां का देहांत हो गया उनको सुपर्रदे खाक कर दिया गया। उनके तदफीन में क्षेत्र की जानी माने लोग शामिल रहे। बताते चलें वरिष्ठ पत्रकार बाबर अली कस्बा हापुड़ अड्डा निवासी की मां का बीमारी के चलते देहांत हो गया उनकी मां की उम्र लगभग 75 वर्ष थी। बुधवार को उनको जौहर की नमाज के बाद ईदगाह के सामने कब्रिस्तान में सुपर्रदे खाक कर दिया गया। उनके जनाजे की नमाज में पूर्व सांसद बाबू मुनकाद अली, फरमान अली, डॉ. तनवीर, पूर्व मैनेजर कामिल चौधरी, पूर्व नगर के अध्यक्ष शम्स परवेज, पूर्व अध्यक्ष मतलूब गौड़ , गयूर अली, अबरार भाई गंजे,आतिर आरिफ, आदि हजारों लोग शामिल रहे।

गंगा में डूबा युवक लापता

फर्रुखाबाद। दोस्तों के साथ गंगा नहानें गया युवक अचानक गंगा में डूब गया। उसकी तलाश की गई लेकिन खबर लिखे जानें तक उसका पता नही चल सका। थाना कादरी गेट के ग्राम नरायनपुर निवासी 18 वर्षीय ऋतिक पुत्र रिंकू सिंह सुबह 9 बजे दोस्तों के साथ पांचाल घाट पर गंगा नहाने गया था। नहाने के दौरान ऋतिक गंगा में डूब गया। जिसके बाद उसकी तलाश तेज हुई। कई घंटे तलाश के बाद भी उसका पता नहीं मिला। खबर लिखे जाने तक क्षेत्र की पुलिस गोता खोरों की मदद से गंगा में डूबे ऋतिक की तलाश में जुटी रही।

अपने जन्मदिन पर लगाए एक पौधा करें रखवाली : संगीता शुक्ला

प्रत्येक व्यक्ति हर वर्ष लगाए एक पौधा

मेरठ, 5 जून (देशबन्धु)। हर व्यक्ति को अपने जन्मदिन के अवसर पर एक पौधा लगाना चाहिए पौधा लगाने के साथ-साथ उसकी देखभाल भी इस व्यक्ति को करनी चाहिए यदि प्रत्येक व्यक्ति हर वर्ष एक पौधा लगाएगा और उसकी देखभाल करेगा तो पर्यावरण की समस्या काफी हद तक खत्म हो सकती है पर्यावरण भी हमारे जीवन का एक हिस्सा है इसीलिए उसे अपने जीवन का हिस्सा मानते हुए उसका रखरखाव करना चाहिए यह बात चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ की कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर योग विज्ञान विभाग में पौधा रोपण के दौरान कहीं। प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने कहा कि आज चारों तरफ कंक्रीट के जंगल बनते जा रहे हैं पर्यावरण की ओर हम लोग ध्यान नहीं दे रहे हैं। इसके फल स्वरुप वातावरण का तापमान दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है यदि पर्यावरण संरक्षण के लिए जरूरी कदम हमने नहीं उठाए तो वातावरण का तापमान और अधिक होगा। इस अवसर पर योग विज्ञान विभाग में फलदार व छायादार पौधे लगाए गए।

पाइप लाइन बिछाने को खोद डाली नगर की तमाम सड़कें

बन रही जाम और जलभराव की समस्या

मवाना, 5 जून (देशबन्धु)। अटल मिशन फॉर रिजूवेनेशन एंड अर्बन ट्रांसफॉर्मेशन योजना के तहत नगर में पानी के पाइप लाइन बिछाने के लिए जल निगम ने लाखों रुपये से बनी सड़कों को खोद दिया गया।

सड़कें रहागीरों के लिए आये दिन दुर्घटना का कारण बन रही हैं। नगर की अधिकाश सड़कें खुदी होने से नगरवासियो को दिक्कतों का दर्द झेलना पड़ रहा है। लेकिन निमार्णधीन कम्पनी है कि पालिका की बार बार चेतावनी के बाद भी सडकों को दुरूस्त करने को तैयार नही। बता दें कि अटल मिशन फॉर रिजूवेनेशन एंड अर्बन ट्रांसफॉर्मेशन योजना के तहत नगर क्षेत्र के हर घर को नल यानी पानी कनेक्शन देने की

■ राहगीर हो रहे दुर्घटना का शिकार कौन जिम्मेदार

■ 74 साल पुरानी सड़क खुदी तो थमा पहिया

तैयारियां हैं। योजना के तहत मवाना को पांच जोन में बांटा पांचों ओवरहेड टैंकों 15 नए नलकूप और 138 किमी. नई पाइप लाइन बिछेगी 16 हजार नये कनेक्शन दिये जाने की तैयारी है। लेकिन नगर में पाइप लाइन बिछाने के लिए सड़कों को खोदकर छोड़ देने का सिलसिला अभी थमा नहीं है। कभी जल निगम तो कभी अंडर लाइन डालने के लिए अन्य विभाग भी सड़कों को खोदकर छोड़ मलबा भी सड़क के किनारे डाल रखा है। इससे वाहन चालक व राहगीर आए दिन दुर्घटनाग्रस्त हो रहे हैं।

यह सड़कें क्षतिग्रस्त

नगर में में उखाड़ी गई सड़कों में 74 साल पूर्व सुभाष बजार में बनाई गई सडक भी शामिल है। साथ ही मिल रोड, रामबाग कालोनी, अशोक विहार, मास्टर कॉलोनी, मौहल्ला तिहाई, मौहल्ला कल्याण सिंह, मेरठ हस्तिनापुर रोड, मार्गपुर रोड, ढिकौली रोड, बुढढा पीर, फलावाद रोड आदि कई सड़कें शामिल हैं।

शोभित विवि ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजित

मेरठ, 5 जून (देशबन्धु)। शोभित विश्वविद्यालय के ईको क्लब एवं हेरिटेज क्लब द्वारा पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में एक ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी के मुख्य वक्ता भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के डॉ. अक्षत रहे , जिन्होंने प्राचीन काल में जल संरक्षण की पद्धतियों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्राचीन समय में जल संसाधनों के प्रबंधन और संरक्षण के लिए किस प्रकार के तकनीकों का उपयोग किया जाता था। गोष्ठी के दौरान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ0 वी0के त्यागी ने कहा कि आज बढ़ते तापमान का कारण प्रदूषण है।

पीएनबी ने विश्व पर्यावरण दिवस पर किया वृक्षारोपण

मेरठ, 5 जून (देशबन्धु)। पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय, मेरठ द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर

■ बैंक की विभिन्न शाखाओं व कार्यालयों के माध्यम से अधिकाधिक ने रोपे पौधे

वृक्षारोपण किया गया। साथ ही, पंजाब नैशनल बैंक की विभिन्न शाखाओं और कार्यालयों के माध्यम से अधिकाधिक पौधे लगाए गए। बैंक द्वारा अपने परिसर में स्थित भूमि तथा सार्वजनिक मार्गों के किनारे, सार्वजनिक उद्यानों एवं पार्कों, राजमार्गों, नहरों के किनारे आदि स्थानों पर वृहद वृक्षारोपण किया गया। मुख्य कार्यक्रम का आयोजन वेद व्यासपुरी, मेरठ स्थित पीएनबी के अंचल कार्यालय में किया गया। जिसमें अंचल प्रबंधक श्री संजीव कुमार दुबे, उप अंचल प्रबंधक श्री अमित ग्रोवर, श्री राज कुमार अग्रवाल व श्री राकेश शुक्ला तथा मंडल प्रमुख, मेरठ श्री बद्री विशाल सिंह, आंचलिक लेखा परीक्षा कार्यालय, मेरठ के उपमहाप्रबंधक अरविन्द कुमार तिवारी आदि वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा पीएनबी भवन परिसर और आस-पास की खाली जगह पर विभिन्न फलदार एवं छायादार वृक्ष लगाए गए। इसके अलावा बैंक की विभिन्न शाखाओं एवं कार्यालयों द्वारा भी इस अवसर पर बड़ी संख्या में वृक्षारोपण किया गया। जिनमें बड़ी संख्या में स्टाफ सदस्यों एवं ग्राहकों ने सोत्साह प्रतिभागिता की।

केनरा बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान में विश्व पर्यावरण दिवस

मेरठ, 5 जून (देशबन्धु)। केनरा बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान मेरठ में विश्व पर्यावरण दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे अतिथियों दुवारा पोंधा रोपण किया गया और विश्व पर्यावरण दिवस पर आपने विचार रखे गए। कमल, मुख्य प्रबंधक केनरा बैंक ने कहा की हमारे समाज और पृथ्वी की भलाई के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए हम 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाते हैं। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हम सभी का कर्तव्य है कि हम अपने पर्यावरण की रक्षा करें और उसे सुरक्षित रखें। अजय कुमार जोशी मुख्य प्रबंधक केनरा बैंक एसएमई शाखा, ने कहा की इस वर्ष की थीम पर्यावरणीय पुनर्बहाली एक स्थायी भविष्य की ओर है, जो हमारे ग्रह के स्वस्थ भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश देती है। इस मौके पर, हम सभी से अनुरोध करते हैं कि वे निम्नलिखित कदम उठाने का संकल्प लें। पेड़ लगाना पेड़ हमारे पर्यावरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वे न केवल कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं, बल्कि ऑक्सीजन का उत्पादन भी करते हैं, जो जीवन के लिए आवश्यक है। प्लास्टिक का उपयोग कम करें। प्लास्टिक प्रदूषण हमारे पर्यावरण के लिए एक बड़ी समस्या है।

एनसीसी कैडेट्स को सौंपी पर्यावरण संरक्षण की कमान

मवाना, 5 जून (देशबन्धु)। नगर स्थित कृषक इण्टर कालिज परिसर में 73 यूपी बटालियन एनसीसी, मवाना एवं वन विभाग हस्तिनापुर रेंज के संयुक्त तत्वावधान में विश्व पर्यावरण दिवस पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। अध्यक्षता एनसीसी कमान अधिकारी कर्नल मृदुल मित्तल एवं संचालन सूबेदार मौ. अय्यूब ने किया, जबकि मुख्य अतिथि हस्तिनापुर रेंज के रेंजर रविकांत चौधरी एवं प्रधानाचार्य देवेन्द्र कुमार रहे।

कमान अधिकारी कर्नल मृदुल मित्तल ने बताया कि सर्वप्रथम वन विभाग के विशेषज्ञों के सानिध्य में गोष्ठी का आयोजन किया गया। तत्पश्चात नगर मवाना में जागरूकता रैली निकालते हुए जन जागरूकता अभियान चलाया गया। रैली के समापन अवसर पर सभी कैडेट्स को पौधे सौंपते हुए पौधारोपण करने व उनकी अपने परिवार की तरह देखभाल करने का वचन दिलाते हुए पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई गई। वन रेंजर रविकांत चौधरी ने कैडेट्स को पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता, जीवन में पौधों का महत्व, पौधारोपण की विधि व देखभाल के तरीके समझाते हुए पर्यावरण संरक्षण में नैतिक भूमिका का निर्वहन करने के लिए प्रेरित किया।

■ कैडेट्स ने किया पौधारोपण वह निकली प्रभात फेरी

■ वन विभाग ने कैडेट्स को सोपे पौधे

आयोजन *विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण जागरूकता रैली का हुआ आयोजन*

पॉलीथीन मुक्त भारत बनाने में की प्रभावी योगदान देने की अपील

मेरठ, 5 जून (देशबन्धु)। बुधवार को राष्ट्रीय राजमार्ग बाईपास स्थित श्री वैंकटेश्वरा संस्थान, वीजीआई मेरठ एवं वन विभाग उत्तर प्रदेश सरकार के संयुक्त तत्वाधान में विश्व पर्यावरण दिवस पर वृहद वृक्षारोपण संगोष्ठी एवं पर्यावरण जागरूकता रैली का शानदार आयोजन किया गया, जिसमे वक्ताओं ने अधिक से अधिक वृक्षारोपण के साथ पालीथीन मुक्त भारत बनाने में सभी से अपना प्रभावी योगदान देने की अपील की।

इस अवसर पर संस्थापक अध्यक्ष डा. सुधीर गिरि ने कहा कि आज ये एक सुखद संयोग है कि आज ही उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का जन्मदिवस है।

इस अवसर पर हम सब मिलकर शपथ लेते है कि सभी सामाजिक आयोजन जैसे जन्मदिन, शादी की सालगिरह, नामकरण संस्कार आदि शुभ अवसरों पर एक दूसरे को उपहार के रूप में पौधे भेंटकर प्रधानमंत्री क्लीन इंडिया-ग्रीन इंडिया के सपने को साकार करने में अपना प्रभावी योगदान देकर राष्ट्र विकास में अपनी भूमिका का निर्वहन करेंगे। इस अवसर पर कनेक्ट पीपल्स विद नेचर विषय पर आयोजित

■ विश्व पर्यावरण दिवस पर हम सब शपथ लें कि सांस्कृतिक उत्सवों पर पौधरोपण व रक्तदान कर करेंगे शुभ अवसर को करेंगे सेलिब्रेट : डा. सुधीर गिरि

संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए वरिष्ठ वन अधिकारी नरेश कुमार ने कहा कि ग्लोबल वार्मिंग एवं तेजी से जलवायु परिवर्तन का एकमात्र कारण यह है कि आज पढ़े- लिखे समृद्ध लोग भी प्रकृति से दूर होते जा रहे है। हम सभी को मिलकर संरक्षण एवं संवर्धन के लिए काम करना होगा तभी 'विनाश' के बिना 'विकास' संभव है। वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी आई. एफ. एस. एस.पी. सिंह ने कहा कि

■ संस्थान परिसर व राजमार्ग के दोनों ओर 21 सौ पौधे रोपित कर दिलाई गई संरक्षण व संवर्धन की शपथ

उत्कृष्ट शिक्षा के साथ- साथ वैंकटेश्वरा अपने सामाजिक सरोकारों के लिए भी पूरे देश में जाना जाता है।

आज इसी पहल के साथ मेरठ एवं मुरादाबाद प्रभाग में वैंकटेश्वरा एवं वन विभाग के संयुक्त तत्वाधान में इक्कीस सौ पौधों को रोपित किया जा रहा है। वैंकटेश्वरा विवि/संस्थान के अब्दुल कलाम सभागार में विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित वृहद वृक्षारोपण संगोष्ठी एवं जागरूकता रैली का शुभारम्भ संस्थापक अध्यक्ष डा. सुधीर गिरि, प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी, वरिष्ठ आई. एफ. एस. श्री एस.पी. सिंह, वन विभाग के वरिष्ठ डिप्टी रेंजर अधिकारी सुमित राठी आदि ने सरस्वती माँ की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करके किया। इस अवसर पर ग्रुन एडवाइजर श्री आर.एस. शर्मा, कुलसचिव डा. पीयूष पांडेय, डा. सी.पी. सिंह, डा. राजेश सिंह, डा. दिव्या गिरधर, डा.एना ब्राउन, डा. मंजरी राणा, अनुषा कर्णवाल, सुमनदीप कौर, जनसंपर्क से प्रशांत दहिया, सौमिक बनर्जी आदि मौजूद रहे।

दम्पति नें जहर खाकर दी जान

फर्रुखाबाद, 5 जून (देशबन्धु)। दंपति की जहर खानें से हालत बिगड़ गई। दोनों को उपचार के लिए सीएचसी में भर्ती किया गया। जहां चिकित्सक नें पत्नी को मृत घोषित कर दिया। जबकि पति को हायर सेंटर सिफर कर दिया। उसकी रास्ते में मौत हो गई।

मृतका के स्वजनों नें दहेज के लिए हत्या किये जानें का आरोप लगाया। कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला पपड़ी निवासी 30 वर्षीय अजय कुमार उर्फ गोलू पुत्र प्रेमपाल व उसकी पत्नी उपासना नें जहरीला पदार्थ खाकर जान दे दी। अजय का बीते 31 जनवरी 24 को सिकन्दरपुर महमूद शमसाबाद निवासी सुरेश चन्द्रकी पुत्री उपासना के साथ हुआ था। घटना की सूचना पर मृतक उपासना के स्वजन मौके पर आ गए।

देशबन्धु नई दिल्ली, गुरुवार, 6 जून, 2024, डाक पंजीयन संख्या :- DL (ND)-11/6176/2015-16-17

झारखंड में दलबदलुओं और बागियों को जनता ने नकारा

रांची, 5 जून (एजेंसियां)। झारखंड की जनता ने लोकसभा चुनाव में दलबदलुओं और बागी प्रत्याशियों को साफ-साफ नकार दिया। ऐसे एक भी प्रत्याशी को चुनावी जंग में कामयाबी नहीं मिली। कल्पना सोरेन को छोड़ दें तो पारिवारिक विरासत के आधार पर चुनावी फसल काटने उतरे प्रत्याशियों को भी नाकामी हाथ लगी है। झारखंड में कांग्रेस की इकलौती सांसद रही गीता कोड़ा चुनाव के ऐलान के कुछ हफ्तों पहले भाजपा में शामिल हुई थीं। इसके बाद पार्टी ने उन्हें टिकट भी दिया। लेकिन, मतदाताओं को उनका पार्टी बदलना रास नहीं आया। गीता कोड़ा झारखंड के मुख्यमंत्री रह चुके मधु कोड़ा की पत्नी हैं। मधु कोड़ा ने उनके चुनावी अभियान में खूब पसीना बहाया, लेकिन आखिरकार गीता कोड़ी को सिंहभूम सीट पर अपनी सांसदी गंवानी पड़ी। उन्हें पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ रहीं झामुमो की जोबा मांझी ने 1 लाख 68 हजार 402 मतों से हराया। इसी तरह झारखंड मुक्ति मोर्चा छोड़कर भाजपा का दामन थामने वाली सीता सोरेन को दुमका में पराजय का सामना करना पड़ा। उन्हें झामुमो के नलिन सोरेन ने 22,527 मतों से शिकस्त दी।

हालांकि, सीता सोरेन पूरे राज्य में सबसे कम मतों के फासले से हारी हैं। सीता सोरेन ने अपने ससुर शिबू सोरेन और दिवंगत पति दुर्गा सोरेन की विरासत के आधार पर इस सीट पर दावा ठोंका था, लेकिन जनता की अदालत ने उनके इस दावे पर मुहर नहीं लगाई। हजारीबाग जिले के मांडू इलाके के भाजपा विधायक जयप्रकाश पटेल ने चुनाव का ऐलान होने के बाद पार्टी छोड़ दी और कांग्रेस में शामिल हो गए। कांग्रेस ने उन्हें हजारीबाग सीट पर उम्मीदवार बनाया। यहां भाजपा के मनीष जायसवाल ने 2 लाख 76 हजार 686 वोटों से हराकर संसद पहुंचने की उनकी हसरत नहीं पूरी होने दी। गिरिडीह में जयप्रकाश पटेल के ससुर मथुरा महतो झामुमो के टिकट पर चुनाव मैदान में उतरे थे। जनता ने दामाद जयप्रकाश और ससुर मथुरा दोनों की संसद पहुंचने की दावेदारी खारिज कर दी। झारखंड मुक्ति मोर्चा के दो विधायकों लोबिन हेंब्रम और चमरा लिंडा ने पार्टी से बगावत कर चुनाव लड़ा और दोनों की मुंह की खानी पड़ी। लोहरदगा सीट पर चमरा लिंडा तीसरे नंबर पर रहे और उन्हें मात्र 45 हजार वोट मिले। पहले माना जा रहा था कि चमरा लिंडा के मैदान में रहने से 'इंडिया' के प्रत्याशी की जीत की राह मुश्किल हो सकती है, लेकिन वह कोई खास असर छोड़ पाने में नाकाम रहे। राजमहल सीट पर लोबिन हेंब्रम ने भी अपनी ही पार्टी के प्रत्याशी के खिलाफ ताल ठोंकी थी। उन्हें मात्र 42,120 मतों के साथ तीसरे स्थान से संतोष करना पड़ा।

इसी तरह खूंटी सीट पर झामुमो से बगावत कर चुनाव लड़ने वाले पूर्व विधायक बसंत कुमार लोंगा को मात्र 10,755 वोट मिले और वह चौथे स्थान पर रहे। कोडरमा सीट पर भी पूर्व विधायक और झामुमो के नेता जयप्रकाश वर्मा बगावत कर निर्दलीय उतरे। उन्हें 23,223 वोट मिले और वह चौथे नंबर पर रहे। पारिवारिक विरासत के आधार पर बगैर किसी राजनीतिक अनुभव के सीधे चुनाव मैदान में लैंड कराई गईं दो कांग्रेस प्रत्याशियों अनुपमा सिंह और यशस्विनी सहाय को भी मतदाताओं ने स्वीकार नहीं किया। कांग्रेस विधायक अनूप कुमार सिंह की पत्नी अनुपमा सिंह को धनबाद सीट पर हार झेलनी पड़ी। उन्हें भाजपा के ढुल्लू महतो ने 3 लाख 31 हजार 583 मतों से हराया। इसी तरह पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय की पुत्री यशस्विनी सहाय को रांची सीट पर पराजय झेलनी पड़ी। उन्हें भाजपा के संजय सेठ ने 1,20,517 मतों से हराया।

यूपी में चुनाव से ठीक पहले पाला बदलने वाले दल-बदलुओं को हुआ भारी नुकसान

लखनऊ, 5 जून (एजेंसियां)। 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले जिन लोगों ने आखिरी समय में पार्टी बदली थी, उनके लिए यह चुनाव बुरी खबर लेकर आया। अधिकांश दल-बदलुओं को हार का सामना करना पड़ा है। दल-बदलुओं में सबसे बड़ा उलटफेर अंबेडकर नगर से रितेश पांडे का हुआ। चुनाव से ऐन पहले बीएसपी सांसद बीजेपी में चले गए, लेकिन समाजवादी पार्टी के लाली वर्मा से 1.37 लाख वोटों से हार गए। बीएसपी से कांग्रेस में आए दानिश अली भी अपनी सीट गंवाने वाले सांसद रहे।

दानिश अली अमरोहा सीट पर करीब 30,000 वोटों से हार गए। बीएसपी से टिकट नहीं मिलने पर भदोही के सांसद रमेश बिंद आखिरी समय में मिर्जापुर सीट से चुनाव लड़ने के लिए समाजवादी पार्टी में चले गए और 38,000 वोटों से हार गए। बीएसपी से बीजेपी में आए अन्य उम्मीदवारों में सुरेश सिंह, हितेंद्र कुमार, नंद किशोर पुंधीर, सारिका सिंह बघेल, सच्चिदानंद पांडे और

- दानिश अली अमरोहा सीट पर करीब 30,000 वोटों से हार गए
- भदोही के सांसद रमेश बिंद 38,000 वोटों से हारे

राजेंद्र सिंह सोलंकी शामिल हैं। ये सभी चुनाव हार गए। जिन लोगों को हार का सामना करना पड़ा उनमें विजेंद्र सिंह बिजनौर (आरएलडी से बीएसपी में गए), आबिद अली (एसपी से बीएसपी में गए) और माजिद अली (आजाद समाज पार्टी से बीएसपी में गए) शामिल हैं। हालांकि इस बीच पार्टी बदलने के बावजूद दो उम्मीदवार अपनी सीट बचाने में सफल रहे -- गाजीपुर से अफजाल अंसारी और श्रावस्ती से राम शिरोमणि वर्मा। दोनों नेता चुनाव से पहले बीएसपी से एसपी में चले गए थे। अफजाल अंसारी अपनी गाजीपुर सीट बचाने में सफल रहे, जबकि राम शिरोमणि वर्मा ने श्रावस्ती से बीजेपी के साकेत मिश्रा को हरा दिया।

महाराष्ट्र में भाजपा के खराब प्रदर्शन की फडणवीस ने ली जिम्मेदारी, इस्तीफे की कर डाली पेशकश

नई दिल्ली, 5 जून (एजेंसियां)। लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजे सामने आ चुके हैं। रिजल्ट में एनडीए को पूर्ण बहुमत मिल चुका है। ऐसे में अब तीसरी बार एनडीए सरकार बनाने की कवायद तेज हो गई है। इसी बीच महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इस्तीफे की पेशकश कर दी है। उन्होंने राज्य में पार्टी के खराब प्रदर्शन की जिम्मेदारी लेते हुए इस्तीफे की पेशकश की है। उन्होंने भाजपा हाईकमान से मांग की है कि उन्हें उनके पद से मुक्त किया जाए। ताकि वह पार्टी के लिए काम कर सकें। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि महाराष्ट्र में भारतीय जनता पार्टी की सारी जिम्मेदारी एक लीडर के रूप में मेरे ऊपर थी। महाराष्ट्र में एक प्रकार से हार मिली है और सीटें कम हुई है। इसकी पूरी जिम्मेदारी मेरी है, मैं इसे स्वीकार करता हूं। फडणवीस ने आगे कहा कि कहां कमियां रह गई है उसे ठीक करने की कोशिश करूंगा। मैं भागने

वाला आदमी नहीं हूं और जोरों से मैदान में उतरूंगा। हमारी पूरी पार्टी को साथ में लेकर हम नई रणनीति तैयार करेंगे। नई रणनीति करके हम लोग जनता के बीच जाएंगे। महाराष्ट्र के लोकसभा चुनाव के नतीजों की बात करें तो, महाराष्ट्र की 48 सीटों में से कांग्रेस ने 13, भाजपा ने 9 सीटों पर जीत हासिल की है। वहीं, शिवसेना (उद्धव ठाकरे) को भी 9 सीटों पर जीत प्राप्त हुई है। इसके अलावा शरद पवार के खेमे वाले एनसीपी को आठ, सीएम एकनाथ शिंदे की पार्टी को सात सीटों पर जीत मिली है। जबकि, अजित पवार को एक सीट और एक सीट निर्दलीय प्रत्याशी के खाते में आई। पिछले लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र में भाजपा ने 23 सीटों पर जीत हासिल की थी। लेकिन, इस बार भाजपा 9 सीटों पर जीत दर्ज कर पाई है।

पार्टी नेतृत्व से डिप्टी सीएम पद की जिम्मेदारी से मुक्त करने का अनुरोध करेंगे फडणवीस

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस पार्टी नेतृत्व से अनुरोध करेंगे कि उन्हें पद की जिम्मेदारी से मुक्त किया जाए। उन्होंने बुधवार को कहा कि वह इस साल सितंबर-अक्टूबर में होने वाले आगामी विधानसभा चुनावों की तैयारियों पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित करेंगे। देवेंद्र फडणवीस का यह बयान लोकसभा चुनाव में भाजपा के निराशाजनक प्रदर्शन के मद्देनजर आया है। देवेंद्र फडणवीस ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा, 'मैं वरिष्ठ नेताओं से अनुरोध करूंगा कि वे मेरा इस्तीफा स्वीकार करें।

गुड़गांव के सात लाख से ज्यादा लोगों का आभारी हूं : राज बब्बर

गुरुग्राम, 5 जून (एजेंसियां)। कांग्रेस उम्मीदवार राज बब्बर हरियाणा की गुड़गांव लोकसभा सीट जीतने में असफल रहे। लेकिन उन्होंने भाजपा के विजयी उम्मीदवार राव इंद्रजीत सिंह को कड़ी टक्कर दी। हरियाणा की राजनीति में पहली बार एंट्री के बावजूद राज बब्बर को 7 लाख 33 हजार 257 वोट मिले। जबकि, भाजपा उम्मीदवार राव इंद्रजीत सिंह को 8 लाख 8 हजार 336 वोट मिले। अभिनेता से राजनेता बने राज बब्बर ने बुधवार को

एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने वोट देने के लिए निर्वाचन क्षेत्र के लोगों का धन्यवाद किया। राज बब्बर ने कहा कि सबसे पहले मैं इस क्षेत्र के वोटरों और सात लाख से ज्यादा परिवारों का आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिन्होंने मुझ पर भरोसा किया और कांग्रेस को वोट दिया। लोग चाहते हैं कि उनके बुनियादी मुद्दों पर ध्यान दिया जाए। मैं निर्वाचन क्षेत्र में रहूंगा और लोगों की मांगों को पूरा करने के लिए हर संभव कोशिश करूंगा। गुड़गांव लोकसभा सीट से चुनाव लड़ने पर राज बब्बर की भाजपा ने बाहरी व्यक्ति के रूप में उनकी जमकर आलोचना की थी। राज बब्बर करीब 20 दिनों के अपने छोटे अभियान के दौरान अहीर बहुल क्षेत्र में अपनी पैठ बनाने में सफल रहे।

वाम मोर्चे के खराब प्रदर्शन पर सीएम विजयन ने कहा, आत्म निरीक्षण करेंगे

तिरुवनंतपुरम, 5 जून (एजेंसियां)। लोकसभा चुनाव में वाम मोर्चे के निराशाजनक प्रदर्शन के बाद केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने बुधवार को कहा कि इसका मंथन किया जाएगा। सीएम विजयन ने एक बयान में कहा, '2019 में भी हमें इसी तरह का जनादेश मिला था। हम इस जनादेश को स्वीकार करते हैं और हम आत्म मंथन करेंगे और जरूरी सुधार करेंगे, शासन में गुणवत्ता सुनिश्चित करेंगे। हम लोगों के बीच जाकर उन्हें यह बताएंगे कि सरकार को कैसे बदनाम किया जा रहा है।' लोकसभा चुनाव में वाम मोर्चे का प्रदर्शन बेहद खराब रहा। उसे सिर्फ एक सीट मिली जबकि कांग्रेस नीत यूडीएफ 18 सीटों पर विजयी रहा। भाजपा ने एक सीट पर जीत के साथ पहली बार राज्य में अपना खाता खोला। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के. सुधाकरन ने कन्नूर लोकसभा सीट पर बड़ी जीत के साथ अपनी सांसदी बरकरार रखी। उनकी जीत का अंतर बढ़कर एक लाख के पार हो गया। उन्होंने सवाल किया, 'आत्म चिंतन के लिए बचा ही क्या है?' सीएम विजयन और सुधाकरन दोनों कन्नूर से ताल्लुक रखते हैं। कॉलेज के दिनों से ही दोनों की प्रतिद्वंद्विता चली आ रही है। सीएम विजयन के बयान पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष वी.डी. सतीशन ने कहा कि त्रिशूर में भाजपा की जीत मुख्यमंत्री और भाजपा के बीच गुप्त समझौते का नतीजा है। सतीशन ने कहा, 'विजयन पूरे चुनाव अभियान के दौरान कांग्रेस और राहुल गांधी पर हमलावर रहे, लेकिन भाजपा या उसके नेताओं के खिलाफ उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। हम कुछ समय से भाजपा और विजयन के बीच गुप्त समझौता होने की जो बात कह रहे थे, त्रिशूर के नतीजों से अब वह सच साबित हो गया है।

'2019 में भी हमें इसी तरह का जनादेश मिला था। हम इस जनादेश को स्वीकार करते हैं और हम आत्म मंथन करेंगे और जरूरी सुधार करेंगे : पिनराई विजयन

हरियाणा में भाजपा की सीटें कम होने पर मनोहर लाल बोले

हार की समीक्षा की जाएगी

करनाल, 5 जून (एजेंसियां)। लोकसभा चुनाव के परिणाम अब सामने आ चुके हैं। हरियाणा की अगर हम बात करें तो यहां की दस में से पांच सीटों पर भाजपा और पांच सीटों पर कांग्रेस ने जीत दर्ज की है। हालांकि, भाजपा नेता, प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और करनाल लोकसभा सीट से प्रत्याशी मनोहर लाल की ओर से लगातार प्रदेश की सभी दस सीटों पर जीत का दावा किया जा रहा था। भाजपा की सीट कम होने पर अब प्रदेश के पूर्व सीएम मनोहर लाल का बयान सामने आया है। मनोहर लाल ने कहा कि जाहिर है कि जितना लक्ष्य निर्धारित किया था, उतना हासिल नहीं कर पाए, फिर भी जो परिणाम आए हैं उसे हम स्वीकार करते हैं। हार की वजहों की समीक्षा की जाएगी, प्रत्याशी की ओर से कमी रही हो या फिर पार्टी की ओर से या जनता की हमसे जो उम्मीदें थे, उसमें कोई कमी रह गई हो। इन सभी बातों पर समीक्षा की जाएगी और कमी दूर की जाएगी। राहुल गांधी के इंडी गठबंधन की जीत के दावे पर उन्होंने कहा कि वह जीत नहीं पाए हैं। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में तीसरी बार सरकार बनने जा रही है। कांग्रेस नेताओं ने गलत बयानबाजी कर जनता को भ्रमित करने का काम किया। उन्होंने कहा कि बिना किसी विवाद के चुनाव पूरा हुआ, उसके लिए प्रदेश की जनता, संस्थाओं और चुनाव आयोग का आभार। लोकसभा चुनाव के परिणाम सामने आने के बाद अब सरकार बनाने की कवायद तेज हो चुकी है। इसी कड़ी में पीएम मोदी ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की और केंद्रीय मंत्रिपरिषद के साथ अपना इस्तीफा दे दिया। राष्ट्रपति मुर्मू ने इस्तीफा स्वीकार कर करते हुए पीएम मोदी और केंद्रीय मंत्रिपरिषद से नई सरकार बनने तक पद पर बने रहने का अनुरोध किया है। बता दें कि लोकसभा चुनाव के परिणाम में इस बार भाजपा बहुमत से दूर है लेकिन एनडीए बहुमत के पार है।

जाहिर है कि जितना लक्ष्य निर्धारित किया था, उतना हासिल नहीं कर पाए, फिर भी जो परिणाम आए हैं उसे हम स्वीकार करते हैं। हार की वजहों की समीक्षा की जाएगी : मनोहर लाल

राजद न अपने वोट बैंक को सहेज सकी, न उसका 'ए टू जेड' फॉर्मूला सफल हुआ

पटना, 5 जून (एजेंसियां)। लोकसभा चुनाव में देश में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी भाजपा और बहुमत के साथ जनादेश प्राप्त कर एनडीए ने सरकार बनाने को लेकर कवायद शुरू कर दी है। बिहार में भी एनडीए विपक्षी दलों के महागठबंधन से बहुत आगे है। इस चुनाव के परिणाम पर गौर करें तो साफ दिखता है कि राजद के नेता तेजस्वी यादव ने चुनावी प्रचार में 251 चुनावी सभा कर भले सबसे आगे रहे हों, लेकिन, सही अर्थों में राजद इस चुनाव में न अपने वोट बैंक को सहेज सकी न उसका 'ए टू जेड' फॉर्मूला ही सफल हो सका। महागठबंधन में शामिल राजद ने रणनीति के तहत क्षेत्रीय जातीय समीकरण को ध्यान में रखते हुए प्रत्याशियों को चुनावी मैदान में उतारा था। तेजस्वी यादव ने चुनाव से पहले ही 'ए टू जेड' की चर्चा शुरू कर इस बात के संदेश दिए थे कि राजद सिर्फ एम-वाई यानी यादव-

मुस्लिम वोट बैंक पर नहीं, बल्कि सभी जातियों को साधने की कोशिश में है। टिकट बंटवारे में भी राजद नेतृत्व वाले महागठबंधन ने न केवल सवर्ण समाज के नेताओं को टिकट दिए, बल्कि कुशवाहा समाज के लोगों को भी प्रत्याशी बनाया। लेकिन, चुनाव परिणाम ने साफ कर दिया कि राजद का वोट बैंक एम-वाई समीकरण आंख मूंदकर राजद के साथ नहीं आया और विरोधी भी इस वोट बैंक में सेंध लगाने में सफल हुए। उजियारपुर से भाजपा के नित्यानंद राय की जीत ने साबित किया कि राजद का वोट बैंक दरक गया है। इसी तरह मधुबनी में भाजपा के अशोक यादव के खिलाफ राजद ने अली अशरफ फातमी को उतारकर अपने वोट बैंक को साधने की कोशिश की थी, लेकिन फातमी की हार ने इस समीकरण के दरकने के संकेत दे दिए। पूर्णिया के चुनाव परिणाम ने तो राजद के वोट बैंक के दावे की पूरी तरह पोल खोल कर रख दी। पूर्णिया में राजद नेता तेजस्वी यादव ने राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव को वोट नहीं देने की अपील तक अपने समर्थकों से की थी, लेकिन पप्पू यादव सफल हो गए। उन्होंने जदयू के संतोष कुमार कुशवाहा को हराया। राजद प्रत्याशी बीमा भारती को तीसरे नंबर पर संतोष करना पड़ा। झंझारपुर में बसपा के गुलाब यादव और नवादा में निर्दलीय विनोद यादव को मिला वोट भी इस बात के प्रमाण दिया कि राजद का यादव मतदाता अब आंख मूंदकर राजद के साथ नहीं है।

कांग्रेस की परफॉर्मेंस बेहतर : भूपेंद्र हुड्डा

रोहतक, 5 जून (एजेंसियां)। लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद एक तरफ सरकार बनाने की कवायद तेज हो चुकी है तो वहीं दूसरी तरफ सियासी बयानबाजियों की भी भरमार है। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने बुधवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस पर भाजपा को निशाने पर लिया। भाजपा के चार सौ

पार के नारे पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने कहा कि कहने से पार नहीं होता, इसके लिए काम करना होता है और लोगों का मन जीतना होता है। हरियाणा में कांग्रेस के बेहतर प्रदर्शन पर खुशी जाहिर करते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश में कांग्रेस की परफॉर्मेंस बेहतर रही है और कांग्रेस का मत प्रतिशत बढ़ा है। लोग कांग्रेस को समर्थन देने का मन बना चुके हैं। आगामी विधानसभा चुनाव में हरियाणा में कांग्रेस की सरकार बनेगी। मतदाताओं को बधाई देते हुए उन्होंने कहा है कि इस बात के लिए वह उनकी तारीफ करते हैं कि वह भाजपा के चाल में न फंसें। उन्होंने कहा कि हरियाणा में सीधा मुकाबला भाजपा और कांग्रेस के बीच था। इशारों-इशारों में इनेलो और जेजेपी को वोट कटवा बताते हुए उन्होंने कहा कि ये लोग 'वोट कटवा' थे और इनका मुकाबला नोटा से था। बोगस पोलिंग पर जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि हार के बाद ऐसे आरोप लगाए जाते हैं।

मध्य प्रदेश में लोकसभा चुनाव में नारी शक्ति का दिखा जलवा

भोपाल 5 जून (एजेंसियां)। लोकसभा चुनाव में मध्य प्रदेश में आधी आबादी की पूरी ताकत देखने को मिली। राज्य की 29

- राज्य की 29 सीटों में से छह पर महिला उम्मीदवारों ने जीत दर्ज की
- निर्वाचित सभी महिलाएं भारतीय जनता पार्टी कीं

सीटों में से छह पर महिला उम्मीदवारों ने जीत दर्ज की है। निर्वाचित होने वाली सभी महिलाएं भारतीय जनता पार्टी की हैं। राज्य में लगभग डेढ़ दशक बाद यह अवसर आया है जब 29 में से 6 महिलाएं लोकसभा के लिए निर्वाचित हुई हैं। इस बार भाजपा ने सागर से लता वानखेड़े, भिंड से संध्या राय, शहडोल से हिमाद्री सिंह, बालाघाट से भारती पारधी, धार से सावित्री ठाकुर और रतलाम से अनीता नागर सिंह चौहान को मैदान में उतारा था। इन सभी ने पार्टी की उम्मीदों के मुताबिक नतीजे दिए। बालाघाट ऐसा संसदीय क्षेत्र बना है जहां पहली बार कोई महिला सांसद चुनी गई है।

वहीं, सागर को 44 साल बाद महिला सांसद मिली है। राज्य में हुए इससे पहले के चुनावों पर गौर करें तो वर्ष 2009 में भी छह महिला सांसद लोकसभा के लिए निर्वाचित हुई थीं। इनमें दो कांग्रेस की और चार भारतीय जनता पार्टी की थीं। इसके अलावा वर्ष 2004 के चुनाव में दो और 2014 के चुनाव में पांच महिलाएं जीती थीं। इसी तरह वर्ष 2019 के चुनाव में चार महिला सांसद थीं। वर्ष 2024 के चुनाव में भाजपा ने शहडोल से हिमाद्री सिंह और भिंड से संध्या राय को दोबारा मौका दिया। वहीं, चार नए महिला चेहरों को मैदान में उतारा।

सभी छह सीटों पर परिणाम भाजपा के पक्ष में आए हैं। राज्य से निर्वाचित कई महिलाओं की राष्ट्रीय स्तर पर हनक रही है। इंदौर से लगातार आठ बार निर्वाचित होने वाली सुमित्रा महाजन लोकसभा की अध्यक्ष बनीं। वहीं, उमा भारती को अटल बिहारी वाजपेई की सरकार में स्थान मिला था। इसके अलावा प्रज्ञा ठाकुर भोपाल का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। इस बार भाजपा ने मध्य प्रदेश में इतिहास रचा है। पार्टी ने यहां की सभी 29 सीटों पर जीत दर्ज की। अब से लगभग छह महीने पहले हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा ने भारी बहुमत के साथ जीत हासिल कर सरकार बनाई थी और अब लोकसभा के चुनाव में भी उसने क्लीन स्वीप किया है।

आखिर यूपी में कैसे चला अखिलेश यादव का जादू सपा प्रवक्ता फकरुल हसन ने बताई अंदर की बात

लखनऊ, 5 जून (एजेंसियां)। लोकसभा चुनाव 2024 में समाजवादी पार्टी देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी उभरकर सामने आई, जिसने अखिलेश यादव को उत्साह से लबरेज कर दिया है। उत्तर प्रदेश में सपा के शानदार प्रदर्शन ने इंडिया गठबंधन में अखिलेश यादव की भूमिका अहम कर दी है। सपा प्रमुख का कहना है कि इस बार सूबे की जनता ने धार्मिक मुद्दों से हटकर अपने मुद्दों पर मतदान किया है। वहीं, सपा के शानदार प्रदर्शन पर प्रवक्ता फखरुल हसन चांद का बयान सामने आया है। उन्होंने कहा, 'सबसे पहले मैं देश की जनता को बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने इंडिया गठबंधन पर भरोसा जताया। इंडिया गठबंधन का समर्थन किया। समाजवादी पार्टी देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बनी है। हम उत्तर प्रदेश की जनता का आभार व्यक्त करते हैं। दलितों, मजदूरों और किसानों का आभार व्यक्त करते हैं। वहीं, इंडिया गठबंधन की शाम को बैठक है। जिसमें भविष्य की रणनीति पर फैसला किया जाएगा।' इसके अलावा, उन्होंने एनडीए द्वारा प्रदेश की सभी 80 लोकसभा सीटों पर जीत दर्ज करने के दावे पर भी तंज कसा।

उन्होंने कहा, 'सपने देखने में कोई टैक्स नहीं लगता है। देश में दूध और दही पर टैक्स है, लेकिन सपने देखने में कोई टैक्स नहीं है। आप सपने देख सकते हैं। वो सपने देख रहे थे, लेकिन जनता उनसे हकीकत में सवाल कर रही थी कि पेपर लीक क्यों हो रहा है? अग्निवीर जैसी योजनाएं क्यों लाई जा रही है? महंगाई क्यों बढ़ी हुई है? किसानों की आय अभी तक क्यों दोगुनी नहीं हुई? इन सवालों का जवाब भाजपा के पास नहीं है।

इस बार सूबे की जनता ने धार्मिक मुद्दों से हटकर अपने मुद्दों पर मतदान किया है, मैं देश की जनता को बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने इंडिया गठबंधन पर भरोसा जताया : फकरुल हसन, प्रवक्ता सपा

[अर्थ जगत]

पेट्रोल और डीजल की कीमतें अपरिवर्तित

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी जारी रहने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम अपरिवर्तित रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपए प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपए प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपए प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपए प्रति लीटर पर रहा।

सर्वाधिक बढ़ने वाले शेयर

इंडसइंड बैंक	7.75 प्रतिशत
टाटा स्टील	6.55 प्रतिशत
महिंद्रा एंड महिंद्रा	6.49 प्रतिशत
बजाज फाइनेंस	5.06 प्रतिशत
कोटक बैंक	4.89 प्रतिशत

सर्वाधिक घटने वाले शेयर

पेटीएम	4.86 प्रतिशत
ऑयल इंडिया	1.96 प्रतिशत
माइक्रोटेक	0.97 प्रतिशत
लॉर्सन एंड टुब्रो	0.10 प्रतिशत
बीपीसीएल	0.03 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	74,220
बिटुर	47,320
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	39,795
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	74400
वायदा	70,857
चांदी सिक्का लिवाली	900
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	67.77	78.57
पौड स्टर्लिंग	90.94	105.45
यूरो	76.54	88.78
चीन युआन	08.24	13.38

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2400-3000
गेहूं दडा	2600-2700
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

शुगर

चीनी एस	3740-3840
चीनी एम	4000-4100
मिल डिलीवरी	3620-3720
गुड़	4400-4500

दाल-दलहन

चना	6100-6200
दाल चना	7100-7200
मसूर काली	7550-7650
उड़द दाल	10600-10700
मूंग दाल	9850-9950
अरहर दाल	11700-11800

राजग की जीत से नीतिगत स्थिरता की उम्मीद : मूडीज

■ सीट घटने से सुधार धीमा पड़ने की आशंका

नई दिल्ली, 5 जून (एजेंसियां)। वैश्विक वित्तीय साख प्रमाणन एजेंसी मूडीज का कहना है कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लगातार तीसरी सरकार बनने से देश की आर्थिक नीतियों में निरंतरता बनी रहने की उम्मीद है लेकिन भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले गठबंधन का बहुमत इस बार हल्का होने से सुधारों की गति पर असर पड़ सकता है।

मूडीज ने लोकसभा चुनाव के मंगलवार को जारी नतीजों पर निवेशकों के लिए जारी एक सामान्य परचे में बुधवार को कहा कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) का बहुमत पहले से हल्का होने के दूरगामी आर्थिक और राजकोषीय सुधारों को लागू करने में देरी हो सकती है। नोट में कहा गया है कि सुधारों में देरी से राजकोषीय स्थिति को मजबूत करने के सरकार की योजना की प्रगति बाधित हो सकती है।

मूडीज ने इन परिणामों पर परचे में कहा है, हमें उम्मीद है कि खास तौर पर बुनियादी ढांचे पर खर्च और देश में विनिर्माण को बढ़ावा देने पर बजटीय जोर के संबंध में लागू नीतियों की निरंतरता,

हमारा आकलन है कि 2023-24 से 2025-26 के तीन साल के दौरान वास्तविक आर्थिक वृद्धि में लगभग सात प्रतिशत रह सकती है : मूडीज

मजबूत आर्थिक वृद्धि में सहायक होगी।

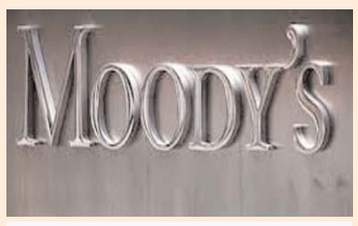

पर मूडीज का यह भी सोचना है कि राजग की जीत का अपेक्षाकृत कम अंतर, साथ ही संसद में भाजपा को पूर्ण बहुमत से पीछे रह जाने से अधिक दूरगामी आर्थिक और राजकोषीय सुधारों की प्रगति में देरी हो सकती है जो राजकोषीय मजबूती की राह पर प्रगति में बाधाएं उत्पन्न कर सकती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की शक्ति के बारे में मूडीज का अनुमान है कि भारत की आर्थिक शक्ति के बारे में हमारा आकलन है कि 2023-24 से 2025-26 के तीन साल के दौरान वास्तविक आर्थिक वृद्धि में लगभग सात प्रतिशत रह सकती है। इस दौरान बुनियादी ढांचे के विकास और डिजिटलीकरण पर जोर के कारण उत्पादकता में सुधार होगा और इन विकास प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप मध्यम अवधि में आर्थिक वृद्धि की संभावनाएं और ठोस होंगी। उल्लेखनीय है कि आम चुनावों में राजग को 543 सदस्यीय लोक सभा में 293 सीटों के साथ लगातार तीसरी बार बहुमत मिला है और श्री मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेने का इतिहास बनाने जा रहे हैं।

निर्यातकों के खातों में सीधे ड्यूटी ड्रॉबैक राशि का इलेक्ट्रॉनिक वितरण शुरू

नई दिल्ली। व्यापार को सुविधाजनक बनाने के प्रयास में केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) आज से पारदर्शी और कुशल तरीके से सीधे निर्यातकों के बैंक खाते में ड्यूटी ड्रॉबैक राशि का इलेक्ट्रॉनिक वितरण शुरू कर दिया। निर्यातकों के खातों में ड्यूटी ड्रॉबैक राशि का भुगतान सार्वजनिक वित्त प्रबंधन प्रणाली (पीएफएमएस) के माध्यम से स्वचालित रूप से किया जाएगा। यह कागज रहित सीमा शुल्क और बढ़ी हुई व्यापार सुविधा की दिशा में सीबीआईसी की एक और पहल है। इस नई कार्यक्षमता से ड्रॉबैक संवितरण तंत्र में मैन्युअल हस्तक्षेप को समाप्त करके ड्रॉबैक राशि के भुगतान में लगने वाले समय को कम करने और पारदर्शिता बढ़ाने की उम्मीद है। सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 की धारा 75 के तहत ड्यूटी ड्रॉबैक निर्यात वस्तुओं के निर्माण में उपयोग की जाने वाली किसी भी आयातित सामग्री या उत्पाद शुल्क योग्य सामग्री पर लगने वाले सीमा शुल्क में छूट देता है। शुल्क ड्रॉबैक दावों को सीमा शुल्क स्वचालित प्रणाली (सीएएस) के माध्यम से संसाधित किया जाता है, जिसे एक स्क्रॉल में गिना जाता है, कम्प्यूटरीकृत सीमा शुल्क ड्रॉबैक सलाह (सीसीडीए) मुद्रित की जाती है और निर्यातकों के खातों में शुल्क ड्रॉबैक राशि के भुगतान के लिए समेकित राशि के एकल चेक के साथ अधिकृत बैंक शाखा को भेजी जाती है। यह शुल्क ड्रॉबैक के वितरण में देरी का कारण बनता है।

कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट से भारत को होगा फायदा

नई दिल्ली, 5 जून (एजेंसियां)। अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में 4 डॉलर प्रति बैरल से अधिक की गिरावट आई है। अब यह चार महीने के निचले स्तर पर पहुंच गई है। ऐसा ओपेक प्लस द्वारा इस वर्ष उत्पादन में वृद्धि की अनुमति देने के बाद हुआ है। अमेरिका में पहले से ही कच्चे तेल का भंडार काफी ज्यादा है।

अगस्त के लिए बेंचमार्क ब्रेंट ऑयल वायदा बुधवार को 77.50 डॉलर पर आ गया। डब्ल्यूटीआई (वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट) पर जुलाई के कच्चे तेल का वायदा 73.22 डॉलर पर था। 7 फरवरी के बाद पहली बार तेल की कीमतें 80 डॉलर प्रति बैरल से नीचे आई हैं। यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा संकेत है। देश अपनी जरूरतों का लगभग 85 प्रतिशत आयात करता है और तेल की कीमतों में गिरावट से देश के आयात बिल में कमी आएगी। इससे चालू खाता घाटा (सीएडी) कम होगा और रुपया मजबूत

■ भारत का सीएडी कम होगा और रुपया होगा मजबूत

होगा। कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट से घरेलू बाजार में पेट्रोल, डीजल और एलपीजी के दाम भी कम होते हैं, जिससे देश में मुद्रास्फीति में कमी आती है।

सरकार ने यूक्रेन युद्ध के मद्देनजर पश्चिमी दबावों के बावजूद तेल कंपनियों को रियायती कीमतों पर रूस से कच्चा तेल खरीदने की अनुमति देकर देश के तेल आयात बिल को कम करने की कोशिश की है। रूस अब भारत को कच्चे तेल का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता बन गया है। इसने इराक और सऊदी अरब की जगह ली, जो पहले शीर्ष स्थान पर थे।

एमएसएमई व स्टार्टअप के लिए नई इनिशिएटिव का सरकार ने किया अनावरण

नई दिल्ली, 5 जून (एजेंसियां)। केंद्र सरकार की ओर से बुधवार को छोटे एवं लघु एंटरप्राइजेज (एमएसएमई) और स्टार्टअप का समर्थन करने के लिए नया

इनिशिएटिव का अनावरण किया गया है। इसमें सरकार 'इंडस्ट्री 4.0' के तहत नई और उभरती हुई टेक्नोलॉजी को अपनाने वाले एमएसएमई और स्टार्टअप का समर्थन करेगी। दूरसंचार विभाग (डीओटी) की ओर से इस नए प्रस्ताव को 'इंडस्ट्री 4.0 एमएसएमई का बेसलाइन सर्वे' नाम दिया गया है। यह 5जी और 6जी जैसी टेक्नोलॉजी के लिए उभरते हुए उद्योगों को तैयार करने के लिए है। इसका मकसद इंडस्ट्री 4.0 को अपनाने और आधुनिक टेक्नोलॉजी के उपयोग में एमएसएमई के सामने आने वाली चुनौतियों का आकलन करना होगा। डीओटी की ओर से कहा गया कि इस सर्वे का उद्देश्य जमीनी कार्य कर ऐसा मजबूत इकोसिस्टम तैयार करना है जो कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), आईओटी, क्लाउड कम्प्यूटिंग और 5जी और 6जी के एकीकरण के कारण मिलने वाले अवसरों का फायदा उठा सके। इसके अलावा इस सर्वे के तहत कम से कम 10 ऐसे सेक्टर को पहचानना है, जिससे एमएसएमई के परिदृश्य में विविधता लाई जा सके।

अरुण-3 जलविद्युत परियोजना की 'हेड रेस टनल' का प्रचंड ने किया उद्घाटन

■ परियोजना से अगले साल बिजली उत्पादन शुरू होने की उम्मीद

■ हर वर्ष 3,92.4 लाख यूनिट बिजली उत्पादन की क्षमता

काठमांडू, 5 जून (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री पुष्प कम दहल (प्रचंड) ने नेपाल में अरुण-3 जलविद्युत परियोजना की 'हेड रेस टनल' का उद्घाटन किया। इस परियोजना से देश में बिजली उत्पादन अगले साल शुरू होने की उम्मीद है।

बिजली मंत्रालय की बुधवार को जारी एक विज्ञपति के अनुसार प्रधानमंत्री प्रचंड ने नेपाल के संखुवासभा जिले में 900 मेगावाट अरुण-3 जलविद्युत परियोजना की 11.8 किलोमीटर लंबी हेड रेस टनल के लिए उत्खनन के पूरा होने के उपलक्ष्य में अंतिम विस्फोट कर सुरंग का उद्घाटन किया।

इस परियोजना का निर्माण एसजेवीएन अरुण-3 पावर डेवलपमेंट कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (एसएपीडीसी) द्वारा किया जा रहा है, जो एसजेवीएन की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है। यह एसएपीडीसी एसजेवीएन और नेपाल सरकार के बीच एक महत्वपूर्ण सहयोग है, जिसका उद्देश्य अरुण नदी बेसिन में सतत जलविद्युत उत्पादन के माध्यम से क्षेत्रीय ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाना और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है।

समारोह में नेपाल के ऊर्जा, जल संसाधन एवं सिंचाई मंत्री शक्ति बहादुर बसनेत, नेपाल के प्रांत-1 के स्वास्थ्य मंत्री राजेन्द्र कार्की, नेपाल में भारत के राजदूत नवीन श्रीवास्तव, एसजेवीएन के अध्यक्ष एवं मुख्य प्रबंध निदेशक सुशील शर्मा, नेपाल के निवेश बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुशील भट्ट, एसएपीडीसी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरूण धीमान, एसजेवीएन के कार्यकारी निदेशक राकेश सहगल उपस्थित थे। विज्ञप्ति के अनुसार एसजेवीएन के सीएमडी श्री शर्मा ने प्रधामंत्री श्री प्रचंड को परियोजना के विषय में जानकारी देते हुए कहा कि हेड रेस टनल का सफलतापूर्वक निर्माण इसके निर्माण में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है।

सार संक्षेप

टोरेंट फार्मा ने टेकेडा के साथ किया करार

नई दिल्ली। टोरेंट ग्रुप की प्रमुख कंपनी टोरेंट फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड ने पेट से संबंधित विकारों के उपचार के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दवा वोनोप्राज़न की बिक्री के लिए टेकेडा फार्मास्यूटिकल्स के साथ करार किया है। कंपनी ने बुधवार को जारी बयान में कहा कि टोरेंट अपने खुद के ट्रेडमार्क कबवी के तहत वोनोप्राज़न की बिक्री करेगी। इंडियन जर्नल ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी द्वारा प्रकाशित 2019 के एक अध्ययन के अनुसार, भारतीय आबादी में जीईआरडी का प्रचलन लगभग 8.2 प्रतिशत है, जबकि शहरी आबादी में यह लगभग 11.1 प्रतिशत है। वर्तमान में, पैंटोप्राज़ोल (प्रोटॉन पंप अवरोधक) जैसे उपचारों का उपयोग जीईआरडी के इलाज के लिए किया जाता है। काबवी जैसे पी-सीएबी की उपलब्धता भारतीय आबादी के लिए जीईआरडी के लिए नए और प्रभावी उपचारों को सुलभ बनाएगी।

रोहतक में जीएसटी भवन का उद्घाटन

नई दिल्ली। केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) के अध्यक्ष संजय कुमार अग्रवाल ने हरियाणा के रोहतक में सीजीएसटी रोहतक आयुक्तालय के एक आधिकारिक परिसर जीएसटी भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री अग्रवाल ने कहा कि रोहतक में सबसे पसंदीदा स्थानों में से एक पर स्थित, यह परियोजना हरियाणा के प्रमुख जिलों से कनेक्टिविटी के केंद्र में स्थित है और जीएसटी करदाताओं की सुविधा के लिए आसान और त्वरित पहुंच है। यह रोहतक बस स्टैंड से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर भी स्थित है। अमृत काल में परियोजना का उद्घाटन नए भारत की ताकत को दर्शाता है। अग्रवाल ने संतोष व्यक्त किया कि परियोजना को कोविड-19 महामारी के बावजूद आवंटित बजट के भीतर पूरा किया गया, जबकि उच्च गुणवत्ता सुनिश्चित की गई और कार्य स्थान के भविष्य की जरूरतों को पूरा किया गया। श्री अग्रवाल ने इस परियोजना के प्रबंधन के साथ-साथ विभाग के लिए बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचे के विकास की तैयारी के लिए मुख्य आयुक्त सीजीएसटी पंचकूला जोन के नेतृत्व में इस परियोजना में शामिल सभी अधिकारियों, एजेंसियों की प्रशंसा की।

सुरक्षा ग्रुप ने जेपी इन्फ्रोटेक का किया अधिग्रहण

नई दिल्ली। जमीन-जायदाद के विकास से जुड़ी सुरक्षा ग्रुप ने कर्ज में फुसी जेपी इन्फ्रोटेक का अधिग्रहण कर लिया है। इस कदम से 20,000 से अधिक मकान खरीदारों को राहत मिलने की उम्मीद है। समूह ने तीन सदस्यीय बोर्ड का गठन किया है और वह अटकी पड़ी आवासीय परियोजना के निर्माण के लिए जल्दी ही 125 करोड़ रुपए की इक्विटी पूंजी डालेगी। यह अधिग्रहण ऋण शोधन अपीलीय न्यायाधिकरण एनसीएलएटी के 24 मई के फैसले के बाद हुआ है। फैसले में जेपी इन्फ्राटेक के अधिग्रहण के लिए सुरक्षा रियल्टी की बोली को बरकरार रखा गया था।

राजग सरकार बनने की उम्मीद में बाजार ने लगाई छलांग

■ सेंसेक्स 3.20 प्रतिशत की उड़ान भरकर 74,382.24 अंक पर

■ निफ्टी 3.36 प्रतिशत उछलकर 22,620.35 अंक पर बंद

मुंबई, 5 जून (एजेंसियां)। लोकसभा चुनाव परिणाम के बाद सहयोगी दलों के समर्थन से केंद्र में एक बार फिर मोदी सरकार बनने की उम्मीद में हुई चौतरफा लिवाली की बदौलत पिछले दिवस के कोहराम से उबरकर शेयर बाजार ने आज ऊंची छलांग लगाई।

मतगणना में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अपने दम पर 240 सीटें जीती हैं। साथ ही अन्य सहयोगियों के समर्थन से केंद्र में एक बार फिर नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार बनाने की ओर अग्रसर है। इससे निवेशकों का भरोसा लौटा और उनकी निवेश धारणा मजबूत होने से बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 2303.19 अंक अर्थात 3.20 प्रतिशत की उड़ान भरकर 74,382.24 अंक हो गया। साथ ही नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 735.85 अंक यानी 3.36 प्रतिशत उछलकर 22,620.35 अंक पर बंद हुआ। इसी तरह दिग्गज कंपनियों में भी जमकर लिवाली हुई, जिससे बीएसई का मिडकैप 4.41 प्रतिशत की छलांग लगाकर 42,585.97 अंक और स्मॉलकैप 2.93 प्रतिशत की तेजी के साथ 46,277.55 अंक पर रहा।इस दौरान बीएसई में कुल 3918 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2597 में तेजी जबकि 1221 में गिरावट रही वहीं 100 में

कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह निफ्टी 48 कंपनियां मजबूत जबकि शेष दो कमजोर रहीं।बीएसई के सभी 20 समूहों में जबरदस्त लिवाली हुई। इससे दूरसंचार 6.01, धातु 5.36, कमोडिटीज 4.48, सीडी 4.29, ऊर्जा 2.38, एफएमसीजी 4.52, वित्तीय सेवाएं 4.10, हेल्थकेयर 3.45, इंडस्ट्रियल्स 1.53, आईटी 2.50, यूटिलिटीज 2.87, ऑटो 4.50, बैंकिंग 4.20, कैपिटल गुड्स 1.26, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स 3.56, तेल एवं गैस 2.31, पावर 2.90, रियल्टी 2.48, टेक 2.70 और सर्विसेज समूह के शेयर 5.74 प्रतिशत उछल गए।वहीं, विश्व बाजार का रुख मिलाजुला रहा। इससे ब्रिटेन का एफ़टीएसई 0.29 और जर्मनी का डैक्स 0.85 प्रतिशत चढ़ गया जबकि जापान का निक्केई 0.89, हांगकांग का हैंगसेंग 0.10 और चीन का शंघाई कम्पोजिट 0.83 प्रतिशत गिर गया।

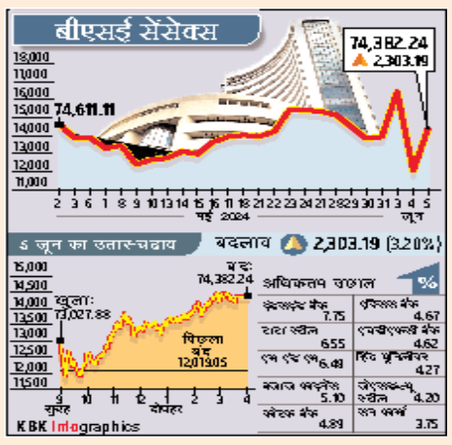

शुरूआती कारोबार में सेंसेक्स 949 अंक की तेजी लेकर 73,027.88 अंक पर खुला लेकिन बिकवाली होने से थोड़ी देर बाद ही 71,879.44 अंक के निचले स्तर तक टूट गया। वहीं, इसके बाद शुरू हुई लिवाली के बल पर यह लगातार बढ़ता हुआ कारोबार के अंतिम चरण में 74,534.82 अंक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। अंत में पिछले दिवस के 72,079.05 अंक के मुकाबले 3.20 प्रतिशत की मजबूती के साथ 74,382.24 अंक हो गया।

इसी तरह निफ्टी भी 244 अंक की बढ़त के साथ 22,128.35 अंक पर खुला और सत्र के दौरान 21,791.95 अंक के निचले जबकि 22,670.40 अंक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। अंत में पिछले सत्र के 21,884.50 अंक की तुलना में 3.36 प्रतिशत की छलांग लगाकर 22,620.35 अंक पर बंद हुआ। इस दौरान सेंसेक्स की सभी 30 कंपनियों के शेयर तेजी पर रहे। इनमें प्रमुख कंपनियों में इंडसइंड बैंक 7.75, टाटा स्टील 6.55, महिंद्रा एंड महिंद्रा 6.49, बजाज फाइनेंस 5.06, कोटक बैंक 4.89, एक्सिस बैंक 4.67, एचडीएफसी बैंक 4.62, हिंदुस्तान यूनिलीवर 4.27, जेएसडब्ल्यू स्टील 4.20, सन फ़ार्मा 3.75, आईटीसी 3.59, एशियन पेंट 3.56, नेस्ले इंडिया 3.38, आईसीआईआई बैंक 3.31, विप्रो 3.29, मारुति 3.02, एचसीएल टेक 2.98, भारती एयरटेल 2.94, एनटीपीसी 2.88, टाटा मोटर्स 2.85, इंफ़ोसिस 2.57, टेक महिंद्रा 2.48, एसबीआई 1.86, रिलायंस 1.74, टीसीएस 0.83 शामिल है।

हर 4 में से 3 बी2बी भारतीय मार्केटिंग लीडर्स जनरेटिव एआई का कर रहे इस्तेमाल : रिपोर्ट

नई दिल्ली, 5 जून (एजेंसियां)। हर चार में से तीन भारतीय बी2बी (बिजनेस टू बिजनेस) मार्केटिंग लीडर्स अपने काम के लिए जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एप्लीकेशन का इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे उनका कंटेंट क्रिएशन 43 प्रतिशत तक, लागत 39 प्रतिशत तक किफायती करने और उत्पादकता 38 प्रतिशत तक बढ़ाने में सफलता मिली है। बुधवार को आई एक रिपोर्ट में ये जानकारी दी गई है। प्रोफेशनल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म लिंक्डइन के मुताबिक, वैश्विक स्तर पर पेशेवरों की ओर से अपनी प्रोफाइल में एआई स्किल जोड़ने में 142 गुना की बढ़ोतरी देखने को मिली है। इसमें मार्केटिंग पेशेवर टॉप पर है।

पिछले साल वैश्विक स्तर पर चीफ मार्केटिंग ऑफिसर (सीएमओ) का पद संभालने वाले लोगों की लिंक्डइन प्रोफाइल में एआई स्किल अन्य पेशों के मुकाबले बड़ी संख्या में जुड़ी है। लिंक्डइन इंडिया में मार्केटिंग सॉल्यूशन के डायरेक्टर सचिन शर्मा का कहना है कि बी2बी एक काफी प्रतिस्पर्धा वाला क्षेत्र है। खरीदारों के बढ़ते प्रभाव के कारण मार्केटिंग करने वालों के लिए बड़े ग्रुप को टारगेट करना जरूरी हो जाता है। इससे ब्रांड की पहुंच बढ़ाने में सफलता मिलती है। सर्वे में 2,000 से ज्यादा बी2बी मार्केट लीडर्स ने भाग लिया था। इसके अलावा रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में 76 प्रतिशत बी2बी सीएमओ प्रतिस्पर्धी मांगों के कारण खरीदारों तक पहुंचने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। 94 प्रतिशत मार्केटिंग करने वाले लोगों ने माना है कि अच्छे संबंध से ही उनके बिजनेस में सफलता मिल सकती है।

खाद्य तेल सहित सभी जिंसों में रहा टिकाव

नई दिल्ली, 5 जून (एजेंसियां)। विदेशी बाजारों के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर उठाव कमजोर पड़ने से

आज दिल्ली थोक जिंस बाजार में खाद्य तेल समेत सभी जिंसों में टिकाव रहा।

तेल-तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में जून का पाम ऑयल वायदा 19 रिंगिट बढ़कर 3900 रिंगिट प्रति टन हो गया। वहीं, जून का अमेरिकी सोया तेल वायदा मामूली गिरावट के साथ 43.62 सेंट प्रति पौंड बोला गया।

इस दौरान घरेलू बाजार में खाद्य तेलों में टिकाव रहा। सरसों तेल, मूंगफली तेल, सूरजमुखी तेल, सोया रिफाइंड, पाम ऑयल और वनस्पति तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ।

गुड़-चीनी : मीठे के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान चीनी और गुड़ के भाव पड़े रहे। दाल-दलहन : दाल-दलहन बाजार में टिकाव रहा। इस दौरान चना, दाल चना, मसूर दाल, मूंग दाल, उड़द दाल और अरहर दाल में कोई बदलाव नहीं हुआ और वे पिछले स्तर पर पड़ी रही। **अनाज :** अनाज मंडी में भाव स्थिर रहे। इस दौरान चावल और गेहूं के दाम में कोई बदलाव नहीं हुआ।

मारुति सुजुकी के मानेसर संयंत्र में पायलट बायोगैस संयंत्र शुरू

■ संयंत्र पर 450 करोड़ रुपए निवेश करने की योजना

नई दिल्ली, 5 जून (एजेंसियां)। यात्री वाहन बनाने वाली देश की सबसे बड़ी कंपनी मारुति सुज़ुकी इंडिया लिमिटेड (एमएसआईएल) ने वित्त वर्ष 2024-25 में अपनी मानेसर स्थित संयंत्र में एक पायलट बायोगैस संयंत्र शुरू की और इस पर 450 करोड़ रुपए निवेश करने की योजना है। कंपनी ने कहा कि वह इस संयंत्र में संसाधनों के रूप में घरेलू खाद्य अपशिष्ट और नेपियर घास की अप्रयुक्त क्षमता का उपयोग करेगी। यह पहल नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रम 'वेस्ट टु एनर्जी' से संरेखित है, जो कि अपशिष्ट प्रबंधन हेतु सस्टेनेबल प्रैक्टिस एवं नवीन समाधानों के द्वारा कार्य किए जाने की दिशा में हमारी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती है।

हम 2030-31 तक अपनी उत्पादन क्षमता को लगभग 40 लाख तक ले जा रहे है : हिसाशी ताकेउचि

वित्त वर्ष 2023-24 में, कंपनी ने सौर ऊर्जा और बायोगैस जैसी रिन्यूएबल एनर्जी पहलों को शुरू करने के लिए 120.8 करोड़ रुपए का निवेश किया। वित्त वर्ष 2024-25 से शुरू होकर तीन वर्षों तक चलने वाली इस योजना के लिए कंपनी ने निवेश को लगभग चार गुना बढ़ाकर 450 करोड़ रुपए करने का संकल्प लिया है। इससे एमएसआईएल की पर्यावरणीय स्थिरता पहल को काफी प्रोत्साहन प्राप्त होगा।

इस पायलट प्लांट को प्रतिदिन 0.2 टन बायोगैस का उत्पादन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान बायोगैस का अनुमानित उत्पादन लगभग 1 लाख मानक घन मीटर होगा। इसके द्वारा प्रतिवर्ष लगभग 190 टन कार्बन उत्सर्जन को कम किया जा सकेगा। चक्रीयता के सिद्धांतों को अपनाते हुए, कंपनी कैंटीनों से निकलने वाले खाद्य अपशिष्ट और नेपियर घास को कच्चे माल के रूप में उपयोग करेगी। यह पायलट बायोगैस संयंत्र कंपनी की मानेसर स्थित फैसिलिटी की विनिर्माण प्रक्रियाओं के लिए ऊर्जा प्रदान करेगा। अवशिष्ट जैविक खाद का उपयोग बागवानी में प्रभावी ढंग से किया जाएगा, जिससे यह शून्य-उत्सर्जन मॉडल बन जाएगा।

यह पहल सस्टेनेबल प्रक्रियाओं, प्रभावी रूप से अपशिष्ट प्रबंधन, कार्बन फुटप्रिंट में कमी और ऊर्जा सुरक्षा को मज़बूत करने के प्रति मारुति सुज़ुकी की अटूट प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है।

खेल जगत

भारत-पाकिस्तान मुकाबले में जो दबाव संभालेगा, वो जीतेगा : आफरीदी

न्यूयॉर्क। पूर्व पाकिस्तानी कप्तान शाहिद आफरीदी ने नौ जून को होने वाले भारत-पाकिस्तान के टी 20 विश्व कप मुकाबले को बड़ा मैच बताते हुए कहा कि जो टीम इस मुकाबले में दबाव को बेहतर ढंग से संभालेगी, वह जीतेगी। आफरीदी ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के लिए अपने कालम में लिखा, जो अमेरिकी इस टूर्नामेंट को देख रहे हैं उन्हें पता होना चाहिए कि पाकिस्तान का भारत के खिलाफ मुकाबला जबरदस्त होने वाला है। मुझे भारत के खिलाफ खेलना पसंद है और मेरा मानना है कि यह खेलों में सबसे बड़ी प्रतिद्वंद्विता है। पूर्व आलराउंडर ने कहा कि जब मैं उन मैचों में खेला करता था तो मुझे भारतीय प्रशंसकों से भी प्यार और सम्मान मिलता था और यह दोनों टीमों के लिए मायने रखता है। भारत के खिलाफ यह दबाव को संभालने का मामला है। दोनों टीमों में इतनी प्रतिभा है जिन्हें उन्हें मैच के दिन एक साथ रखने की जरूरत है।

मेरा एकमात्र सपना है भारत के लिए विश्व कप जीतना : कुलदीप यादव

अश्विन ने मुझे गेंदबाजी में नए प्रयोग करने को कहा

■ सत्येन्द्र पाल सिंह

नई दिल्ली, 5 जून (देशबन्धु)। भारत के तुरुप के बाएं हाथ के लेग स्पिनर कुलदीप यादव का कहना है कि उनका एकमात्र सपना भारत के लिए विश्व कप जीतना है। यह बात कुलदीप यादव ने अपनी आईपीएल टीम दिल्ली कैपिटल्स के डीसी(दिल्ली कैपिटल्स) कैफे एपिसोड 2 में कही।

भारत के बाएं हाथ के लेग स्पिनर कुलदीप यादव ने वेस्ट इंडीज और अमेरिका में शुरू हुए आईसीसी नौवें टी-20 क्रिकेट विश्व कप में उसके आयरलैंड के खिलाफ पहले मैच से पहले कहा कि मैं 29 बरस हूं और मैं ज्यादा से ज्यादा समय तक क्रिकेट खेलना चाहता हूं। यह मेरा पहला टी-20 क्रिकेट विश्व कप है। मेरा सपना है कि भारत के लिए विश्व कप जीतना। यह लंबी प्रक्रिया है और बड़ा लक्ष्य है। मेरा मानना है कि अंतत: अहम है ट्रॉफी जीतना है और आप ट्रॉफियां जीतने के लिए ही खेलते हैं। इसीलिए मेरा अकेला सपना है कि विश्व कप जीतना है। क्रिकेट के बाद मैं उम्मीद करता हूं कि मुझे फुटबॉल कोचिंग का

क्रिकेट के बाद मुझे फुटबॉल कोचिंग का लाइसेंस मिलने का उम्मीद है : कुलदीप यादव, क्रिकेटर

लाइसेंस मिलने का उम्मीद है। मैं बेशक परफेक्ट नहीं हूं लेकिन मुझे इसके लिए काफी मेहनत करने की जरूरत है। उम्मीद है जब मैं क्रिकेट खेलना छोड़ूंगा तब फुटबॉल को वक्त दे पाउंगा और इसके लिए जरूरी प्रशिक्षण हासिल कर पाउंगा। मेरे कई मित्र हैं, जो फुटबॉल से जुड़े हैं, क्रिकेट खेलने के बाद में कुछ करना चाहता हूं। मैं फुटबॉल के लिए कुछ योगदान करन चाहता हूं। कुलदीप यादव ने भारत के अपने स्पिन जोड़ीदार रवींद्र जडेजा और रविचंद्रन अश्विन से जुगलबंदी की बाबत कहा कि जड्डू भाई (रवींद्र जडेजा) से मेरी दोस्ती एकदम सीधी है, हम दोनों क्रिकेट की बाबत बहुत कम बातचीत करते हैं। जहां ऐश भाई (रविचंद्रन अश्विन) की बात है हम दोनों मिलकर क्रिकेट की बाबत बहुत चर्चा करते हैं। अश्विन गेंदबाजी की बाबत बहुत नए विचार रखते हैं। इससे पहले मैं नए प्रयोग नहीं करता था, लेकिन ऐश भाई ने मुझे अपनी गेंदबाजी में नए प्रयोग करने को कहा। उन्होंने कहा कि मैं 2022 में आईपीएल में जब अपनी फ्रेंचाइजी दिल्ली कैपिटल्स से जुड़ा तो तब मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि बीते बरसों में मेरी गेंदबाजी में इतना बड़ा बदलाव आ जाएगा। मुझे आज भी याद है जब मैं पहले दिन चीफ कोच रिकी पॉन्टिंग से मिला तो उन्होंने बड़ी गर्मजोशी से मुझे गले लगाया। पॉन्टिंग ने मुझसे कहा हम तुम्हें अपनी दिल्ली कैपिटल्स टीम से जोड़ना चाहते हैं। पॉन्टिंग ने मुझसे कहा था कि मै तुम्हारे गेंदबाजी कौशल से वाकिफ हूं। पॉन्टिंग ने मुझे मेरा आत्मविश्वास पाने में मेरी मदद की। ऋषभ मेरे साथ संवाद किया। ऋषभ मेरे भाई हैं और उन्होंने मुझ पर भरोसा किया और मुझे समर्थन दिया।

हमारा लक्ष्य अपनी मेहनत को सकारात्मक नतीजों में बदलने का : नवनीत कौर

नई दिल्ली, 5 जून (देशबन्धु)। भारतीय महिला हॉकी टीम ने लंदन में एफआईएच प्रो लीग 2023-24 के यूरोपीय चरण में छह मैचों में बेल्जियम, इंग्लैंड और अर्जेंटीना में लंदन में चुनौती को झेलनी पड़ी है। भारतीय महिला हॉकी टीम ने यूरोपीय दौरे पर अपनी प्रतिद्वंद्वी टीमों को कड़ी चुनौती दी और इस अनुभव का लाभ उठाने का लक्ष्य रखते हुए आगे बढ़ी।भारतीय महिला हॉकी टीम प्रो लीग में यूरोपीय चरण में पहले मैच में अर्जेंटीना से 0-5 से हारी और उसके बाद बेल्जियम से करीबी मैचों में 0-2, 1-2 से हारी। भारत की टीम अपने रिवर्स मैच में जर्मनी से 0-3 से तथा मेजबान ब्रिटेन से 2-3 से हार गई।

■ भारतीय महिला हॉकी टीम ने यूरोपीय दौरे पर अपनी प्रतिद्वंद्वी टीमों को दी कड़ी चुनौती

भारतीय महिला हॉकी टीम की मजबूत आक्रामक मिडफील्डर उपकप्तान नवनीत कौर टीम के यूरोप दौरे में प्रो लीग में जर्मनी और ब्रिटेन के बाकी मैचों की रणनीति की बाबत कहा कि हमें एफआईएच प्रो लीग 2023-24 के यूरोपीय चरण में कड़ी चुनौती मिली, लेकिन हमने हर मैच से हमें कुछ सीखने को मिला। हार के बावजूद हमारी टीम ने बेल्जियम और ब्रिटेन के खिलाफ करीबी मैचों में जीवट के साथ बेहतर खेल दिखाया।अब जब हम प्रो लीग में जर्मनी और ब्रिटेन के खिलाफ अगले मैचों की तैयारी में जुटे है और इसमें हमारा ध्यान अपने पिछले मैचों के प्रदर्शन का विश्लेषण करने के साथ इस पर हमें कहां क्या सुधार की जरूरत है। हमारा लक्ष्य अपनी मेहनत को सकारात्मक नतीजों में बदलने का है। हमें अपनी क्षमता पर भरोसा है और हम मैदान पर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने को बेताब हैं। भारतीय महिला हॉकी टीम के एफआईएच प्रो लीग में फिलहाल 14 मैचों से आठ अंक हैं और उसे मौजूदा सीजन में बाकी दो मैच जर्मनी और ब्रिटेन के खिलाफ खेलने हैं। अब तक इस दौरे पर दो गोल दागने वाली भारत की उपकप्तान नवनीत कौर ने कहा कि हमारी एफआईएच प्रो लीग में अब तक की यात्रा चुनौतीपूर्ण रही है। हम बतौर टीम एक इकाई के रूप में खेलने, एक दूसरे के साथ का साथ निभाने और अपने मकसद को को प्रतिबद्ध हैं। हमारी टीम प्रतिबद्ध और जोश से भरी है और हम प्रो लीग का बढ़िया ढंग से समापन करना चाहते है। जहां तक बाकी दो मैचों की रणनीति का सवाल है तो हमारा फोकस अपनी रणनीति के साथ जरूरी तारमेल बैठा कर बाकी दो मैचों में मजबूत प्रदर्शन करने पर है।

सिंधू पहले राउंड में बाहर, तनीषा-अश्विनी जीतीं

जकार्ता, 5 जून (एजेंसियां)। दो बार की ओलम्पिक पदक विजेता पीवी सिंधु को इंडोनेशिया ओपन बीडब्लूएफ सुपर 1000 सीरीज टूर्नामेंट के पहले दौर में बुधवार को विश्व की 10वें नंबर की खिलाड़ी चीनी ताइपे

इंडोनेशिया ओपन बीडब्लूएफ सुपर

की वेन ची सू से हारकर बाहर हो जाना पड़ा। मौजूदा रैंकिंग में विश्व की 20 वें नंबर की खिलाड़ी सिंधु ने पहला गेम हारने के बाद वापसी करते हुए दूसरा गेम जीता लेकिन निर्णायक गेम में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। सिंधु ने 70 मिनट में यह मैच 15-21, 21-15, 14-21 से गंवा दिया। भारत के लिए महिला युगल में आज का दिन मिश्रित परिणाम वाला दिन रहा। तनीषा क्रेस्टो और अश्विनी पोनप्पा ने कनाडा की जैकी डेंट और क्रिस्टल लेई को 21-15, 21-15 से हराया जबकि ऋतुपर्णा पांडा और उनकी बहन श्वेतापर्णा को दक्षिण कोरियाई जोड़ी किम सो यंग और कोंग ही योंग से 36 मिनट में 12-21, 9-21 से हार का सामना करना पड़ा।

वॉर्नर 'नेचुरल विनर' हैं, जिन्हें आप टीम में रखना चाहेंगे : पोंटिंग

नई दिल्ली, 5 जून (एजेंसियां)। ऑस्ट्रेलियाई ओपनर डेविड वॉर्नर टी20 विश्व कप के बाद इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास ले लेंगे। इस बीच उनके हमवतन और दिग्गज क्रिकेटर रिकी पोंटिंग ने कहा कि हर कोई वॉर्नर जैसे खिलाड़ी को अपनी टीम में रखना चाहेगा क्योंकि वह एक नेचुरल विनर हैं। आस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर मौजूदा टी20 विश्व कप के बाद अपने अंतरराष्ट्रीय करियर को अलविदा कह देंगे। पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने इस अनुभवी बल्लेबाज को नेचुरल विनर करार देते हुए कहा कि 37 वर्षीय वार्नर के संन्यास लेने के बाद उनकी कमी रनों के अलावा और भी कई वजहों से खलेगी। वॉर्नर, वनडे और टेस्ट से पहले ही दूरी बना चुके हैं। उसके बाद उन्होंने यह भी साफ कर दिया था कि वह टी20 विश्व कप के बाद

इस फॉर्मेट से भी संन्यास ले लेंगे। वॉर्नर ने अपना आखिरी वनडे मैच भारत के खिलाफ वनडे विश्व क अंतिम वनडे मैच 2023 में भारत के खिलाफ विश्व कप जीत में था, जबकि उनके टेस्ट करियर का समापन पाकिस्तान के खिलाफ एक प्रभावशाली घरेलू श्रृंखला के साथ हुआ, जिसमें उनके नाम एक शतक और एक अर्द्धशतक शामिल था। ऑस्ट्रेलिया का टी20 विश्व कप अभियान समाप्त होने के साथ वॉर्नर ऑस्ट्रेलिया राष्ट्रीय टीम के लिए हर फॉर्मेट से रिटायर हो जाएंगे । वॉर्नर के रिप्लेसमेंट पर बोलते हुए, पोंटिंग ने फ्रेजर-मैकगर्क की शीर्ष क्रम में जगह बनाने की क्षमता पर विश्वास व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह वास्तव में एक बड़ा बदलाव होने जा रहा है, इसमें कोई संदेह नहीं है। उनके पास बहुत गहराई है। अगर डेविड के जाने के बाद फ्रेंजर-मैकगर्क को टी20 टीम में जगह नहीं मिलती है, तो इससे मुझे बहुत हैरानी होगी।

■ 37 वर्षीय वार्नर के संन्यास लेने के बाद उनकी कमी रनों के अलावा और भी कई वजहों से खलेगी : रिकी पोंटिंग

यूटीटी के इस सीजन में चार भारतीय कोच और तीन विदेशी डेब्यू करेंगे

मुंबई, 5 जून (एजेंसियां)। अल्टीमेट टेबल टेनिस (यूटीटी) अपने कोच ड्राफ्ट इवेंट के बाद 2024 के रोमांचक सीज़न के लिए पूरी तरह तैयार है। इस सीजन के लिए आठ फ्रैंचाइजी टीमों ने एक-एक विदेशी और भारतीय कोच का चयन किया है। इस साल दो नई टीमों-अहमदाबाद एसजी पाइपर्स और जयपुर पैट्रियट्स को जगह देकर लीग का विस्तार आठ टीमों तक कर दिया गया है। कोच ड्राफ्ट में महत्वपूर्ण चयन हुए, जिसमें बेंगलुरु स्मैशर्स ने नीदरलैंड की एलेना टिमिना को चुना, जो चार बार की ओलंपियन हैं और जिन्होंने पिछले सीज़न में गोवा चैलेंजर्स को जीत दिलाई थी। अहमदाबाद एसजी पाइपर्स ने अनुभवी फ्रांसिस्को सैंटोस को चुना है जो यूटीटी में पाँचवीं बार हिस्सा लेने के लिए तैयार हैं।

सार संक्षेप

अहमदाबाद के तीन रेलकर्मियों ने खेल प्रतियोगिताओं में जीते मेडल

अहमदाबाद। पश्चिम रेलवे में गुजरात के अहमदाबाद मण्डल के तीन रेलकर्मियों ने खेल प्रतियोगिताओं में मेडल जीते हैं। मंडल रेल प्रवक्ता ने बुधवार को बताया कि गुजरात खेल प्राधिकरण द्वारा गुजरात राज्य खेल महाकुंभ 2.0 तैराकी प्रतियोगिता हाल ही में हिम्मतनगर में आयोजित की गई जिसमें मण्डल रेल प्रबंधक कार्यालय में कार्यरत जयदेव जयेन्दु शुक्ल, देवांश परमार और स्नेहल पटेल ने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में मेडल जीतकर कर मण्डल का नाम रोशन किया है। उन्होंने बताया कि श्री जयदेव जयेन्दु शुक्ल ऑफिस सुपरिटेंडेंट मण्डल कार्यालय अहमदाबाद ने 50 मीटर फ्रीस्टाइल में 27.84 सेकंड समय के साथ स्वर्ण पदक और 100 मीटर फ्रीस्टाइल स्पर्धा में एक मिनट नौ सेकंड के समय के साथ दूसरा स्वर्ण पदक और 50 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक में 36.38 सेकंड समय के साथ तीसरा स्वर्ण पदक जीता। इनको स्विमिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा गत वर्ष दक्षिण अफ्रीका में हुए बीआरआईसीएस गेम्स में तकनीकी अधिकारी के तौर पर भेजा गया।

जोकोविच फ्रेंच ओपन और विंबलडन से बाहर हुए

पेरिस। दुनिया के नंबर वन टेनिस खिलाड़ी और 24 बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन नोवाक जोकोविच घुटने की सर्जरी के कारण फ्रेंच ओपन और एक जुलाई से शुरु होने वाले विंबलडन टूर्नामेंट से बाहर हो गए हैं। आज पेरिस में जोकोविच के घुटने की सर्जरी होनी है इस प्रक्रिया को लेकर उन्होंने फ्रेंच ओपन से अपना नाम वापस ले लिया था और अब एक जुलाई से शुरु होने वाले विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट से बाहर हो गये है। सर्जरी के बाद स्वस्थ्य होने में लगने वाले समय के कारण सात सप्ताह बाद शुरु होने वाले पेरिस ओर्लंपिक में भी उनके भाग लेने पर संशय बन गया है। रोलेंड गैरोस में कोर्ट की स्थितियों और जोकोविच की चोट के बीच संबंध एक विवादास्पद मुद्दा बन गया है। जिसने खिलाड़ियों की सुरक्षा और टूर्नामेंट प्रबंधन पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया हैं। फ्रेंच ओपन के आयोजकों की जांच की जा रही है, इस घटना का असर ओर्लंपिक खेलों तक पहुंच सकता हैं।

कुशाग्र की तिकड़ी से एम 2 एम ने वॉरियर्स हराया

नई दिल्ली। कुशाग्र चौधरी की शानदार तिकड़ी की मदद से एम 2 एम एफसी ने वॉरियर्स को 4-2 से हरा कर डीएसए ए डिवीजन लीग में शानदार जीत दर्ज की। एक अन्य मैच में एमिटी नेशनल यूनाइटेड ने रॉयल एफसी को 7-0 से रौंदा। विजेता के गोल ललित कुमार, विकास दलाल, मयंक देशवाल, पंकज, अमन और निशांत (2) ने जमाए। निशांत को प्लेयर ऑफ द मैच से नवाजा गया। एम 2एम के कुशाग्र के तीन गोलों के अलावा एक गोल बसंत ने किया। पराजित वॉरियर्स के गोल विकास रावत और लाल जरमाविया के नाम रहे। लीग की प्रमुख टीमों में शामिल एमिटी इंडियन नेशनल एफसी की जीत का आकर्षण बदलू खिलाड़ी निशांत सैनी रहा जिसने दो दर्शनीय गोल जमाए।

इमाद वसीम को भारत के खिलाफ मैच होने से पहले फिट होने की उम्मीद

डलास (अमेरिका), 5 जून (एजेंसियां)। पाकिस्तान के बाएं हाथ के स्पिन आलराउंडर इमाद वसीम बगल में खिंचाव के कारण गुरूवार को अमेरिका के खिलाफ होने वाले टी20 विश्व कप मुकाबले से हट गए हैं। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने कहा कि विश्व कप के लिए अंतरराष्ट्रीय संन्यास से बाहर आने वाले इमाद को मेडिकल टीम ने आराम की सलाह दी है और उनके नौ जून को भारत के खिलाफ होने वाले महत्वपूर्ण मैच से पहले तक फिट हो जाने की उम्मीद है। इमाद को पिछले महीने इंग्लैंड के खिलाफ चौथे टी 20 से पहले नेट्स में अभ्यास करते समय दायीं बगल में कुछ परेशानी महसूस हुई थी और वह उस मैच में नहीं खेले थे। कप्तान बाबर आजम ने पत्रकारों से कहा कि उनकी टीम अमेरिका को हल्के में नहीं लेगी, जिसने ह्यूस्टन में बांग्लादेश को 2-1 से हराया था

और टूर्नामेंट के शुरुआती मैच में 195 रनों का पीछा करते हुए कनाडा को हराया था। हम टीम चयन में हॉर्स-फॉर-कोर्स नीति का पालन करेंगे क्योंकि संयुक्त राज्य अमेरिका में परिस्थितियां नई होंगी और कुछ ऐसे प्रतिद्वंद्वी होंगे जिनके साथ हमने पहले नहीं खेला है। आधुनिक क्रिकेट में, फ्लोटिंग खिलाड़ियों की अवधारणा और महत्व पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है और हमारे खिलाड़ी इसके साथ-साथ अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के बारे में भी जानते हैं। यह संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए गर्व का क्षण और एक बड़ा अवसर होगा जब वे गुरुवार को एक पूर्व चैंपियन से खेलेंगे। टूर्नामेंट से पहले बांग्लादेश को 2-1 से और फिर शुरूआती मैच में कनाडा को

विश्व कप के लिए अंतरराष्ट्रीय संन्यास से बाहर आने वाले इमाद को मेडिकल टीम ने आराम की सलाह दी है : पाक क्रिकेट बोर्ड

बड़े अंतर से हराने के बाद, उन्होंने दिखा दिया है कि वे यहां रहने के लायक हैं, जो इस क्षेत्र में क्रिकेट के प्रचार और विकास के लिए बहुत अच्छी खबर है। हम आत्मसंतुष्ट हुए बिना उन्हें वह सम्मान देंगे जिसके वे हकदार हैं। पाकिस्तान ने इंग्लैंड में 2009 टी20 विश्व कप जीता और 2010, 2012 और 2021 टूर्नामेंट में सेमीफाइनल में प्रवेश करने के अलावा, 2007 और 2022 संस्करणों में उपविजेता रहा।

यशस्वी के लिए प्लेइंग इलेवन में कोई जगह नहीं, विराट ओपनिंग करें : आकाश चोपड़ा

नई दिल्ली, 5 जून (एजेंसियां)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर आकाश चोपड़ा का कहना है कि युवा ओपनर यशस्वी जायसवाल के लिए आयरलैंड के खिलाफ भारत के पहले टी 20 विश्व कप मैच में प्लेइंग इलेवन में कोई जगह नहीं है और विराट कोहली को रोहित शर्मा के साथ ओपनिंग में उतरना चाहिए। जियोसिनेमा के स्पोर्ट्स शो आकाशवाणी की मेजबानी करते हुए, जियोसिनेमा और स्पोर्ट्स18 के विशेषज्ञ, आकाश चोपड़ा ने आयरलैंड के खिलाफ टी20 विश्व कप के अपने पहले मैच से पहले भारत की अपेक्षित प्लेइंग इलेवन, उन्हें अपनाने की आवश्यकता वाले दृष्टिकोण और प्रमुख चिंताओं पर चर्चा की।

भारत को जिस दृष्टिकोण को अपनाने की जरूरत है

न्यूयॉर्क की पिच से पता चला है कि गेंद हरकत कर रही है। अगर गेंद हरकत कर रही है, तो मैं उम्मीद करता हूं कि वे शुरुआत में कुछ विकेट लेंगे, चाहे वह बुमराह हो या

अर्शदीप। पावरप्ले में दो या तीन लें और आपको लगेगा कि मुकाबला आपके पक्ष में है। जब भी आप आयरलैंड और स्कॉटलैंड जैसी टीमों को देखते हैं, तो अच्छी शुरुआत करना महत्वपूर्ण है। नई गेंद से अच्छी गेंदबाजी करें और नई गेंद पर अच्छी बल्लेबाजी करें। अगर इनमें से एक भी काम नहीं हुआ तो आपका मनोबल टूट सकता है. अगर आप आयरलैंड को हराना चाहते हैं तो आपको पहले छह ओवरों में एक से ज्यादा विकेट नहीं गंवाने होंगे। दूसरा, अपनी गेंदबाजी की शुरुआत में ही दो विकेट लें और फिर अपनी स्पिन से मैच को नियंत्रित करें।

भारत की संभावित प्लेइंग XI पर

विराट कोहली रोहित शर्मा के साथ शुरुआत करेंगे, जिसका मतलब है कि यशस्वी जायसवाल के लिए कोई जगह नहीं है। नंबर 3 पर ऋषभ पंत के खेलने का बड़ा मौका है क्योंकि भारत को एक बाएं हाथ के बल्लेबाज की जरूरत है। उम्मीद यह थी कि यशस्वी के खेलने पर एक बाएं हाथ का खिलाड़ी पारी की शुरुआत करेगा, लेकिन वे उसे अंतिम एकादश में नहीं रखेंगे क्योंकि उनमें और शिवम दुबे के बीच केवल एक ही खेल सकता है और वे दुबे के साथ जा रहे हैं। इसका मतलब है कि सूर्यकुमार यादव चौथे नंबर पर रहेंगे। अगले विकेट के आधार पर, यदि कोई बाएं हाथ का बल्लेबाज गिरता है, तो अगला विकेट शिवम दुबे का होगा। यदि कोई दाएं हाथ का बल्लेबाज गिरता है, तो अगला नंबर हार्दिक पांड्या का होगा।

गेल, पोलार्ड छक्के उड़ाने में बादशाह : टिम डेविड

गयाना, 5 जून (एजेंसियां)। ऑस्ट्रेलिया के टी 20 विश्व कप अभियान के ओमान के खिलाफ पहले मैच से पूर्व आलराउंडर टिम डेविड ने स्वीकार किया है कि वह अपनी खेल शैली को आगे बढ़ाने के लिए क्रिस गेल, कीरोन पोलार्ड और आंद्रे रसेल जैसे कैरेबियाई

■ टी20 में छक्के उड़ाने के मामले में निकोलस पूरन के बाद दूसरे नंबर पर

खिलाड़ियों से प्रेरणा लेते हैं। उन्होंने इन कैरेबियाई खिलाड़ियों को छक्के उड़ाने में बादशाह बताया। ऑस्ट्रेलियाई टीम भारतीय समयानुसार छह जून को ओमान के खिलाफ अपने मैच से पहले गयाना में ट्रेनिंग कर रही है। डेविड ने क्रिकेट.कॉम.एयू से कहा कि जब आप छक्के मारने के बारे में सोचते हैं तो आप क्रिस गेल, कीरोन पोलार्ड, आंद्रे रसेल के बारे में सोचते हैं जो छक्के उड़ाने के क्षेत्र में बादशाह हैं। आप उन्हें देखते हैं कि वे कैसे खेलते हैं, आप उनका अनुसरण करना चाहते हैं लेकिन इन्हें खेलते देखना मनोरंजक और प्रेरणादायक है। उनके टी20 करियर में बिग बैश लीग में होबार्ट हरिकेन्स के साथ सत्र में उछाल आया। उसके बाद से वह पॉवर हिटर बन गए हैं और टी20 में छक्के उड़ाने के मामले में निकोलस पूरन के बाद दूसरे नंबर पर हैं और उनका स्ट्राइक रेट 164.34.है। उनकी मध्य क्रम से निचले क्रम में खेलने की क्षमता ने ऑस्ट्रेलियाई टी20 में लम्बे समय से चली आ रही कमी को भर दिया है।

जब मैं बाउंड्री मारने, छक्के मारने के लिए प्रतिबद्ध होता हूं, तभी मैं सबसे प्रभावी और सबसे विध्वंसक होता हूं। जब आप इस तरह जा रहे होते हैं, तो आप एक (आवश्यक) स्कोर देखते हैं, आप कह सकते हैं, ठीक है, यह 24 रन है। 12, और कुछ लोग कह सकते हैं कि यह प्रति ओवर 12 है, लेकिन यह 12 गेंदों पर छक्कों की वास्तविक संख्या क्या है? उन्होंने कहा कि अगर आप वास्तव में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं तो आप चार गेंदों में चार छक्के लगा सकते हैं। लेकिन यथार्थवादी होने के लिए, आप एक दो से चूक सकते हैं। मैं कोशिश करूंगा और इसे छक्कों में समाप्त करूं। मुझे लगता है कि यही वह तरीका है जिसके बारे में मैं सबसे अधिक आश्वस्त हूं।

डेविड के बीबीएल प्रदर्शन ने उन्हें वैश्विक टी20 मंच पर पहुंचा दिया, जिससे उन्हें रिकॉर्ड तोड़ने वाला आईपीएल अनुबंध और 2022 टी20 विश्व कप के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम में जगह मिली। उन्होंने आठ शॉर्ट-फॉर्म घरेलू लीगों में खेला है, जिनमें से लगभग मुंबई इंडियंस के लिए हरिकेन्स के समान ही मैच हैं, और उन्होंने कैरेबियन प्रीमियर लीग में सेंट लूसिया किंग्स के साथ भी काम किया है। हालाँकि, विश्व कप जीतना उनका अंतिम लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि जब तक आप विश्व कप नहीं जीत लेते, तब तक आप अपने करियर से संतुष्ट नहीं होंगे। यही वह बात है जिस पर आप भरोसा कर सकते हैं। मैं भी फाइनल खेलना चाहता था, लेकिन मुझे वह मैच खेलने के लिए (ऑस्ट्रेलिया द्वारा) मंजूरी नहीं दी गई।